कथा कुसुम

कथा कुसुम

लघु कथा संग्रह

दुर्गानन्द मण्डल

पोथीकेँ तत्वनात् व्यक्तिगत रूपे सोझहा आनल जा रहल अछि... ।

-लेखक

समरपण भाव

समरपण भाव

माए श्रीमती भालसरी देवी, अस्सी बर्खक बुढ़, बाबूजी श्री रामदेव मण्डल पाँच भाँइक भैयारीमे सभसँ जेठ, जे सन 1915 दिसम्बर 4, शुक्र दिन, तिथि नौमी, समय रातिक 10:10मे हमरा सभकेँ लल्लो-बिल्लो कऽ चलि गेला। पढ़ल-लिखल तँ कम्मे धरि मुदा तइ जमानाक लोक। कागज-पत्रक बड़ जानकार। गामोक लोक सभ जमीन-जालक नक्शा आ नापी-जोखीक लेल सदिखन बाबूजीक पुछाइर करैन। हुनका ऐ बातक सेहन्ता छेलैन जे हमरा परिवारमे कियो सरकारी नोकरी करए। से चाहे पढ़ै-लिखैमे जे खर्च हौउ.. । हुनक ई सेहन्ता भगवान पुरा केलखिन। आर तँ नहि किछु मुदा हुनका सदिखन ऐ बातक गर्व रहलैन जे हमरो बेटा एकटा सरकारी स्कूलमे मास्टर अछि। ओना, कमाइ-खाइले तँ सौंसे संसारे छै मुदा शिक्षाक एक अलगे महत तँ छइहे, ऐ विषयमे अपने लोकैनकेँ की कहल जाए। ..बाबूजी मुइला लेकिन हमरा तीनू भाँइ आ अपन पाँचो भैयारीमे कहियो मुहाँ-ठुठी नइ भेलैन। चारू भाँइ तेतबए आदरो करथिन। जेकर परिणाम स्वरूप हुनकर श्राद्ध रूपी महायज्ञ 'पंच गामा' बिनु कोनो कुसऽ–कलेप कऽ जश-जश भेलैन।

..ई शब्द रूपी कथाक कुसुम हम हुनका सादर समर्पित करै छिऐन। अखनो एहेन बुझना जाइए जेना हुनकर हाथ असीरवादक रूपमे हमरा माथपर हुअए आ हम पिताक चरण छुबि असीरवाद लऽ रहल छी।

ई अविस्मरणीय रहत।

दुर्गानन्द मण्डल

राखी- 2016, निर्मली।

पहिल संस्करण : 2014
दोसर संस्करण : 2016

दाम : 151/-

अक्षर संयोजक : उमेश मण्डल
Co-Editor : *Videha 1st Maithili Fortnightly E-Magazine*
http://www.videha.co.in
(ISSN 2229-547X)
Mobile : +918539043668

प्रिन्टिग एण्ड बान्डिग : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल)

कटिंग : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस, निर्मली (सुपौल)

Distributor :
Pallavi Distributors Ward no 06 Nirmali (Supaul)
Pin code no- 847452
Mobile No- +919572450405

Katha Kushum : Collection of Short Maithili Stories
by Sh. Durganand Mandal.

कथाक सत्तैर-

किछु अपनो बात

जहिया होश भेल, जानतब भेल, लोक सभ हमरा कहै छैथ 'दुर्गानन्द', पिता श्री रामदेव मण्डल। गाम- गोधनपुर, पोस्ट- सुखेत, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, प्रान्त- बिहार।

प्रारम्भिक शिक्षा बाबाक बनौल गामेक प्राइमरी स्कूलमे। तइ समैमे हम सभ चटिया काठक बनौल 'पाटी' आ 'गावीस मोसि' नमहर शीशीमे लऽ, मुन्ना लगा, बीत भरिक डोरीसँ बान्हि, नमहर कैड़चीक कलम लऽ लऽ स्कूल जाइत रही आ ओइ मोसिमे कलम डुमा-डुमा पाटीपर अ-आ-सँ-लऽ-कऽ बीस कान धरि लिखी। कोनो गलती भेलापर बुढ़बा मासैबक 'धेले चाट' आ मोलबी साहैबक 'करमिलक मारि' बिसैर नहि सकलौं अछि। बेस जेना-तेना पँचमा पास केलौं आ रामकृष्ण मध्य विद्यालय- पुरना बजारमे, गंगा राम कक्का साइकिलपर चढ़ा नेने गेला, छठामे नाओं लिखा देलैन। संगी सभ नीक रहने पढ़ैमे मन लागए लगल। गंगाराम कक्का बेसी काल बजार जाइ छला तँ स्कूलमे भेँट करै छला आ भूजा-भरली खाइले एक-दूटा रूपैआ सेहो दऽ दइ छला। कएक दिन मास्सैबसँ कहि छुट्टियो दिया दइ छला।

ओइ स्कूलमे अठमा धरि पढ़ाइ छेलइ। अठमा पास केला पछाइत केजरीवाल उच्च विद्यालय झंझारपुरमे, नौमामे नाओं लिखा देल गेल। ओइ समैमे आर्ट, साँइन्स आ कौमर्स- तीन तरहक वर्ग बेवस्था रहै छेलइ। कियो बतौनिहारो नहि जे हम कोन संकायमे नाओं लिखाबी। मुदा जागेश्वर बाबू मास्सैब कहलैन-

"ताबे तूँ नाओं लिखा लेह आ तोरा जइ विषयमे नीक लगतौ तही संकायमे पाछू बदैल देबौ।"

नाओं लिखा सभ संकायमे क्लाश करए लगलौं। मुदा विज्ञान, गणित आ कौमर्सक पढ़ाइ बुझबे ने करिऐ। कलामे जे विषय सभ छेलै से पढ़ैमे नीक लागए लगल, तँए कला संकायक सभ किताब पढ़ए लगलौं।

मैट्रिक परीक्षाक सेन्टर मधुबनी-सुड़ी स्कूल भेल। सन 1980क गप छी। चोरी नामक छुति नहि, कनीए नम्बरसँ पछैर सेकेण्ड डिविजनसँ पास भेलौं। कौलेजक मुँह देखबाक सेहन्ता पुरा भेल। परिवारमे सभकेँ खुशी भेलैन। आइ.ए. पास केला बाद बी.ए.मे अर्थ शास्त्र औनर्स लऽ कऽ नाओं लिखेलौं। भगवती कृपासँ औनर्स भेटल। गाम भरिमे सभकेँ मन हर्खित भेलैन। जे राम देव मण्डलक बेटा बी.ए. पास केलक। किए तँ ओइ समैमे आँगुरेपर बी.ए. पास छेलइ।

अगस्त 1985क गप छी। लगातार रौदी हुअ लगल। बेरोजगारीक स्थिति तेहेन जे 'की करी', 'की नइ करी' से किछु फुरबे ने करए। ऊपरसँ तीनटा बाल-बच्चा सेहो नान्हियेँटा छल। पहिल सन्तानक रूपमे कन्याँ रत्न 'किरण' आ तइसँ छोट- 'अरविन्द' आ तहूसँ छोट- 'घोलू', जे माइक दूध पीविते छल।

..मुदा रौदी तेहेन जे माइयोक छातीक दूध सुखल। सतासीक बाढ़ि आ अठासीक भुमकम सभ कियो देखनहि हएब। ..घर छोड़ि दिल्ली गेलौं कनी दिन भटकला बाद एकटा प्राइवेट फार्ममे नोकरी भेटल। मुदा नोकरी लोक करै केना छै से बुझले नहि! तँए एक्के दिनक गारि-बात सुनि भागि-पड़ा कऽ घुमि घर एलौं। मुदा घर एला बाद वएह रामा आ वएह खटोला..! आब की करी...। तात हमर एकटा मित्र 'नुनु बाबू' खौजरी दलदैलक रहनिहार- दरभंगामे एम.ए.मे नाओं लिखा संगे बी.एड. सेहो करै छला, सेसन फराक रहने..। ओ कहलैन-

"मित की करबै, से नइ तँ अहूँ नाओं लिखा लिअ।"

सएह केलौं। दुनू मित्र एक्के डेरामे रहौ लगलौं। बड़बढ़ियाँ। एक्के साल दुनू सेसनक परीक्षो भेल। दुनू दोस एम.ए. आ बी.एड. पास भेलौं। मुदा बेरोजगारीक वएह स्थिति। अन्ततः घरसँ भागि बम्बई गेलौं। एकटा नन-बैंकिंग कम्पनीमे काज धेलौं। छह मासक पछाइत ट्रान्सफर करा मधुबनी जिलाक मधेपुर एलौं। तीन साल धरि कम्पनी नीक-नहाँति चलल। मुदा जखन मैच्युरिटीक समए एलै तखन के केतए नुका गेल से कियो केकरो ने देखलक। हमहूँ करितौं तँ की करितौं, छह मास धरि एमहर-ओमहर घुमिते-फिरते रहलौं मुदा पाच केतौ ने लगल। फेर घुरि घर एलौं। हँ! तखन जइ समैमे मधेपुरमे रही, हमर एकटा अपेछित 'बिन्दुजी' एक्स-रे किल्निक चलबैत रहैथ। ओ यएह काज करए हमरो सलाह देलैन। मुदा पूजीक अभाव। तथापि डेग बढ़ेलौं। निर्मलीमे एक्स-रे खोलैले माकन भाड़ापर लेलौं। मुदा छह मास धरि बैसा कऽ किराया दैत रहलिऐ। किछु पाइ सूदोपर उठौने रही। कहबी परि, 'मूसक माटि मूसेक बिलमे' सएह भऽ गेल। तखन जेतए-तेतए कपार धुनि कर्जा-वर्जा लऽ, गहना-जेबर बन्धक राखि भैया आ भातिजक सहयोग पाबि आ भगवानक कृपासँ निर्मलीमे 'हरि ओम एक्स-रे' नाओंसँ एक्स-रे किल्निक खोललौं। बिसवास तँ नहि हएत मुदा सत् अछि, ओइ महिनामे मात्र उनतिसटा एक्स-रे भेल छल। घरेसँ हींग-हरैद जोड़ि कहुना गुजर करैत रही, ऊपरसँ बैंकक कर्जा आ एक्स-रे मशीनक लौनक किस्त अलगे, मुदा जेना-तेना भगवान पार लगौलैन।

एमहर आबि नितीश सरकारमे शिक्षकक नियोजन भेल। जिला परिषद् शिक्षकक रूपमे 'उच्च विद्यालय- झिटकी बनगामा'मे नियोजित भेलौं। आ अध्यापन कार्य करए लगलौं। हमरा लोकैन जे प्रशिक्षित रही, सरकारपर मोकदमा केने रही तइ सन्दर्भमे 34540 शिक्षकक बहाली आ तइमे हम वरियता क्रमांक 910पर दरभंगा जिलाक मध्य विद्यालय मनहर ऊर्दू अलीनगरमे कार्यरत छी। वर्तमानमे अपने सबहक असीरवादक परतापे सभ तरहेँ भरल-पुरल परिवार अछि। भगवान कथुक कमी नइ

देने छैथ। सुखसँ जीबै छी आ सतत् ऐ बातक खियाल रखै छी जे हम किनको दुख नइ दिऐन आ कियो हमरासँ दुखी नइ होथि।

लेखन कार्यक मादे दू शब्द–

'सगर राति दीप जरय- मैथिली कथा गोष्ठी'क चर्चा आदरणीय उमेश मण्डलजी केलैन। आ हुनक पिता- श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी-क रचना लऽ दोहरा-तेहरा कऽ पढ़ि-लिखि मधुबनीक माध्यमिक शिक्षक संघ भवनमे पाठ केलौं। विद्वान लोकैनकेँ खूब पसीन पड़लैन। आ एक-दूटा आर कथा गोष्ठीमे जाइत-जाइत लेखनक प्रति जागरूकता भेल। आ समाजिक बेथा, प्रथा, रीति-रेबाज, संस्कृति, लोक कथा, बिहैन कथा, लघु कथा आदिक रूपमे विभिन्न प्रकारक कथाक एकटा हार 'कथा कुसुम'क रूपमे अपने विद्वान लोकनिक समक्ष अर्पित कए रहल छी।

..बिसवास अछि, नीक लागत। कथाक मादे सुझावक सदिखन स्वागत करब। तँए, सम्पूर्ण सिनेही पाठकसँ विनम्र आग्रह- कथा पढ़ि मोबाइल नम्बर 8434815050पर फोन कऽ उत्साहित करब, सुझाव देब आ तेकरा हम सिरोधार्य करब।

अहींक

दुर्गानन्द मण्डल

बिआहक पहिल साल गिरह

राधा आ मोहन दुनूक बिआहक पहिल साल गिरह। दुनू परानीक मनमे उठैत खुशीक कोनो सीमा नहि। दुनूक बीच प्रेम एतेक जे साल केना बितल से बुझिए ने पेलक। परिवार छोट भेने जीवन जेतबए सुखमए तेतबए सरस सेहो। मोहन बैंकक कर्मचारी। तँए पटनेमे जमीन लऽ मकान बना, जेबा-एबा लेल नैनो गाड़ी सेहो कीनि लेलक। भिनसरसँ लऽ कऽ जाधैर ऑफिस जाइ छला ताधैर राधाक मदमस्त जुआनी देख समए केना बित जाइ छेलैन से पते ने चलैन। मुदा दस बजे धरि तैयार भऽ ऑफिस जरूर चलि जाइ छला। दिन भरिमे ऑफिसोसँ एक-आध बेर राधाकेँ फोन कऽ हालि-चालि जरूर पुछि लइ छेलखिन। पाँच बजे ऑफिस बन्न भेला पछाइत किछु ने किछु सनेस लऽ मोहन घर चल अबै छला। राधा ताधैर बाट तकैत रहै छेली। जाधैर गाड़ीक हौरन नै बाजि उठै छेलैन। ऐ तरहेँ दुनू परानी लेल सभ दिन होली आ राति दीवाली रहै छल। देखैत-देखैत साल बित गेल आ आबि गेल बिआहक पहिल साल गिरह।

दुनू परानी आपसमे विचारलैन जे बिआहक पहिल साल गिरह छी, तँए ऐ शुभ अवसैरपर अपना दोस्त सभकेँ एकटा शानदार पाटी देल जाए। पाटीमे खेबाक-पीबाक पुरकस इंतजाम छल। रवि दिन रहलाक कारणे पाटियो समैसँ शुरू भेल ओइ दिन तँ राधा आ मोहनक सुन्दरते

अपूर्व छल। दुनू परानी फिल्मी हिरो-हिरोइन जकाँ लगै छला। साँझ पड़िते दोस्त-दोस्तिनी सभ आबए लगलैन। सभसँ उपहार लऽ राधा डैनिंग हॉलमे रखि-रखि आबैथ। पाटीमे कोनो वस्तुक कमी नै छल। सभ कियो खूब खेलक-पीलक आ नाच-गान करए लगल। मोहनकेँ दोस्तक बीच रहैत-रहैत पीबैक चस्का लगि गेल छेलैन। तँए आइ मोहनो खूब पीलैन।

पीला पछाइत राधाकेँ डाँरपर हाथ दऽ दोसर हाथ पकैड़ ओहो नाचए लगला। नाच-गान खतम भेला बाद सभ दोस-दोसतिनी अपन-अपन घर गेल। मुदा ओही दोसक बीच मोहनक एकटा अभिन्न दोस अरूण जेकरा पीबैक आदति नहि, ओ जलखै मात्र केला पछाइत अपन घर चलि गेल।

> "राधा हे राधा, देखू अहाँले मोहन केते बेकरार अछि। आउ अहाँ तँ हमर जान छी। हमर परान छी, आउ ने।"

कहैत मोहन उठै काल पलंगसँ टकरा गेला। राधा दौग एली देखली जे मोहन तँ किछु बेसीए पीब लेने छैथ। मोहन बजला-

> "ओह राधा, छोड़ू ने ई गप-सप्प। प्लीज एमहर आउ ने। हमरा आब अहाँ एना जुनि तड़पाउ। ओह राधा, अहाँ केते सुन्दर छी। मन होइए अहाँकेँ हम देखते रही। किछु बाजी अहाँ हम सुनिते रही।"

गीत गबैत मोहन राधाकेँ अपना बाँहिमे कसि पलंगपर ओंघरा देलखिन। प्रेमक सागरमे डुमए चाहलक। मुदा सागरमे डुमैसँ पहिने एना भेलै, मोहन औक करए चाहलक। राधा हाँइ-हाँइ मोहनकेँ उठाबए चाहलक। ताबए तँ मोहन पलंगेपर बोकैर-बोकैर भरलक। सौंसे घर गंधसँ भरि गेल। नाके ने देल जाइ। शराबक निशाँमे मोहन बेसुधि। कनीए कालक बाद मोहनकेँ फेर मन भेलै जे औक हएत। निशेमे मातल मोहन जाकि पलंगसँ उठल आकि पलंगेपर खसि पड़ल, कपार फुटि गेलै,

शोनितक टघार चलए लगलै। राधा जेना-तेना मोहनक माथसँ बहैत शोनितकेँ रूमालसँ पोछि-पाछि माथकेँ बान्हि देलक।

मुदा एतबोपर मोहनक मन थीर नै भेलइ। पेटमे दर्द उठलै। दरदे छड़पटाए लगल। ओही अवस्थामे मोहन एकबेर फेर औक केलक। मुदा ऐबेर खुने केलक। समुच्चा घर खुने-खुनामे भऽ गेल। मोहन खून बोकैर रहल छल। तथाइपो ओकर दर्द कम नै भऽ रहल छेलइ। एमहर असगरे राधा की करती। राधाकेँ मन पड़लैन अरूण। अरूण मोहनक दोस जे शराब नै पीब अपना घर चलि गेल छल। अरूण... अरूण... अरूण... हल्ला करैत राधा अरूण दुनू परानीकेँ बजौलक। अरूण दुनू परानी दौगल राधा ऐठाम आएल। मोहनक हाल देख दुनू परानीकेँ होश उड़ि गेल। अरूण बाजल-

> "भौजी, मोहन भैयाक हाल ठीक नै छैन। हम गाड़ी निकालै छी अहाँ दुनू गोरे भैयाकेँ पकैड़ बाहर लाउ।"

गाड़ीक पैछला दरबज्जा खोलि, सीटपर मोहनकेँ पाड़ि राधा आ अपन पत्नीक संग अरूण अस्पताल दिस बिदा भेल। अरूण तीव्र गतिसँ गाड़ी चला रहलए अपना धुनिमे। जे जल्दीसँ जल्दी अस्पताल पहुँच जाइ। बाटमे मोहनकेँ बड़ी जोड़सँ दर्द भेलै आ हिच्की उठलै दर्दसँ छटपटाइ-कछमछाइत एकबेर फेर खूब नमहर खूनक औक भेलइ। किछुए कालक पछाइत मोहन कालकलवित भऽ गेल।

राधाकेँ शंका भेलइ। ओकर करेज भालरि जकाँ काँपि उठलै। जोरसँ कानए लगल। अरूण बोल-भरोस दैत अस्पताल पहुँचल। अरूण आ पूजा दुनू परानी मोहनकेँ स्ट्रेचरपर लादि डाक्टर लग लऽ गेल। डाक्टर साहैब आला लगा नारी देख तजबीज करैत बजला-

> "माफ करू, ई आब नै छैथ।"

सुनिते राधा पछाड़ खा मोहनक मृत शरीरपर गाछ जकाँ खसली। पूजा कनैत राधाकेँ सम्हारैत बजली-

"दीदी, उठू होश करू। की करबै धैरज राखए पड़त। जिनगीकेँ जीबए पड़त।"

पूजा उठौलैन। राधा उठली। मुदा फेर पछाड़ खा मोहनक शरीरपर खसि पड़ली। जोर-जोरसँ कनैत राधा मोहनक देहकेँ डोलबैत बाजलि-

"स्वामी यौ स्वामी, अहाँ केतए चलि गेलौं यौ स्वामी? उठू ने अहाँ तँ कहैत रही जे मोन होइए अहाँकेँ हम देखते रही। देखू ने हम छी अहाँक राधा। उठू ने। उठू ने। देखू ने। अहाँक राधा...।"

अहुरिया कटैत राधाकेँ देख अरूण बाजल-

"भौजी, उठू होश करू। आब ओ घुरि नै औता।"

ई कहैत अरूण एकबेर राधाकेँ सम्हारि उठौलक। मुदा राधा पुन: पछाड़ खा स्वामी-स्वामी कहैत मोहनक मृत शरीरपर खसि बेहोश भऽ गेलि।

के... मोहनक राधा...।



शब्द संख्या : 787

असली हीरा

मनमोहन गाम। गदाल बश्ती। एकसँ एक पहुँचल चोर गाममे। इलाकामे मनमोहन गामक पहिचान चोरबे गामसँ होइए। गामक विशेषता चोरि अछि। पढ़ल-लिखल तँ कम्मे मुदा एकसँ-एक बीहर चोर सभ। जेना हमरा लोकनिक खेती अध्ययन आ अध्यापन छी तहिना ओकरा सबहक खेती चोरि अछि। ओना ई फराक बात, ओ सभ एतेक गरीबो नै अछि जे बिनु चोरि केने जीब नै सकैए। मुदा ओ सभ अपन धन्धा बुझैए। भरि दिन सूतब आ रातिमे चोरि करब, ई ओकर सबहक धन्धा अछि। ओही गामक करिया नामी चोर छल। करियाक नाओंए सुनि इलाका थरथरा जाइ छल। चोरिए टा नै अपितु राहजनी, छीना-झपटी, खून-खराबा इत्यादि करब ओकर दिनचर्या छल।

एक दिनक गप छी। ओइ गाम दऽ ओम शान्ति पंथसँ जूड़ल व्रह्मकुमार दुर्गा भाय जा रहल छला। हुनका संग यज्ञक सेवार्थ किछु कैंचा आ गरदैनमे हीराक हार छेलैन। चलैत-चलैत झलफल भऽ गेल तात् केतए-ने-केतएसँ ओइ करियाक नजैर दुर्गा भायपर पड़ल। करिया देखलक, सोचलक। ई श्वेत वस्त्रधारी कोनो महात्मा छी। एकरे घेरल जाए आ संगमे जे किछु हेतै से छीनि लेल जाए। दुर्गा भाय बढ़ल जा रहल छला। करिया आगू बढ़ि दुर्गा भाइक कनपट्टीमे औजार सटा रूकैले कहलकैन। दुर्गा भाय रूकि गेला। करिया दुर्गा भाइक सभ किछु छीनि लेलक। अन्तमे ओकर नजैर हीराक हारपर पड़लै। बाजल-

"महात्माजी, ई हीराक हार लाबह?"

दुर्गा भाय कहलखिन-

"सुनह, ई तँ नकली हीरा छी। असली हीरा तँ तोरा लगमे छह। ओकर खोज करह ने। ई नकली हीरा कथीले लेबह।"

करिया तँ अवाक्। सोचए लगल। हमरा लग असली हीरा भऽ नै सकैए। मनमे उपकलै। ई महात्मा ठकैए। बाजल-

"हे महात्मा, हम असली-नकली नै बुझै छी। तूँ ई हीरा लाबह।"

दुर्गा भाय अपन गरदैनसँ हार निकालि करियाकेँ दैत बजला-

"हे सुनह, अखनो कहै छिअ। ई नकली हीरा छी। असली हीरा तँ तोरा अपने छह। ओकरा खोजह।"

करियाकेँ ई बात ठहकलै। आब तँ करिया खसल दुर्गा भाइक पएरपर-

"से नै तँ बाबा तूँ हमरा बता दैह जे असली हीरा छै केतए?"

दुर्गा भाय बजला-

"ओइ हीराकेँ खोजैले तोरा ई धन्धा छोड़ए पड़तह। दोसर गप तूँ जे करिहह से करिहह मुदा झूठ नै बजिहह।"

करिया घुमि घर आएल। मुदा दुर्गा भाइक बात ओकरा माथमे रहि-रहि कऽ घूमए लगलै। आखिर असली हीरा हमर केतए हरा गेल! फलस्वरूप करिया चोरि केनाइ छोड़ि देलक। झूठ सेहो बाजब बन्न केलक। ई बात काने-कान पसरए लगलै। जे कियो सुनै जे करिया चोरि केना छोड़ि देलकै तँ लोककेँ आश्चर्य लगै। करिया आब ने तँ चोरि करए आ ने झूठ-फूस बाजए। आब तँ संगतिया सभकेँ किछु ने फुड़इ। ऊहो सभ सोचलक। से नै तँ सरदार चोरी छोड़िए देलकै तँ हमहूँ सभ चोरि छोड़िए देब आ झूठ नै बाजब। सभ सएह केलक। चोरि करब आ झूठ

बाजब छोड़ि देलक। कनीए दिन पछाइत सबहक सोझहा भूखमरी आबि गेल। सबहक धिया-पुता भूखे टौआए लगल। करियाक संगैतया सभ लगमे आबि पुछलक-

"से नै तँ हम सभ तँ चोरि छोड़िए देलौं। मुदा बाल-बच्चा तँ भुखे टौआइए। आखैर एकर उपए की हेतै?"

करिया बाजल-

"अच्छा ठीक छइ। एते दिन जे भेलै से भेलइ। जँए एते दिन निमलह तँए तूँ सभ हमरा चौबीस घन्टाक समए दैह।"

तोहर सबहक दूख दूर भऽ जेतए। करिया भरि दिन गुनधुनमे लगल रहए जे की करी की नै? अन्तमे विचारलक, से नै तँ अपने राजक राजाकेँ सातटा लाल छइ। आनठाम चोरि नै कऽ ओही लालकेँ चोरा लाबी। करिया भरि दिन गुनधुनमे पड़ल रहए। भगवानकेँ यादि करैत रहए। हे परमात्मा आइ हमरा लग कोनो उपए नै अछि तँए हम चोरि सन ई पाप करब। जनिहह तोँ।

भरि दिन गमौला पछाइत करिया भगवानकेँ सुमरि बिदा भेल राजाक ओइठाम। नीसोडण्ड राति। राजा निसभेर सूतल। पहरू सभ पहरा दैत। दोग देख करिया भगवानकेँ सुमरि सिंहद्वार फाँनि भीतर गेल। दुहारिएपर सिपाही टोकलकै-

"है, के छिअह?"

करिया बाजल-

"चोर।"

सिपाही सोचलक। चोर केतौ कहत जे हम चोर छी। से नै तँ ई रजेकेँ कोइ छी। एकरा भीतर जाए दइ छिऐ। करिया भीतर गेल। दोसर फाटकपर दोसर सिपाही। ऊहो पुछलकै-

"हे के छिअ?"

बाजल-

"चोर।"

किएक तँ दुर्गा भाय कहने रहथिन। जे करिहह से करिहह मुदा झूठ नै बजिहह। तँए ओकरा जे पुछै, ओ सही बात कहि दइ हम छी चोर। ऐ प्रकारे करिया सातो फाटक टपि गेल। पहुँच गेल राजमहल। राज निसभेर सूतल।

करियाक नजैर तिजोरीपर पड़लै। चोर तँ रहबे करए। जुति-फाँति लगा तिजोरी खोललक। देखलक जे तिजोरीमे सातटा लाल छइ। सोचलक। एते लालसँ हमरा कोन काज। करिया ओइ सातो लालमे सँ चारिटा लऽ तीनटा छोड़ि देलक आ बिदा भेल। ताबत राजाकेँ नीन टुटलै। नजैर करियापर पड़लै। पुछलक-

"हे, के छिअ?"

कहलकै-

"हम छी चोर।"

"केतए आएल छह?"

करिया बाजल-

"चोरी करैले।"

"चोरी केलह?"

कहलकै-

"हँ।"

"कथी?"

"अहीं खजानामे सात गो लाल छल। हम चारि गो चोरेलौं आ तीनटा छोड़ि देलौं।"

ई बात सुनि राजा सोचलक। ई चोर नै भऽ सकत। चोर केतौ ई कहत जे हम छी चोर। आ तीनटा छोड़िओ देत। बाजल-

"अच्छा, जाह।"

सिपाही सभ किछु देख रहल छल। करिया अरामसँ चोरि कऽ लाल लऽ घुमि घर आबि गेल।

परात भने सौंसे गाम घोल भऽ गेल जे राज दरबारमे चोरि भऽ गेल। समुच्चा राजमे ढोलहो पड़ि गेल। करियो ऐठाम खबैर गेल। करिया अपन संगतियाक संग राज-दरबारमे उपस्थित भऽ गेल। दरबार लगल। दरबारमे पुछल गेलै-

"गत राति जे राजमहलमे चोरि भेल से चोर के?"

तही बीच राजा मंत्रीकेँ कहलक-

"मंत्रीजी, राति जे चोरि भेल से देखू गऽ सातो लालमे कएटा चोरि भेल आ कएटा अछि।"

मंत्री सोचलक चोरी तँ भेबे केलइ। जेहने एकटा तेहने सातटा। बँचल तीनू लालकेँ मंत्रीजी अपना घर रखि आएल। दरबारमे सभसँ पुछल गेलइ। अन्तमे करियाकेँ सेहो पुछल गेलइ। करियाकेँ दुर्गा भायबला बात तँ मने रहै जे जे करिहह से करिहह मुदा झूठ नै बजिहह। करिया बाजल-

"जी सरकार, चोरि हम केलौं।"

राजा आगू पुछलकै-

"की चोरि केलह?"

करिया कहलकै-

"ई गप तँ हम रातिए कहलौं। हम छी चोर। चारि गो लाल चोरेलौं।"

"तों जे चारिटा लाल चोरेलह तखन तीनटा की भेल?"

करिया बाजल-

"से हम नै कहब जे आरो लाल की भेल। हम जे चारिटा लाल चोरेलौं से हमरा संगेमे अछि। जँ लेब तँ लऽ लिअ। मुदा ई चोरी हम अपना पेट खातिर नहि, अपन जाति-समाजक पेट खातिर केलौं।"

राजा अकचका उठला। चोरी ई केलक मुदा अपना खातिर नै अपन जाति-समाजक खातिर। से की? करिया फरिछा कऽ सभ खिस्सा राजा साहैबकेँ कहलक। राजाकेँ बिसवास भऽ गेल।

आब राजा लगला ओइ तीनू लालक खोजमे। मन पड़लैन जे मंत्रीजीकेँ देखैले कहने रहथिन। मंत्रीजी ओइ तीनू लालक संग पकड़ा गेला। सभा लगले रहए। तुरंते मंत्रीजीकेँ जहलक सजा भऽ गेल। एमहर, करियाक सत्यवादी विचारसँ प्रेरित भऽ राजा मंत्रीक पद लऽ देलखिन। वेतनादिक रूपमे करियाकेँ जाति-समाजक लेल सालो भरिक खर्चा उठौलक। ऐ प्रकारे राजाक संग राजाक प्रजागण आनन्दमय जीवन जीबए लगल। चारूकात खुशहाली पसैर गेलइ। सभ चोर चोरि छोड़ि अपन उचित काज-उदम लागि गेल। केकरो कोनो तरहक दुख-तकलीफ नहि। कथुक कमी नै रहलै। समए बितैत गेल। राजा अपन समए नजदीक अबैत देख आ करियाक इमानदारीक प्रभावसँ प्रभावित भऽ अपन एकमात्र कन्याँक हाथ करियाक हाथमे दऽ चारूधामक यात्रापर निकलि गेल।

समए बितैत गेल। मनमोहन गामक आ करिया समाचार पत्र-पत्रिका आ समाचारमे सेहो आएल। वर्त्तमान सरकारक धियान सेहो मनमोहन गामपर गेल। सरकार सभकेँ इण्दिरा अवास दऽ

लाल कार्ड बना जेकरा परिवारमे जेहेन लोक छेलै तेकरा तेहने नोकरी दऽ ओइ गामकेँ आदर्श गाम बना देलक। आइ ओ मनमोहन गाम एकटा आदर्श गामक रूपमे जानल जाइत अछि। आ करियाकेँ ई बात सेहो बुझबा जोगर भऽ गेल, ओ जे भरि जीवन चोरि केलक ओ हीरा आ सत् जानि परमात्माकेँ पहचानि सत्मार्गपर चलब ओइ हीरामे कोन छल नकली हीरा आ कोन छल असली हीरा।



शब्द संख्या : 1207

पोस्टमार्टम

रामेश्वरबाबू गामक लब्धप्रतिष्ठि बेकती, सभ तरहेँ सुखी-समपन्न, कथुक कमी नहि। कनियाँ गामक प्राइमरी स्कूलमे शिक्षिका। छठम वेतन भेने दरमोहो बढ़ियाँ। अपने एकटा उच्च विद्यालयमे प्रधानाध्यापक पदपर वर्तमानमे कार्यरत। कुल मिला कऽ मासिक आमदनी लाखोसँ ऊपर! लहना-पातीसँ आमदनी अलगे। स्वयं जेतए-केतौ रहला। प्रधानाध्यापक रहबाक कारणेँ औटी आमदनीक जोगार हरिदम लगौने रहै छला। आन-आन काज करबाक लेल आरो शिक्षकगण। मुदा आरम-फारम भर्ती काल शुल्कादिसँ ऊपरी आदमनी अपने जेबीमे। सहयोगी शिक्षक आ छात्रो सभसँ बनैन नहि। हप्ता दस दिनपर किछु-ने-किछु रमन-चमन होइते रहै छेलैन। तखने हुनकर मन ठीक-ठाक रहै छेलैन। कएक बेर कौमनरूम, शौचालय, बोड आदिक लेल तोड़फोर भेल, मुदा हुनका लेल धैनसन! एक दिनक समए छल। समैसँ घण्टी लगल, प्रार्थना भेल, शिक्षक लोकैन अपन-अपन वर्गमे गेला।

रामेश्वरबाबूक सेहो कक्षा दसमे वर्ग छेलैन। बच्चा सबहक आग्रहोपर वर्ग दसमे जेबाक लेल तैयार नै भेला तँ सभ बच्चा वर्गसँ निकलि हिनका ऑफिससँ खीचि बाहर आनि कहा-सुनीक बाद, लाते-मुक्के गत्र-गत्र फोड़ि देलकैन। आब कहबी परि... ‘अपने करनी, गइ मुसहरनी’ भऽ गेलैन।

प्रात भने गारजियन सभ बजौल गेला। स्कूलपर बैसार भेल। मनधनबाबा मास्सैबसँ पुछलखिन-

"मास्सैब, किएक हमरा लोकैनकेँ बैसौलौं अछि?"

रामेश्वरबाबू सभ बात कहलकैन। मनधनबाबा आँखि मुनने निचेनसँ सुनि उत्तर देलकैन-

> "अहाँ अपने गुरु छी बच्चासँ समाज धरि शिक्षा देबक अधिकारी, ओहो मात्र समाजे नै सरकारोक नजैरमे। तखन..?"

◌

शब्द संख्या : 201

बुधि

गामक बुढ़, पीपरावाली काकी, माथक केस सोन सन उज्जर धप-धप। आँखि भुमकमक दराड़ि जकाँ धँसल। बत्तीसीसँ हाँसील गोल। गिनती लेल दूगो दाँत देखार छल। मुदा चेतना पूर्णरूपेण। पेशाब-पैखानक ज्ञान पुरा-पुरी छैन। लाठी हाथे तिकोण भऽ चलै छैथ। मुदा गप एक्कोटा ने लटपटाइ छैन। गाम-घरक आ टोला-पड़ोसाक लोक सभ पीपरावाली काकीकेँ नीक खिस्सकरि, गीतगायन आ विधकरीक रूपमे जनै छैन। मिथिलाक माटि-पानिसँ जूड़ल सभ विध-बेवहारसँ लऽ कऽ टोना-टापर आ अरिपन-पीढ़ी आदि देबमे सिद्धस्त मानल जाइ छैथ। पैरुख घटने पीपरावाली काकी माय-सँ-दाइ भऽ गेली।

आनो-आनो समैमे धिया-पुता सभ पीपरावाली काकी लग खिस्सा सुनैले घूर लगौने रहैए। गरमी-गुमारमे तँ अरबधि कऽ। एक दिनक गप छी। काकीक अपन जौत-भुटबा जे वर्ग आठमे गामेक स्कूलमे पढ़ैए काकीकेँ खिस्सा सुनबैले जिद्द पकैड़ लेलक-

> “काकी गइ, एकटा नीक खिस्सा सुना। काल्हि जे स्कूल जेबै तँ मास्सैब सुनतै। काल्हि शनि छिऐ। मास्सैब कहने छथिन जे भुटबा काल्हि एकटा खिस्सा सुनबए पड़तौ। से काकी एकटा खिस्सा कही ने।”

काकी कहलखिन-

"केहेन खिस्सा सुनमेँ से तँ कह।"

भुटबा बाजल-

"काकी, नीक खिस्सा कही बुधि-ज्ञानबला जे स्कूलमे सुनाबए पड़तै। कोनो राजा-महराजाबला नै तँ सोनपड़ीबला कही।"

काकी शुरू केलैन खिस्सा-

"एक नगरमे एकटा राजा रहै छला। राजाक राजमे कथुक कमी नहि। सगतरि सुख-शान्ति बनल रहै छेलए। राज भरिमे ने केकरोसँ कोनो दुश्मनी आ ने बाड़ि। सभ एक-दोसराक सहयोगी। केकरो कोनो चीजक दुख-तकलीफ नहि। सौंसे राजमे अमन-चैन छल...।"

काकी कनी रूकैत आगू कहए लगलखिन-

"एक दिनक गप छी। राजाक छोटकी बेटी असलान करैले राज-महलसँ बाहर ढ्योढ़ीमे खुनाएल पोखैर जेकर चारूकात फुलवाड़ी छल तइमे अपन नौरी-खबासीनीक संग गेल। असलान करै काल अपन सभ कपड़ा उताइर निच्चाँ जमीनपर रखलक आ गरदैनक हिराक हार एकटा फूलक डारिपर लटका देलक। राजाक बेटी असलान-धियान कऽ कपड़ा पहिर नौरी-खबासीनीक संग राज दरबारमे चलि गेल। मुदा गरदैनक हीराक हार बिसैर गेल। ओ हार ओही फूलक डारिपर लटकल रहि गेल। दिन बीति गेलइ। लूकझूक साँझक बेरमे घोड़सारक नोकरक नजैर ओइ हारपर पड़ल। किएक तँ दिन भरिक काज-उदमक बाद ओ नौकर हाथ-पएर घोइले ओही पोखैरमे गेल। नोकरबा ओ हार लऽ नुका कऽ रखि लेलक। परात भने ओकर खोज-खबैर शुरू भेल। मुदा कियो गछबे ने करै जे हम लेलौं। राज भरिमे ढोलहो पड़ल। मुदा कोनो लाभ नहि। राजक बेटी

ओइ हार लेल सोगा गेल। दिन एक बितल, दोसर बितल। मुदा कोनो थाह-पता नहि। एमहर राजाक बेटी सोगाएल बिछौन पकड़ने। राजा मंत्रीकेँ बजौलैन। सभा लगल। दबारक सभ सभासद् एकठाम बैसला। राजाकेँ किछु ने फुरैन। अन्तमे मंत्रीजी बुधि बतबैत कहलखिन जे राजा साहैब चिन्ता जुनि करू। राजकुमारीक हार चौबीस घन्टाक पेसतर भेट जाएत। काल्हि पुन: दरबारक सभ कर्मचारीक संग प्रजाकेँ सेहो बजौल जाए। सएह भेल। राजाक आदेशानुसार राज दरबारक सभ कर्मचारी आ प्रजागण उपस्थित भेल। राजा फेर एकबेर सभकेँ पुछलखिन। मुदा हारक चोरिक विषएमे कियो ने बाजल...।"

भुटबा बिच्चेमे पुछलक-

"तब की भेलै?"

काकी आगू कहए लगलखिन-

"पश्चात मंत्रीजी बजला जे ठीक छै कोनो बात नै राजा साहैब। से नै तँ उपस्थित कर्मचारी-दरबारीक संग प्रजागण अपने सभ ऐ ढेरीमे सँ एक-हकटा लाठी लिअ। आ धियान राखब जे जे कियो राजकुमारीक हार लेलिऐ वा चोरौलिऐ तेकर लाठी रातिमे एकहाथ नमहर भऽ जाएत। सभ कियो एक-हकटा लाठी लेलक। घोड़सारक नोकर सेहो एकटा लेलक। हार तँ ओ घोड़सारक नोकरबे लेने रहए। से नै तँ ओकरा भेलै जे हम तँ काल्हि चोरीमे पकड़ाइए जाएब। तइ खातीर ओ अपन लाठीकेँ ऊपरसँ एक हाथ नापि कऽ काटि देलक। परात भेने पुन: दरबार लगल। सभ अपन-अपन लाठी लऽ दरबारमे पहुँचल। सबहक लाठी भजारल गेल। घोड़सारक नोकरक लाठी आन सभ लाठीसँ एक हाथ छोट छल। ऐ तरहेँ ओकर चोरि पकड़ा गेलइ। राजा ओकरा आर्थिक जुरबानाक संग छह मासक जहलक सजा दऽ देलखिन। ऐ तरहेँ राजकुमारीक हार भेट गेलइ। राजा आ प्रजा सभ खुश। राजा खुश भऽ कऽ मंत्रीकेँ इनाम देलखिन।

राजाक संग रानी आ राजकुमारी खुश। संगे सभ सभासद् सेहो। से बुझलीही रौ भुटबा जे कोन तरहेँ मंत्री चोरकेँ पकड़लक? एकरे कहै छै बुधि!"

भुटबा छल चूप। किएक तँ ओ खिस्सा सुनैत-सुनैत ओङहा गेल छल।



शब्द संख्या : 627

बुड़बक के?

मंगला आ बुधना दुनू सहोदर भाए। एक माएक ओद्रसँ जनमल। जनमसँ लऽ कऽ अखन धरि दुनू भाँइक बीच बड़ ताल-मेल। केतौ कोनो काज दुनू भाँइ आपसमे विचारि लिअए तखने करए।

एक दिनक गप छी। संध्या कालक समए दुनू भाँइ बाध-बोनसँ आबि दुआरिपर बैसबै कएल आकि आँगनसँ खबैर एलै जे अगुआ साहैब ऐठीन सरकार एलखिन अछि। तात अगुआ साहैब सरकारक वन्दगी-भावमे लगल रहए। तत्खनात दुनू भाँइ अगुआ साहैब ऐठीन पहूँचल आकि वन्दगी-भाव कऽ घुमि आपस घर आएल। आ दुनू भाँइमे विचार हुअ लगल। छोटका बजैए-

> "हौ भैया, सरकार एलखिन अछि। काल्हि मकइ खेत सेहो तमैक ताक छइ। जदी सरकारमे ओझरा जाएब तँ खेत तामलो नै हेतह। से केना की करबहक?"

अचताइत-पचताइत दुनू भाँइ विचारलक जे सरकार तँ भिनसर आठ-दस बजेक पछाइत ने केतौ जेथिन, से नै तँ दुनू भाँइ तरगरे उठि बाध जा खेत सबेरे-सकाल तामि-कोरि आठ बजे धरि चलि आएब। बेस बड़ बढ़ियाँ दुनू भाँइ सहए केलक। तरगरे जा खेत तामए लगल। तमैत-तमैत अबेर भऽ गेलइ।

एमहर सरकार जे सबेरे उठला तँ देखलैन जे आहि रे वा सेवक

सभ तँ घर छोड़ि पड़ा गेल अछि। से नै तँ रहि कऽ की करब। अगुआ साहैबकैँ कहलखिन जे से नै तँ सबेर-सकाल जलखै-तलखै छोड़ि भोजनेक इजाम धराउ जे भोजन कऽ हमरो दीप जीबछ दास ऐठीम जेबाक अछि। से नै तँ गोधनपुरे होइत जाए पड़त तँ लक्ष्मी दासकैँ सेहो दरस-परत दइतै जाएब। अगुआ साहैब सएह केलक। सबेरे भोजन-भात कऽ सरकारकैँ लऽ दीप दिस बिदा भेला। जे कम-सँ-कम सीमा अबस्से टपा दिऐन। आगू-आगू सरकार आ पाछू-पाछू अगुआ साहैब। अगुआ साहैब सीमा टपा घुमि गेला। सरकार असगरे बिदा भेला। दसे डेग जहाँ ने कि आगू बढ़ै छैथ आकि मंगला आ बुधना दुनू सेवककैँ देखै छैथ जे दुनू भाँइ तँ मकइक खेत तामि रहल अछि। मंगला आ बुधना सेहो देखलक जे आब तँ सरकार देख लेलैन से नै तँ आब की उपाए हेतइ। घरो तँ लगमे अछि नै जे पाइ-कौड़ी आनि वन्दगी बजा लेतौं। हारि-थाकि दुनू भाँइ सोचलक जे की करब भैया। से नै तँ भावेमे भाव छै से सरकारकैँ वन्दगी बजा ली। दुनू भाँइ सएह केलक। दुनू भाँइ बेरा-बेरी वन्दगी बजौलक। साहैब असीरवाद दऽ आगू बढ़ला। फेर दुनू भाँइ खेत तामए लगल।

मुदा कनीए कालक पछाइत बुधना कहलक-

“भैया, से नै तँ एकटा बात बुझलहक। सरकार तँ हमरे पहिने मनसँ असीरवाद देलखिन।”

“भक्, बूड़िबक। सरकार तँ हमरा बादमे बढ़ियाँसँ असीरवाद देलक।”

आब दुनू भाँइमे कियो मानैले तैयारे नै जे सरकार केकरा भरि मन असीरवाद देलक। एमहर दुनू भाँइक पेटक भूख आ पियास सोहो जोर केने। तैपर सँ असीरवादबला झंझट अलगे। आब दुनू भाँइ आपसमे लड़ए-झगड़ए लगल। जे सरकार तँ हमरा भरि मन असीरवाद देलक तँ हमरा भरि मन असीरवाद देलक।

ताबत सरकारो ससैर दू बीघा आगू चलि गेला। आब तँ बड़ा फसाद। एकर फैसला के करत। से नै तँ दुनू भाँइ विचारलक, एकर फैसला चलि कऽ सरकारे साहैब लग कएल जाए।

आब देखू जे सरकार अलगे दौगल जा रहल छैथ, आ पाछू-पाछू दुनू भाँइ। दुनू भाँइक कान्हपर कोदारि। सरकार आगू-आगू आ दुनू पाँइ पाछू-पाछू। सरकार उनैट देखलैन जे दुनू भाँइक पित बिगैड़ गेलइ। से नै तँ कोदारिसँ काटि ने दिअए। सरकारकेँ तँ जैयो ने होनि तैयो भागल जाइथ। पाछूसँ मंगला आ बुधना दरबर दैत आबि रहल अछि। सरकार अगोँ बढ़ैथ आ पाछुओ घुरि-घुरि देखैत। पाछाँ जे घुरि देखैथ तँ पराण आरो उड़ल चलि जाइत रहैन। किएक तँ सरकारो पड़ाएल जाइ छैथ आ तहूसँ किछ बेसीए तेजीसँ मंगला आ बुधना सेहो। मुदा अन्ततः दुनू भाँइ दौगैत-दौगैत सरकारकेँ पकैड़िए लेलक। आ जैयो ने होइ तैयो छनलक दुनू पएर।

> “से नइ तँ सरकार, पहिने एकटा बातक फैसला करि दिअ जे अहाँ भरि मन असीरवाद केकरा देलिऐ- हमरा आकि मंगला भैयाकेँ?”

सरकार सोचिए रहल छला कि मंगला बाजल-

“सरकार, हमरा बादमे देलिऐ ने भरि मन असीरवाद?”

मंगला बाजए हमरा आ बुधना बाजए हमरा। आब तँ भेल पहपैट। सरकारो असमंजसमे पड़ि गेला। किछु फुरबे ने करैन। अचताइत-पचाइत सरकार जवाब देलखिन-

> “हौ, दुनू भाँइ सुनह। दुनू भाँइमे जे बुड़िबक छह। तेकरे मनसँ असीरवाद देलियह।”

आब बुधना बाजल-

“सरकार हम छी बेसी बुड़िबक।”

अहिना मंगला बाजए-

"सरकार, हम छी बेसी बुड़िबक।"

दुनू भाँइमे तहूले झंझट पसैर गेल। आब 'बुड़िबक के' तहीले झंझट शुरू भऽ गेल।

दुनू भाँइ बाजल-

"हम छी बेसी बुड़िबक। हम छी बेसी बुड़िबक।"

मंगला फेर बाजल-

"नहि सरकार, बुधना झूठ बजैए, हम छी बेसी बुड़िबक।"

कियो ई मानैले तैयारे नहि, जे बुड़िबक के।

सरकार बजला-

"हौ बुधन, आब ई कहह जे तोरा दुनू भाँइमे बुड़िबक के, से हम केना मानब। दुनू सहोदर भाए छह। एक माइक ओद्रसँ जनमल। भैयारीबला मामला अछि। तोहीं कहह जे बुड़िबक के, ई फैसला केना हएत?"

बुधना पसारलक अपन एकटा खिस्सा-

"सरकार, ओना अहाँ नहि बुझबै, सुनू सभटा खेरहा। हमर बिआह भेले छल। किछुए दिनक पछाइत दुरागमन सेहो भेल। दुरागमनक पहिल विदागरी करा कऽ हम आ हमर पत्नी- दुनू पराणी लड़िते-लड़िते माने पएरे-पएरे अबैत रही। गामसँ पहिने कनीटा धार अछि। भादो मास रहइ। पानि-बरिसातक अभावो भेने धार भरल छल। धार लग अबैत-अबैत झल-फल अन्हार भऽ गेल। नव-धव कनियाँ, ठोर-मुँहकेँ के कहए जे पएरो आड़तसँ लाल रंगमे रँगल छेलैन। अहर देखलौं-पहर देखलौं, नाहक केतौ पता नहि, विचारलौं जे धार टपब तँ टपब केना। से नइ तँ और अन्हार हुअ दिऐ आ कनियाँकेँ कान्हेपर लऽ टपि जाएब। दुनू पराणी विचारलौं। अन्हार भेलोपरान्त सएह केलौं। धारमे कनीए दूर तँ गेलौं

आकि भरि जाँघ पानि भऽ गेल। आगू बढ़लौं कि भरि छाती! फेर आगू बढ़लौं कि डुमए लगलौं! तखन पत्नीकेँ कहलयैन- 'से नइ तँ अन्हार भऽ गेल गेल। के देखत, अहाँ मुड़ी निच्चाँ आ पएर ऊपर कऽ लिअ जइसँ पएरक ललका आड़त नइ घुआएत। सएह केलौं। कनियाँ जखन पानिमे डुमए लगली तँ चिचिया लगली। मुदा हम कनियाक मुड़ी पानिमे गौंतने धार टपए लगलौं। कनियाँक साड़ी टाँगपर सँ ससैर दुनू जाँघपर चलि एलैन। मुदा कोनो परवाह नहि...। धार टपलौं। पार भेला पछाइत कनियाकेँ जमीनपर ठाढ़ केलौं। साँस उखैर गेल छेलैन, नाक-कानमे पानि चलि गेल छेलैन। मुदा कनियाँक पएरक आड़त नइ घुएलै। ..आब अहीं कहू सरकार, हमरासँ बुड़िबक के?"

मंगल जोरसँ बाजल-

"नइ सरकार, धुर ई की कहत! ई की बुड़िबक हएत। सुनू हमर खिस्सा। सरकार, हमरा दूटा बौह छइ। रामपुरवाली आ श्यामपुरवाली। दुनू जुआने। देहो-दशा दुनूक खूब भरल-पुड़ल छइ। कियो केकरोसँ कथुमे कमी नहि। एकटा तँ बापे-माए कऽ देने रहए दोसर अपने पसिनसँ भट्ठेपर लटापटीमे करए पड़ल। तँए दुनू तँ मानए खूब मुदा दुनूकेँ पटाइन खेबे ने करइ। भरि दिन तँ केतौ-केतौसँ कमा-खटा कऽ आबी मुदा रातिमे सुतै काल फज्झैत भऽ जाए। खएर तहूले ने कोनो बात। एक दिनक गप छी। किसकारक समए छल। कितगर खेत भेने भजैतसँ हर कऽ कादो केलाक बाद रोपैन भिरहगर भऽ गेल से बड़ थाकि गेल रही। तँए रामपुरवालीकेँ कहलिऐ जे गइ रामपुरवाली, आइ बड़ थाकि गेल छियौ। से कनी रसुन-तेल पका कऽ सौंसे देह तेल-मालिश कर। रामपुरवाली सहए करए लगल। ओ ससुन तेल पका मालिश करए लगल। श्यमापुरवाली, जे ओसारपर बैस भानस करै छल, तीमन तँ भऽ गेल छेलै मुदा रोटी तबेपर छेलइ। रोटीकेँ उनटबैत चुल्हिमे सँ पजरले चेरा निकालि आगि-बबुला भेल श्यामपुरवाली ओतैसँ गारि दैत बाजल- 'हे गेइ सौतीन, मालिश तँ करै छिहीन मुदा तूँ अदहे देह मालिश करिहें, अपने हिस्साटा।

हमर हिस्सा छोड़ि दिहें नइ तँ खिचारि कऽ पिचारि देबौ। ..रामपुरवालीकेँ केतौ बरदास होइत, ओहो उतारा दैत कहलक- 'हे गइ सौतीन, तूँ बड़ जे साँएवाली भेलेँ हेन से आबि तूँ अपन हिस्सा बाँटि ले।' ..से सरकार आब अहाँकेँ की कहब, श्यामपुरवालीकेँ बरदाससँ फाजिल भऽ गेलइ। ओहो धधकैते चेरा चुल्हिसँ निकालि टीकसँ लऽ कऽ पोन तक बीचो-बीच दागि देलक। से सरकार ई जे पीठपर दगलाहा चेन्ह देखै छिऐ, से श्यामेपुरवालीक देल चिन्हासी छिऐ। से की कही सरकार, अपन हारल आ बौहक मारल। केकरो कि कियो कहै छइ। से श्यामपुरवाली ऊपरसँ निच्चाँ धरि दागि देलक मुदा हम 'आहो' तक ने केलौं। आ मासो भरि हरदी लगबैत रहलौं। आब अहीं कहू सरकार, जे बुड़िबक के?"

सरकार तँ माथपर हाथ लेने सोचमे पड़ि गेला।

ताबए फेर टोकि देलकैन-

"आब अहीं सभ कहू जे बुड़िबक के?"



शब्द संख्या : 1267

सहोदर

महेशपुर गामक सिंघेसर बाबूक दरबज्जा, लोकसँ गदमिशान उठैत छल। एका-एकी हित अपेछित की, दुश्मनो धरि पहुँच गेल छल। की अपन की परार, बुझने ने जाइ छल। दरबज्जापर तँ तिलो धरि रखैक जगह नहि। तखनो लोकक ढबाहि भाइए रहल छल। उत्सुकतावश हमहूँ घरसँ बहार भऽ पता करए चाहलौं। जनतब भेल जे सिंघेसर बाबूक ओतए तँ डाका पड़ि गेलैन। मन केनादुन करए लगल। जिगेसा करैले हमहूँ हुनका घरपर पहुँचलौं। सिंघेसर बाबू महेशपुर गामक एकटा प्रतिष्ठित जमीनदार, सज्जन, सुशील एवं नीक पढ़ल-लिखल विद्वान। पढ़ि-लिखि सरकारी सेवामे ऑडिटरक पदपर अपन कर्मक निर्वहन पूर्ण जिम्मेदारीसँ करैत सेवा निवृत्त भेला। सेवारत् रहैत कखनो कहियो कुसऽकलेप नै लगल छेलैन। ऐ प्रकारे हुनकर सेवा काल इज्जतसँ निमहलैन।

अपने विद्वान रहने अपन दुनू बालक महेश आ दिनेशकेँ सेहो नीक शिक्षा दिऔलैन। बड़का सुपुत्र महेशकेँ पठा-लिखा, डाक्टर बना समाज सेवा आ स्वसेवाक अर्थ सेहो बरकरार रखलैन। 'स्व'क संग समाज सेहो डाक्टर साहैबक इलाज पाबि स्वस्थ्य आ खुशी छैथ। कखनो आ केकरो केनो तरहक गड़ू पड़लापर बिनु पाइक सेहो इलाज-बात कऽ महेश बाबू अपन आ अपन पिताक मान बढ़ौलैन। नीक क्लिनिक खोलि जन-कल्याणक लेल आ समाज सेवा सेहो अनवरत जारी रखलैन। डाक्टर

महेशक जश समाजमे खूब पसरए लगल आ नामक सोरहा सेहो। नामक सोरहा भेने दर-देहातसँ मरीज सभ खाटपर टाँगि-टाँगि आबए लगल। मरीज कनैत आबए आ हँसैत जाए। क्लिनिक नीक चलने नीक पाइक आमदनी सेहो हुअ लगलैन।

सिंघेसर बाबू अपन बराबरीक जमीन-जत्थाबला प्रतिष्ठित बेकती, एकटा उच्च विद्यालयक शिक्षकक प्रथम सुपुत्री, लक्ष्मीसँ डाक्टर महेशक कथा लगल। जहिना नाओं तहिना रूप लक्ष्मीक। नाओंक अनुरूप सर्वगुण सम्पन्न लक्ष्मी, महेशक अर्द्धांगिनी बनि महेशपुर एली। सिंघेसर बाबूक घरक लक्ष्मी दिन दुना आ राति चौगुना, पूजीत आ चर्चित भेली। लोको सभ बजैत-

> "लोके ने लक्ष्मी होइ छइ। जे लक्ष्मी सन पुतोहु जहियासँ सिंघेसर बाबूक घर एलैन, तहियासँ घर तँ साक्षात् लक्ष्मीक निवास स्थान भऽ गेलैन।"

सिंघेसर बाबूक दोसर लड़का दिनेश नाओंक अनुरूप सुरूज सन देदिव्यमान। जहिना देखए-सुनएमे सुन्दर तहिना गुणमे सेहो निपूण। नन्हियेँटासँ पढ़ए-लिखएमे बड़ तेजगर। अक्षरो तहिना सुन्दर होइ छेलइ। तेजगर रहने नेतरहाटमे नामांकन भऽ गेलइ। ओइठामसँ प्रवेशिका पास कऽ गाम आएल जे आगूक पढ़ाइ आनठाम जा करब। तीन-चारिठाम आदेवन केला बाद, नाओं लिखा गेलै आ पढ़ल-लिखए लगल। पढ़ैक क्रममे चौरानबेमे शिक्षक वहालीक प्रतियोगिता परीक्षाक आयोजन भेल जइमे दिनेश अपनो आ संगे अपन भौजी (डाक्टर महेशक पत्नी) केर फार्म सेहो भरलक। तेजगर तँ रहबे करए। आरो मन लगा तैयारी करए लगल। समए निकालि अपन भौजीकेँ सेहो परीक्षाक तैयारी करा देलकैन। दिअर-भौजाइ दुनू मिलि मनसँ तैयारी करए लगल। परीक्षाक तिथि प्रकाशित भेल। ससमए दुनू गोरे परीक्षा केन्द्रपर पहुँच परीक्षा देलक। परीक्षा नीक नहाँति भेल। कनीए दिनक बाद परीक्षाफल प्रकाशित भेल। दुनू गोरे पास केलक। संयोग एहेन अपने पंचायतक मध्य

विद्यालयमे निअमित शिक्षकक पदपर दुनू गोरे वहाल भेल। दुनू दिअर-भौजाइ पढ़ल-लिखल रहने बच्चा सभकेँ खूब मनसँ पढ़बए। बच्चो सभ खूब नीक नहाँति पढ़ए। नव-नव ज्ञान भेटने उत्साह बढ़ए लगल। कमीशनसँ एलाक कारणे आ कनीए दिनक बाद पुरना हेड मास्टरक रिटायर भेलापर दिनेशजी ओइ पदपर सुशोभित भेला। कुशल संचालनसँ विद्यालयकेँ चमका देलैन। नीक नाओं आ प्रतिष्ठा भेटए लगलैन। दिअर-भौजाइ एक्के मोटर साइकिलसँ विद्यालय अबरजात करए लगला।

लक्ष्मीक एकटा छोट बहिन रूपा नामक अनुरूप तेतबे गुणवती आ शीलवती। शिक्षकक पुत्री रहने रूपा सेहो नीक नहाँति पढ़लैन-लिखलैन। भौजीक गाम जात-अबरजात रहने दिनेश आ रूपाक भेँट-घाँट होइते रहइ। जे हँसी-मजाकसँ आगू बढ़ि प्रेमक रूप लऽ विकसित हुअ लगल। दुनूकेँ एक-दोसराक लेल बेचैनी। दिनेमे सपना देखब, भूख नै लागब, प्यास हरा जाएब, आँखिसँ नीन पड़ा जाएब इत्यादि शुरू भऽ गेल। ऐ प्रेमक महक सभसँ पहिने लक्ष्मीकेँ लगलै। लक्ष्मी ओकर सुगन्ध डाक्टर महेशकेँ कानमे दऽ सिंघेसर बाबूकेँ जनौलैन। सिंघेसर बाबू उचित समए पाबि सभ बात अपना समैध मास्टर साहैब लग रखि, घरक इज्जतकेँ इज्जत बुझि नीक दान-दहेज दऽ नीक बरियाती साजि रूपा आ दिनेशकेँ परिणय सूत्रमे बान्हि, जिनगीक बाट देखा चलबाक प्रेरणाक संग आशीरवचन दऽ संग जीबाक-मरबाक असीरवाद देलैन।

बड़-बढ़ियाँ बड़-सुन्दर एक-दोसराक जिनगी चलए लगल। सबहक जिनगी सरसपूर्ण छल। एमहर दुनू भाँइ आ ओमहर दुनू बहिन। दुनू बहिन सभ दिन बहिने रहली, कहियो दियादिनी नहि। शुरूओमे जहिना रूपा लक्ष्मीकेँ दीदी कहैत आबि रहल छलि, तहिना दीदी कहैत रहलि। आ लक्ष्मी सेहो कनियाँ आकि फल्लाँ गामवाली नै कहि रूपाकेँ रूपे कहैत रहलि।

परिवारक उन्नति दिन-दूना आ राति-चौगुणा होइत रहल। एमहर दुनू सहोदर भाए आ ओमहर सहोदर बहिन, परिवार परिवार नै बुझू जे

सत्युगी सृष्टिक उदाहरण बनि चूकल छल। परोपट्टामे एकटा आदर्श परिवारक रूपमे सिंघेसर बाबूक परिवारक चर्च होइत रहै छल। बाल-बच्चाक हँसी-खुशी देख सिंघेसर बाबू सेहो हरिदम अह्लादित रहै छला। हुनको अपन सन्तानपर गर्व होइत रहैन। समए बितैत गेल कालक्रमे सेवा निवृत्त भऽ, तीन दशक खेपि सिंघेसर बाबू सेहो ओइ धड़ा-धामकेँ छोड़ि परमधाम चलि गेला। आ ओ छोड़ि गेला अपना पाछू दुनू सुपुत्र दूटा पुतोहु आ पोता-पोतीसँ भरल-पुड़ल परिवार।

पिताक मुइला पछाइत डाक्टर महेश एकटा पूर्ण गारजनक निर्वहन करए लगला। कुशल माली सद्दश परिवार रूपी बगियाकेँ सिंचए लगला। हुनक सिनेहक छत्र-छायामे ओ परिवार दिन-दुना आ राति-चौगुण फड़ए-फुलए लगल। किनको कथुक अभाव नहि। प्राय: परिवारक तीन-तीनटा सदस्य सरकारी सेवामे बाल-बच्चा सभ सेहो नीक पब्लिक स्कूलमे पढ़ै-लिखै छल। कालक्रमे सभ अपन-अपन कर्मपर कर्मयोगी भऽ निष्ठापूर्वक ओकर निर्वहन करै छला। मुदा काल्हि की हेतै से कियो ने जानि रहल छल। एक भाँइ डाक्टर तँ दोसर मास्टर। दिनेश जे सभ दिन पूर्णरूपेण स्वस्थ्य छल, कहियो कोनो खराप बिमारीक छाँहोँ ने देखने आ ने सुनने। मुदा एकाएक कौल्हकी राति छातीमे कनी दर्द उखड़लै आ औक सेहो करए लगलै जइसँ उनटा साँस चलए लगलै। घरमे अफरा-तफरी मचि गेल। डाक्टर महेश दौगल आबि आला लगा जाँच-परताल केलैन। शंका भेलैन, उचित सलाह लइले आवश्यक दवाइ दऽ गाड़ीसँ राता-राती दरभंगा बिदा भेला। मुदा विधाताकेँ तँ किछु औउरे मंजूर छेलइ। अदहो रस्ता ने तँ गेल हेतै आकि दिनेशक पराण छुटि गेलइ। भौजी जे दिनेशक माथ अपना जाँघपर रखने छेली सेहो एकाएक ओंघरा गेल। बुझू जे डाका पड़ि गेलइ। जुआनी मौगैत भऽ गेलइ। डाक्टर महेश लहास लऽ रस्तेसँ गाम घुमि गेला। लहास दरबज्जापर अबिते समुच्चा परिवार हाक्रोश करए लगल। बाल-बच्चा अहुरिया काटए लगलै। टोला-पड़ोसाक लोक सभ जनिजातियो सभ कानए-खिजए

लगल। मुदा ओ की आब घुमि कऽ आबएबला छेलइ। दिनेश तँ सभसँ अपन रिस्ता-नाता तोड़ि जेतएसँ आएल छल तेतए चलि गेल। मृत शरीरक लेल मृत शरीरपर सभ अहुरिया काटि रहल अछि। राता-राती समाज सभ मिलि ओइ मृत शरीरकेँ डाहि-जारि घुमि घर अबै गेला।

परात भेलापर लोकक करमान सिंघेसर बाबू दरबज्जापर लगल छल। सबहक आत्मा दिनेशक लेल कुही भऽ रहल छल। सबहक आँखि अश्रुपुरीत। के केकरा सन्तोख देत। डाक्टर महेश बौक भेल मुरूत जकाँ दरबज्जापर बैसल। आँखिसँ दहो-बहो नोर बहि रहल छल। विचित्र दारूण दुखक दृश्य छल। कियो किछु ने बजैत। किछु फुरबे ने करै। घुमती काल एक्केटा वाक्य लोकक मुहसँ निकलै-

> "भगवान डाका दऽ देलकै। दिनेश केकर की बिगाड़ने रहइ। उमेरे की भेल रहइ।"

डाक्टर महेशक बेथाक तँ कथे ने पुछू रहि-रहि मुहसँ एक्केटा बात निकलै-

> "सहोदर... दिनेश...। ऐसँ नीक होइतै ओ जीबतए..., हमहीं मरि जइतौं...। मुदा ओ हमरा सहोदर नै बेमातर बना कऽ चलि गेल...। हम तँ सहोदरे छेलिऐ। सहोदर बनि रहितए...। आब के हएत हमर सहोदर..?"



शब्द संख्या : 1119

कुकर्मा

मिथिलांचलक राजधानी जिला मधुबनीक धरमपुर गाममे एकटा प्रकाण्ड विद्वान ज्योतिषी रहै छला। ज्योतिषी विद्यामे एकदम निपुण जइसँ भूत, वर्त्तमान आ भविसक नीक ज्ञाताक रूपमे जानल जाइ छला।

एक दिन मधेपुर प्रखण्डक लौफा गामसँ सत्य नारायण भगवानक चौपहरा पूजा करा सबेरे-सकाल गाम अबै छला। बाटमे, जोरला गाम जखन एला तँ देखलैन। हाइ स्कूल जोरलाक पाछू बहैत मरता धारमे एकटा नरमुण्ड धारक कातमे राखल छइ। जैपर लिखल छेलै-

> "किछु कर्म भऽ गेलै आ किछु बाँकी अछि। एकटाक जनम आ तीनक मृत्यु।"

ज्योतिषीजीकेँ हरलैन ने फुरलैन, नरमुण्डकेँ उठा झोरामे रखि लेलैन। घर आबि चुपचाप, एकटा उज्जर कप्पासँ बान्हि, चिनवारमे खोंसि देलैन। मुदा पण्डिताइनकेँ ऐ सम्बन्धमे किछु ने कहलकैन। एक-आध दिनक बाद पण्डिताइनक नजैर ओइ उज्जर कप्पापर पड़लैन। सोचैथ आखिर की बात छिऐ जे आन दिन जे किछु ज्योतिषीजी लाबैथ तँ हलसि कऽ कहैथ जे पण्डिताइन ई लिअ उ लिअ, हे एकरा राखू ओकरा उसारू। मुदा...।

पण्डिताइनकेँ हरलैन ने फुरलैन ओ जिज्ञासावस कप्पामे बान्हल-नरमुण्डकेँ उताइर कऽ देलखिन, नरमुण्ड देखते बताहि भऽ गेली आ

तामसे ओइ नरमुण्डकेँ उक्खरिमे दऽ समाठ लऽ बढ़ियाँसँ कुटि बुकनी-बुकनी कऽ देलैन।

..एकटा शीशीमे ओइ बुकनीकेँ भरि भनसा घरक चारमे खोंसि देलैन। आ सगर पोखैरमे एकटा मात्र पोठी जे कहबी छै, अति सुन्नैर नाओं सुनयना वएस सोलह बरख अपन बेटीकेँ कहलैन-

> "ऐ शीशीमे माहुर अछि। एकरा कियो ने छुऐ आ ने खाए, जौं खएत तँ मरि जाएत।"

सुनयना नामक अनुरूप ओतबे सुन्नैर। बेस गोरि-नारि नमगर-छड़गर-पोरगर केराक वीर जकाँ कोमल आ सुन्दर। सोल्हम साउन पार केने, अनेरे आँखियोक भाषासँ गप करैवाली। सुनयनाक आँखिमे धार तेहेन जे बिनु कटने आँखिसँ घाएल करैवाली। दिन-राति प्रेमक बोखारमे बौआइतो मुदा ज्योतिषीक मर्यादाकेँ अखन धरि बँचौने। उमेरक संग जे लांछन होइ छै से एक-कान-दू-कान होइत पण्डिताइन आ ज्योतिषीजीक कानमे पहुँचए लगल। कहबियो ठीके छै जे बेटी जखन जुआन होइ छै तँ घरबैयाकेँ बादमे मुदा बहरबैयाकेँ पहिने पता लागि जाइ छइ।

टोल-पड़ोसक लोक काना-फुसी करए लगल जे पण्डिताइनक बेटी तँ फल्लमाक बेटासँ बुढ़िया गाछीमे गप-सप्प करै छेलइ। एक-आध दिनक बाद फेर कियो गप उखारि दइ जे ज्योतिषीजीक बेटी तँ अरूण डाक्टरसँ हँसि-हँसि कऽ काली स्थानमे गप करै छेलइ।

एक दिन सुखेतोवाली कनियाँ बाजल छेली जे पण्डिताइनक बेटी रामदेब बाबूक खेतमे बदामक साग तोड़ै छेलइ। हुनक मझिला बेटा आड़िपर ठाढ़ भऽ रेडी बजबै छेलै आ बड़ी काल धरि दुनू गोरे हँसि-हँसि कऽ गप-सप्प करै छेलइ। अर्थात् एक-आध दिनक पछाइत सुनयनासँ जुड़ल कोनो-ने-कोनो गप-सप्प चलिते रहै छेलइ।

ज्योतिषीजी बेटीक ई किरदानी सुनि सत्य नारायण भगवानकेँ कहथिन-

> "हे भगवान एक तँ एकटा कुलकन्या देलह, तहूपर एतेक मानि हानिक गप! ऐ सँ तँ खनदानक बड़ हानि भऽ रहल अछि। ऐसँ तँ नीक होइत जे सुनयना जहरो-माहुर खा लइतए आ ऐ दुनियाँसँ उठि जइतए।"

ई गप बुझू जे हरिदम ज्योतिषीजीक मुहसँ निकलैत रहै छेलैन। सुनयना एक दिन सुनलक, दोसर दिन सुनलक आ तेसर दिन जखन सुनैत-सुनैत बरदाससँ फाजिल भऽ गेलै तँ सोचलक जे भनसा घरक चारमे माए तँ माहुरक एकटा शीशी खोंसि रखने अछि। से आइ उ माहुर खा अपन प्राण तियागब। सुनयना ओइ राति सएह केलक।

मुदा ओ तँ जहरक शीशी छल नहि। छल तँ ओइ नरमुण्डक चूर्ण जैपर लिखल छेलै, किछु भऽ गेल आ किछु बाँकी..।

जे खएलासँ सुनयना मरल तँ नै मुदा गर्भवती जरूर भऽ गेली। आब तँ दिन बितल, मास बितल। एक-कानसँ-दू-कान गुल-गुल हुअ लगल जे ज्योतिषीक बेटी तँ आब पेटसँ छइ। एत्ते दिन कहै छलिऐन तँ ज्योतिषीजी आ पण्डिताइन मुँहपर माछियो ने बैसए दइ छल। बिसबासे ने होइ छेलैन। आब देखथुन अपन बेटीक किरदानी। जे 'बापक दुलारू धिया दूरि गेली दूरि गेली, आ माथापर तम्मा लऽ कऽ उड़ि गेली उड़ि गेली..।'

..आब देखथुन जे बेटी केहेन कुलबोरैन छैन। देखते-देखते नअ मास बितल आ सुनयना देलैन एकटा अति सुन्दर बालकक जनम। जेकर भाग्यक रेखा किछु औरे कहि रहल अछि। मुदा पण्डिताइन आ ज्योतिषीजी ओकर नाओं रखलैन 'कुकर्मा'।

एक दिनक गप छी। जे ओइ राज्यक रानीकेँ माछ खएबाक मन भेलैन। राजाक आदेश भेल, मलाह बजौल गेल। नीकसँ-नीक माछ मारबाक आदेश दऽ देल गेल। संयोग एहेन जे कनीए कालमे निक्के माछ ऊपर भेल। मलाह राजाक आदेश पाबि सोझे रनिवास धरि गेल आ

रानीकेँ हाक देलकैन। हाक सुनि रानी महलसँ बाहर एली। तँ देखै छैथ जे आँगनमे बड़ सुन्दर माछ राखल अछि। मुदा माछ देख जेतबए मन प्रसन्न भेलैन मलहाकेँ देख मन तेतबे दुखी। किएक तँ मलहा रानीकेँ देख लेलकैन। रानीकेँ तँ तामसे मन माहुर-माहुर भऽ गेलैन। मनमे उठलैन जे केहेन मुरूख राजा छैथ जे हमर इज्जतकेँ इज्जत नै बुझि जेकरे-तेकरे महलमे पठा दैत छैथ। ई तँ नीक बात नै भेल। आ तामसे मलहाकेँ, अनाप-सनाप बजैत धक्का दऽ बाहर करबा देलकैन। आँगनमे जे माछ राखल छल। ई सभ खेला देख जखन बर्दास्त नै भेलै तँ ओ माछ हँसि पड़ल। आब तँ रानीकेँ कोनो अर्थे ने लगैन जे माछ हँसल तँ किए? आब रानी राजाकेँ कहलैन-

> "ई माछ हँसल किए, से कहू नहि तँ हम अन्न-पानि तियागि देब।"

रानीक गप सुनि राजाकेँ किछु फुरबे नहि करैन। असमंजसक स्थितिमे आबि राजा भरि राज्यमे ढोलहो दिआ देलखिन जे रानीकेँ देख माछ किए हँसल?

..जे ई बात बता देत ओकरा भरपुर इनाम भेटत अन्यथा छअ मासक जहल दऽ देल जाएत।

राज्यक पैघसँ पैघ विद्वान, पण्डित, ज्योतिषी लोकैन एला। दरबार लगल। मुदा माछ किए हँसल रहए से कारण कियो ने बता सकला। जइ कारणे हुनका सभकेँ छअ मासक जहल दऽ देल गेलैन। अन्तमे धरमपुरक ज्योतिषीजी बजौल गेला। अबेर भेने ज्योतिषीजी राजाकेँ समाद पठा देलैन जे आइ तँ आब अबेर भऽ गेल तँए आइ नहि, काल्हि तरगरे आएब।

प्रात भने ज्योतिषी स्नान-धियान कऽ चानन-ठोप दऽ बिदा भेला राज-दरबार दिस। कुकर्मा जे बथानपर मालक थैरमे खेलाइ छल, देखलक जे ज्योतिषीजी चलला राज-दरबार दिस। कुकर्मा बाजल-

"नाना, यौ नाना केतए जाइ छिऐ? हमहूँ जाएब यौ नाना।"

ज्योतिषीजी अनेक प्रकारे कुकर्माकें फुसलौलैन। मुदा तखनो कुकर्मा बात मानक हेतु तैयार नहि। एक्केटा जिद्द धेने जे आइ हमहूँ जाएब अहाँ केतए जाइ छिऐ।

हारि-थाकि ज्योतिषीजी बजला-

"राज-दरबार।"

"किए?" -कुकर्मा बाजल।

ज्योतिषीजी कहलखिन-

"रानीकें देख माछ किए हँसल, राजा ऐ रहस्यकें जानए चाहै छैथ। जे सही उत्तर देथिन तेकरा उचित इनाम भेटतैक अन्यथा छअ मासक जहल। से तूँ अखन धिया-पुता छह, नै जाह।"

मुदा तैयो कुकर्मा मानैले तैयार नहि। फेर बाजल-

"नाना अहाँ बुतै ऐ बातक जवाब नइ देल हएत। अहाँकें तँ ई बुझले नइ अछि जे हमर माए कोन कुकर्म केलक आ तइ दुआरे हमर नाओं कुकर्मा राखल गेल। की अहाँ वा कियो देखने छेलिऐ? से नै तँ अहाँ राजाकें जबाक की देबइ। अहाँ हमरा नेने चलू राजाकें हम जवाब देबइ। नै तँ अहाँकें छअ मासक जेल हेबे करत।"

ज्योतिषीजी कुकर्माकें संग कऽ लेलैन। पहुँचला राज-दरबार। दरबार लगल। प्रश्नक संग शर्त राखल। सुनि ज्योतिषी बजला-

"ई छोट-छीन प्रश्न हमरासँ नै पुछल जाए। एकर जवाब हमर नाति कुकर्मा देत।"

राजा एक दिस कुकर्माकेँ देखैथ तँ दोसर दिस प्रश्नक जटिलताकेँ। मनमे भेलैन जे आइ दुनू गोटाकेँ जलह लिखले छैन। प्रश्न सुनि कुकर्मा बाजल-

"राजा साहैब, ऐ प्रश्नक रहस्यकेँ नहियेँ बुझू तहीमे कल्याण अछि।"

मुदा राजाक जिज्ञासा बढ़िते गेल। अन्तमे राजा आदेश पाबि कुकर्मा बाजल-

"राजा साहैब, अखनो सोचि लिअ। भलाइ अहीमे अछि जे नै बुझियौ। अन्यथा अकल्याण निश्चित।"

मुदा राजा बातकेँ मानैले तैयारे नै होथि।

तखन कुकर्मा बाजल-

"जौं अपने ऐ रहस्यकेँ बुझबे करब तँ रानीकेँ राज-दरबारमे बजौल जाए।"

राजाकेँ आदेश पाबि रानी आ हुनक दुनू दाइ सेहो बजौल गेल। कुकर्मा बाजल-

"राजा साहैब, दस हाथक दुरीपर दूटा खम्हा गारल जाउ। आ भरि जाँघ ऊपरमे एक खम्हासँ दोसर खम्हामे एकटा मजगूत रस्सी बन्हबा देल जाउ।"

तहिना कएल गेल। ओकर बाद कुकर्मा रानीकेँ कहलक-

"रानी, आब अहाँ ऐ रस्सीकेँ फानू।"

रानी रस्सीकेँ फानि गेली। तेकर बाद रानीक संग आएल एकटा दाइकेँ कहलक जे आब अहूँ ऐ रस्सीकेँ फानू। दाइ फानए लगल। तखने कुकर्मा हुनक साड़ीक एकटा खुट पकैड़ लेलक। दाइ फानल सारी खुजि गेल। भरल दरबारमे दाइ चिन्हार भऽ गेली जे ओ दाइक रूपमे मौगी नै

मरद छल। तहिना दोसरो दाइक सएह रूप। ऊहो दाइ मरदे। सबहक पोल खुजि गेल। तखन कुकर्मा बाजल-

> “राजा साहैब, अखनो बुझलिऐ जे माछ किए हँसल छेलै? जइ रानीकेँ अपन प्रजाकेँ पुत्र वत्सल मानक चाही तेकरा देख ओ अनेरे क्रोधसँ आन्हर भऽ गेली। आ अनेको तरहक बात कहलैन। मुदा जे स्वयं स्त्रीक भेषमे दूटा मरदकेँ अपन भजार बना मौगीक रूपमे रखने छथिन। तेकर कोनो लाजे-गराइन नहि। यएह सभ किरदानी देख, तखन उ माछ हँसल छल।”

राजा सभ वृतान्त देख सुनि म्यानसँ तलबार निकालि रानी सहित दुनू मरदकेँ दू-दू खण्ड काटि देलक। जहलमे भरल सभ विद्वान आ ज्योतिषी लोकैनकेँ मुक्त कऽ देल गेल। धरमपुरक ज्योतिषीजीकेँ उचित आदर-सम्मानक संग प्रयाप्त अशर्फी पुरस्कार स्वरूप देल गेल। ज्योतिषीजीकेँ कुकर्मा प्रतापे जय-जयकार भेल। ऐ तरहेँ ओइ मुण्डपर लिखल ई बात सत् भऽ गेल-

जे किछु होतब से भऽ गेल, किछु बाँकी छै
एकक जनम आ तीनक मृत्यु।

ऐ तरहेँ कुकर्मा अपनो खूब नाओं कमेलक आ अपन माए सुनयनाक लाज बँचेलक।



शब्द संख्या : 1415

आत्म विश्वास

कंटीर बाबाकेँ दूटा बेटा, चुन्नु आ चन्दु। दुनू जौआँ जनमल छल। जौआँ भेने एक-दोसरामे बहुत अधिक समानता छल। बाबाक परिवार बेसीए सिनेहसँ दुनू बच्चाकेँ पालि-पोसि नमहर केलक। देखए-सुनएमे दुनू बेजोर। सोभाव-संस्कार सेहो एक-दोसरासँ खूब मीलैत। छेटगर भेला बाद दुनू बच्चाक नाओं गामक स्कूलमे लिखा देल गेल। दुनू मनसँ पढ़ए लगल। मुदा दुनूक अध्ययनमे अन्तर छेलै जे आगू जा कऽ देखबामे आएल। चुन्नु जे सभ कथुमे चन्सगर। चन्दु थोड़ेक पानिक मन्द छल। यद्यपि देखए-सुनएमे मुँहक पानि बेजए नै छेलइ। वर्ग दसमे जखन फारम भरैक बेर भेलै तँ चन्दु हनछिन-हनछिन करए लगल। ओ फारम भरै ने चाहै छल। जखन कि चुन्नु फारम भरि निचेन छल। चन्दु फारम भरै बेर उदास भऽ गेल। फारम नइक नहियेँ भरलक।

मार्च आठ तेरहकेँ परीक्षाक आयोजन भेल। करीब तेरह हजार छात्र-छात्रा लोकैन परीक्षार्थी रहैथ जइमे चुन्नु सेहो छल। परीक्षा बड़-बढ़ियाँ जकाँ सम्पन्न भेल। चुन्नु परीक्षा दऽ घर घुमि आएल। जुलाइक दोसर सप्ताहमे परीक्षाफलक प्रकाशन भेल। चुन्नु सनतानबे प्रतिशत अंकसँ उतीर्ण भेल छल। नीक अंकसँ उत्साहित भऽ इंजीनियरिंगक फारम भरलक आ ओहो परीक्षामे बाजी सुताइर लेलक। नतीजा स्वरूप ओकर नामांकण आइ.आइ.टी.क इंजीनियरिंगमे भऽ गेल।

एमहर चन्दु वर्ग दसेमे रहि पढ़ए लगल। पढ़ाइमे मन की लगतै कपार। अवारागर्दी केने घुड़ए। नाओं जरूर सरकारी स्कूलमे छेलइ। मुदा पढ़ाइमे कमजोर रहबाक कारणे वर्गमे आगाँक सीटपर बैसब काटए दौगै। किएत तँ मास्टर साहैब ऐगला बेन्चपर बैसल विद्यार्थीसँ सवाल-जवाब बेसी करै छथिन। अही दुआरे ओ या तँ बिचला नै तँ पैछला बेन्चपर बैसै छल। यद्यपि मास्सैब ओकर ऐ कमजोरीपर धियान दऽ आगू आबि बैसबाक लेल प्रोत्साहित करै छेलखिन मुदा चन्दु ऐ बातपर धियाने दैत छल। ओकरा ले धैनसन। नतीजतन पढ़ाइमे दिनानुदिन कमजोर होइत गेल।

बोड परीक्षा फेर लगिचाएल अबै छेलइ। आब तँ चन्दु फेर परेशान रहए लगल। किएक तँ तैयारी केनै ने छेलए। तैयारी केहेन छेलै से तँ भगवाने जनै छेलखिन। वर्गमे सेहो मास्टर साहैब आँगुरेपर गनल बच्चाक प्रशंसा करै छला। किएक तँ सैंकड़ामे दसे-बीसटा बच्चा पढ़ैबला रहै छै जे मन लगा पढ़ैए। अधिकांश तँ बातेकेँ बतंगर करैमे लगल रहैए। कहबी छै ने ‘हरमे जँ तँ आ चौकीमे बिहाड़ि’ कुसंगैतसँ आइ तक कियो सुधरल अछि की। सएह हेतै ऐसँ अधिक आर की। मास्टर साहैब सभ सेहो परीक्षाक पूर्वक तैयारीक समीक्षा जे करैथ तँ तइमे चन्दुक कोनो नाओं-ठेकान नहि। चन्दुकेँ ऐ बातक सोग पसि गेल। यद्यपि चन्दु पढ़ाइमे भुसकोल छल मुदा पढ़ैक लालसा ओकरामे सभ दिन रहलै आ ओ पढ़ए चाहै छल।

बिहार बोड परीक्षासँ पूर्व विद्यालय स्तरीय एकटा जाँच परीक्षा लेल जाइ छइ। ओइ परीक्षामे जे छात्र आ छात्रा लोकैन जे पास भेल ओ फारम भरलक। अन्यथा ओकरा साल भरि आर पढ़ए पड़ै छइ। जाँच परीक्षासँ पाँच दिन पहिने चन्दुक वर्ग शिक्षक सेहो अही बातक चर्चा केलैन जे केकरा-केकरा पास करबाक उमेद छै आ केकरा अधिक मेहनतक खगता छइ। वर्ग शिक्षक जखन कोनो लिस्टमे चन्दुक चर्चा नै

केलैन तखन तँ ओकर दुखक कोनो सिमाने ने रहि गेलइ। ओकरा बिसवास भऽ गेलै जे हम जरूर फेल भऽ जाएब।

ओकरा मनमे ऐ बातक द्वन्द चलिए रहल छेलइ। ओकर मन ओझरा जकाँ गेल छेलइ। ओ अपना भविसक लेल सोचि रहल छल। तखने वर्ग शिक्षक महोदय द्वारा ओकर नाओंक पुकार भेल। ठाढ़ होइले कहलखिन। चन्दु उठि कऽ ठाढ़ भेल। मास्टर साहैब कहलखिन-

> "बौआ, तोहीं एकटा एहेन बच्चा छह जे तूँ जे मनमे ठानि लेबह तँ बहुत आगाँ तक जा सकै छह। तोहर भविस हम देख रहल छिअ। जँ तूँ कनियोँ मन लगा कऽ पढ़बह तँ तोराले किछु असम्भव नहि। तोरामे आत्म विश्वास आ आत्मबल हम देख रहल छिअ। हम जनै छी जे कनीए मेहनतसँ अहाँ प्रथम श्रेणीमे नीक अंक लऽ परीक्षा उतीर्ण हएब आ अपन भाग्य रेखा अपने खिंच लेब। तोहर प्रश्स्त ललाट हमरा बहुत किछु कहि रहल अछि। तोरा भाग्यमे एकटा सरकारी नोकरी लिखल हम स्पष्ट देख रहल छी। बस खगता छै थोड़े पढ़ाइपर धियान देबाक।"

चन्दुक प्रति वर्ग शिक्षकक एहेन भरोस देख चन्दुक आत्म विश्वास जागल। ओकरा बुझेलै जे ओ बहुतो किछु कऽ सकैए। यएह सोचि ओकर मन-माथा घूरि गेलइ। ओकरा आँखिक सामने हरिदम बोड परीक्षा नाचए लगलै, आ ओ बीसो नहक जोर लगा पढ़ए लगल। पढ़ाइ-लिखाइ छोड़ि आब ओकरा कोनो काजे ने रहलै। चन्दुमे ई आमूल परिवर्तन टोल-पड़ोसक बीच चर्चाक विषय बनि गेल। पढ़ाइक प्रति जेना ओकरापर भूत सवार भऽ गेलइ। पढ़ब अनिवार्य जानि ओकर अभिरूचि जागि गेल। जे पढ़ाइ ओकरा कनैलक दूध जकाँ तीत बुझना जाइ छेलै तेकरा ओ अमृत बुझि पान करए लगल। नतीजाक रूपमे ई भेलै जे आयोजित बोड परीक्षा लेल चन्दु खूब मेहनत केलक। परीक्षा नीक नहाँति गेलइ। सभ प्रश्नक उतारा चन्दु देलक। प्रथम श्रेणी पाबि चन्दु पास केलक। एतबे नहि, बिहार सरकार टी.ई.टी. परीक्षामे सेहो प्रथम श्रेणी लऽ पास केलक आ

ओकर चयन मध्य विद्यालय अमौजामे भेल। आइ ओ एकटा प्रतिष्ठित शिक्षकक जिनगी जीब रहल अछि। ई छल ओकरामे जागल ओकर आत्म विश्वास।

◌

शब्द संख्या : 762

लाल भौजी

पैछला अड़तालिस बर्खक सभ रेकार्ड घ्वस्त करैत ऐ बेरक जाड़ पाछाँ छोड़ि देलक। कहबी छै जाड़ मासमे रुइये आकि दुइए मुदा रुइ ततैक महग जे बेसाहब कठिन। जँ दाम पुछबै तँ माधो मास सौंसे देह पसीनासँ तर-बत्तर भऽ जाएत। जहाँ धरि दुइयेक सवाल अबैत अछि तँ ई सुख प्रायः सबहक कपारमे लिखले नै अछि। जँ कियो किशोरावस्थाक बालक-बालिका छैथ तँ राति सपनाइते बितैत छैन, आ बुड़हा-बुड़हीक तँ कथे नै पुछू किएक तँ आइ ने ओ बुढ़ भेलाहें मुदा एहेन केतेको जाड़ कऽ ओ लोकैन देखने छैथ आ खेपने छैथ। तँए फलक रूपमे केराक घोड़ जकाँ हथ्थे-हत्थाक असथानपर गन्डाक-गन्डा धिया-पुता सोहरल छैन। बाल-बच्चाक समर्थ रहबाक कारणे ओकरा सभकें तँ अपने खाए-खेलाएसँ पलखैत नहि। तहूपर सँ जँ कोनो पाहुन-परख चल आबैथ तँ घरक र्स्वथा अभावे। सभ घरकें बेटा-पुतोहु अलगे छेकने। तँए बुढ़ा-बुड़ही लेल तँ माघ मासक जाड़ प्राणक हार बनल रहैत छैन।

कोनो तेहन अवसरे नै भेट पबै छैन जे समए सँ ओइ कहबीसँ किछु लाभ उठबैथ। तँए ओमहर बुड़ही कोनो कोन मे धोकरी लगा पुआर मे धोंसिआइल रहैत छैथ। आ एमहर बुड़हा दलानक कोनो कोनमे पोता पोतीक संग जाड़सँ सर्घष करैत रहैत छैथ। कोनो तरहें दुनू परानी (बुड़हा-बुड़ही) राति खेपक लेल मजबुर। मुदा से केते दिन धरि?

एक दिन मौका पाबि बुढ़ा बुड़हीकें हाक दइ छथिन-

"सुनै छै हाथ-पएर जाड़े ठिठुरि रहल अछि, कनी कोनो मालीमे लहसुन तेल पका कऽ लेने आबो तँ। बुड़ही आँगनेसँ उतारा दैत छथिन हँ हँ सुनै छिऐ एते जोरसँ किए हाक दइ छै, कोनो की हम बहीर छी? लेने आबै छिऐ। ताबे माले घरमे आगि तापो। बुड़हा पुनः बाजि उठैत छैथ-

"हे जल्दी सँ औते हम माले घरमे छी।"

बुड़ही करीब दस मिनटक बाद मालीमे लहसुन तेल पका दुरुखे सँ हाक दइ छथिन-

"केतए छै हइया लौ।"

बुड़हा फेरि बाजि उठैत छैथ-

"एम्हरे लेने आबो ने हइया छिऐ।"

बुड़ही लग अबैत बाजि उठैत छैथ-

"ई किछो नै बुझै छै? जे बेटी-पुतोहुबला अँगना-घर भेलइ। सुतौ तेल लगा दैत छिऐ।"

बुड़हा पुआरक बिछौनपर ओंघरा जाइ छैथ आ बुड़ही तेलक मालीश करए लगै छथिन। कनी कालक बाद बुढ़ा तेल लगबैत गरमा जाइ छैथ। प्रेमसँ बुड़हीकेँ पुछै छथिन-

"भानस भातमे देरी छै की? बच्चा सभकेँ अँगना दऽ आबौ खा पी कऽ सुइत रहतै आ ई एत्ते आगि तापो।"

बुड़ही आँगन जा धिया-पुताकेँ पुतोहु सभकेँ दैत अपने बुड़हा लग आबि जाइ छैथ आ मालक घरमे पजरल घुरा लग बैस आगि तापए लगैत छैथ। दुनू परानीक गप-सप्प करैत बुड़हा हाथ-पएर सुग-बुगबए लगैत छैथ। आ अपन दहिना हाथ बुड़हीक बामा...

हाथ दैत बाजि उठैत छैथ एकरा एक्को रत्ती कोनो बातक धियान नै रहै छइ। कहौ तँ केतेक जाड़ होइत छै... कहैत बुड़हीकेँ पाँजमे उठा आ पुआरक बिछौनपर ओंघरा जाइ छैथ। कनीए जा कि लट्टा-पटी होइत आकि तखने आँगनसँ पोता-पोती खा कऽ सुतैले बाबा किलोल करैत मालक घर दिस दौड़ पड़ैत अछि। बुड़ही बाजि उठैत छैथ-

"छोड़ौ ने, छोड़ौ धिया-पुता सभ आबि रहल छइ।"

आ दुनू परानी माने बुड़हा-बुड़ही एक-दोसरासँ धड़फड़ा कऽ अलग भऽ जाइ छैथ।

रहल जबान-जुआनक गप, जबानीक धाह पाबि जाड़ो गरमाएले रहैत अछि। बुझू तँ दू परानी जबान-जुआन होथि आ ऊपरमे रजाइ परल हो तँ जाड़ोकेँ जाड़मे पसीना छुटए लगैत छइ। मुदा प्रकृति तँ स्थिर रहत नहि। ओ तँ अपना कालक्रमे चलैत रहत।

बितल जाड़ मास आएल सरस्वती पूजा उड़ए लगल वातावरणमे रंग-अबीर चारू कात डारि-पातपर चीड़ै-चुनमुनी चहकए लगल। कोइली धिया-पुताकेँ मुँह दुसब शुरू कऽ देलक। आमक गाछ मंजरसँ महमह करए लगल। मुनगा फूल धरए लगल, राइ, तोड़ी, तीसी आ सेरसोमे पीअर-पीअर फूल सेहो लहलहाए लगल। वातावरण किछु दोसरे रंगक भऽ गेल। चारूकात महमह करैत। कथा-कुटमैती शुरु भऽ गेल। कथकिया सभ ठाम-ठाम जाए-आबए लगला। कथा फरिछेला उत्तर लाल-पीअर धोती आ तैपर लाठी हूरबला लाल-लाल ठप्पा अपन मैथिल सभ्यताक परिचए दिअ लगल। नेना-भुटका सभ फगुनहैट गीत गाबए लगल-

> "यै बड़की भौजी, करियौ बिचार, केते दिन रहबै आब हम कुमार दैखैत देखैत हमरा ई भऽ गेलै अहाँ बहिनसँ हमरा लभ भऽ गेलै..."।

हरबाहो-चरबाहो सभ फगुआसँ सम्बन्धित मैथिली आ भोजपुरी गीत गाबए लगल। बाध-बोनमे मालो-महींस चराबए आ घर-घसबहिनीकेँ देखैत ई गीत गाबए-

"तोहर लहंगा उठा देव रीमौटसँ... ।"

घसबहिनी सभ सेहो उत्तारा देनाइ नै बिसराए ओहो सभ गाबए ई गीत- "रओ छोड़ा बज्जर खसतो... ।"

बुझू जे जाड़क खुमारी लोक सभ फागुनेमे उताड़ए चाहैत। जिनका परिवारमे नव बिआह भेल रहैन, बुझू तँ हुनकर छओ आँगुर घीएमे आखिर ऐ समएसँ भला गोधनपुर गामक रामदेव बाबूक छोटका बचबा उगन किएक ने लाभ उठैबतैथ। किएक तँ एहीबेर बाइस दिसम्बर 2009 इस्वीमे हुनक अग्रज दुर्गानन्दजीक बिआह दरभंगा जिलाक बरुआरा गाममे सम्पन्न भेल छेलैन। तँए भैयासँ तँ डर जरुर रहैन मुदा नवकि कनियाँ अर्थात लाल भौजीसँ खूब रंग-रभस होइ छेलैन। उगनक भौजी सेहो करीब एक्कैस बर्खक छेली। बीस बसन्त तँ सुखले-साखले बितौलैन मुदा एक्कैसम बंसन्त बुझू जे ओ तँ रससँ उगडुम करै छेली। बेस पाँच हाथ नमहर-छड़गर, देहो दशा बेस भरल-पूरल गाल तँ बुझू हाइ ब्रीड टमाटर जकाँ लाल टरैस आ बेस गुदगर। आँखि एहेन कटगर जे जेकरा दिस एक बेर ताकि देथिन तँ बुझू सोनित एक्को ठोप नै खसैत मुदा ओ बेचारे घाएल भऽ जाइत। हुनकर जुट्टी तँ बुझू सुच्चा गहुमन साँप जकाँ फूफकार छौड़ै छेलैन। नव विवाहित भेलाक कारणे सदिखन भरि बाँहि चुड़ी आ भरि हाथ मेहदी, आरतसँ रंगल पएर, भरि आँखि काजर आ भरि माङ सेनुर लाल टुहटुह करैत। कियो जँ धोखोसँ देखैत तँ आँखि चोन्हरा जाइत। सभसँ सुन्दर हुनक वस्त्राभुषणक पहिरब आ ओढ़ब छैन। एक तँ गोरि-नारि तैपर सँ सुगा पंखी रंगक साड़ी आ बेलाउज आ ओहीक तरमे उज्जर धप-धप करैत ब्रेसिअर जे पहिरैथ ओकर उज्जरका फिता, से देख उगनकेँ तँ मौगति भऽ जाइ छेलैन। ओ मने-मन बिचारैथ जे ऐबेर फगुआमे लाल भौजीकेँ सभ तरहेँ लाल कऽ कए देबैन। दिन बितैत कोनो

कि देरी लगैत छइ। संयोग एहेन जे ऐबेर फगुओ पहिले मार्चमे छल। जेना-जेना फगुआ लगिचाइल जाए उगनक मना तेना-तेना लाल भौजीक जुआनीसँ बौराइल जाइ छेलैन।

फगुआसँ एक दिन पहिने उगन दरभंगा अपना डिपटीपर सँ गाम अबैत छैथ। किलो दुइ मधुर नेने किलो एक अंगुर, आसेर काजू आ दू पैकेट किशमीस आ चारि-चारि पैकेट हरियर लाल रंग सेहो हाथमे टंगने आएल संग-संग दू शीशी रम सेहो नेने आएल। पीठपर एम.आर. बला बैग। उगन आँगनसँससैर ओसारपर जाइ छैथ आ ओतैसँ हाक दइ छथिन-

> "भौजी, यै लाल भौजी केतए गेलौं, आउ-आउ लग आउ हम छी उगन।"

लाल भौजी पलंगपर सँ उठि बाहर अबैत छैथ। तात उगन पीठपरक बैग निचाँ राखि एक हाथे मधुरक पैकेत लाल भौजीक हाथमे दैत आ दहिना हाथमे पहिनेसँ धोरल लाल रंग लाल भौजीक बामा गालपर लगबैत आ दहिना गालमे चुम्मा लइत बाजि उठैत छैथ-

> "अधला नै मानब फगुआ छी। भौजी यै भौजी आब कहू मन केहन लगैए?"

लाल भौजी चौबनियाँ मुस्की दैत बाजलि-

> "धूर जाउ, हमरा अहाँक ई चालि नै सोहाइए।" बाजि लाल भौजी अपना पलंगपर चलि जाइ छैथ। आ उगन अपन कोठलीमे। राति भरि उगनक आँखिमे नीन नै भेल। सुतलियो रातिमे रहि-रहि मन पड़ि उठैत छैन भौजी, लाल भौजी...।



शब्द संख्या : 1098

पारस

"शान्ति यै शान्ति केतए नुकाएल छी यै फूलकुम्मरि?"

शान्ति-

"एलौं याए एलौं।"

आँगनसँ शान्ति हाक दैत लग आिब सोझामे ठाढ़ि होइत पुन: बाजि उठैत छैथ-

"कथीले एतै जोर-जोरसँ हाक दइ छलौं? कोनो खास बात छै की?"

हम-

"एह, अहाँकेँ तँ हरिदम मजाके सुझाइत अछि। खास बात की रहत, अहाँ छी तँ सब खासे बात बूझु। ओना आइ विद्यालयक छुट्टी समाप्त भऽ गेल तँए झब दऽ खाइले किछु बनाउ। जे हम समएसँ विद्यालय चल जाएब।"

शान्ति बजली-

"ओ..., आब ने बुझलौं। अहाँ तँ सब दिन गौलहे गीतकेँ गबै छी। ओना हे, आइ बड्ड सखसँ अपने बाड़ीसँ सुआ आ लौफक साग काटि अनलौंहेँ। तँए आइ साग-भात आ आल्लुक सानाक संग भाटा-अदौरीक तीमन बनवितहुँ से निआरने रही। मुदा

तइमे तँ देरी होएत। ताबत अहाँ स्नान-पूजा करू आ हम जलखैक ओरिओन कऽ दइ छी।"

"बेस, बड्ड बढ़ियाँ। कनी अंग-पोछा आ धोती-कुरता बहार कऽ दिअ।"

हम धोलूकेँ हाक दइ छी-

"धोलू हौ धोलू। केतए छह हौ?"

"ऐलौं, याए ऐलौं बाबूजी, कनी नदी फीरि रहल छी।"

"वेस, बड्ड बढ़ियाँ। आ बौआ, है सुनै छह? आइ हमरा विद्यालय जेबाक अछि। से जात हम स्नान करै छी। तात् तौं साइकिलकेँ बढ़ियाँ जकाँ झारि-पोछि दाए।"

ई कहैत हम स्नान करबाक लेल डोल-लोटा लऽ कलपर चलि जाइ छी। स्नानोपरान्त पूजा-पाठ कऽ धोती पहिर तैयार होइते छी तात् शान्तिक आग्रह-

"सुनै छी, अहाँले जलखै निकालि देने छी, कऽ लिअ।"

ई कहैत आगूमे सिकीक चंगेरी, जे रंग-विरंगक रंगसँ रंगल मुजसँ बनौल गेल रहए, तइमे मुरही-चूड़ा, दूटा चूड़लाइ आ गोर पाँचेक तीलक लाइ संगमे काँच मेरचाइ आ नोन परसल छल, आगू बढ़ौलैन। एक क्षणक लेल हम मिथिला, मैथिल, मैथिलक संस्कार आ स्भयतासँ बहुत बेसी आनन्दित भेलौं। मन गद्-गद् भऽ गेल। तात् शान्तिक मधुर अवाज-

"केतए हेरा गेलौं? अखन यएह खा, विद्यालयसँ भऽ आउ, जखन आएब तँ गरमे-गरम साग, भात, अल्लुक साना आ भाँटा-अदौरीक तीमन भरि मन खाएब। ओना जाड़ मास छै यदि किछु आरो मनमे हुअए तँ कोनो हर्ज नहि।"

कहैत, हँसैत सोझासँ अढ़ भऽ गेली। आ हम जलखै करैत ऐ मादक अदाक मादे सोचए लगलौं। हमरो मनमे गुदगुदी लागए लगल। जलखै करैत एकबेर पुन: हाक देलिऐन-

"शान्ति, यै शान्ति...।"

नै जानि जे हुनको मनमे कोनो बात उमैर रहल छेलैन। ओ गुनगुनाइत ई गीत-

"एगो चुम्मा दे दऽ राजाजी, बन जाइ जतरा...।"

आबि वाणभटक नायिका जकाँ लगमे सटि कऽ ठाढ़ि होइत प्रेमानुरूप एकटा चुम्मा लऽ छैथ आ मुस्की दैत घरसँ बहार भऽ जाइ छैथ। हम लजा जाइ छी।

करीब चालीस मिनटक उपरान्त विद्यालय पहुँचै छी। हाथ-पएर धोला पछाइत हाजरी बनबै छी। प्रार्थनाक घण्टी बजैत अछि आ धिया-पुताक संग हमहूँ एक पातिमे ठाढ़ भऽ जाइ छी। उपरान्त एकर नवम्-बी मे हमर वर्ग रहैत अछि। हाजरी बही लऽ वर्गमे प्रवेश करै छी। वर्ग नवम बी जे एकछाहा लड़कीएक वर्ग रहैत अछि, स्वागतार्थ सभ बच्चिया उठि कऽ ठाढ़ि भऽ जाइत अछि। बैसबाक आदेश पाबि यथास्थान सभ बैस जाइत अछि। सबहक हाजरी लेब सम्पन्न होइत अछि। तखन किछु बच्चिया सभ बाजि उठैत अछि-

"मा-साएब, आइ ललका पाग पढ़बियौ।"

कियो कहैत-

"जी नै सर आइ ग्रेजुएट पुतोहु पढ़बियौ।"

मुदा किछु खास बच्चिया यथा- राखी, गीतांजली, खुसबू, बबीता, रिंकी आ पिंकी कहि उठैत अछि-

> “जी नै सर आइ अहाँ अपने लिखल कोना कथा कहियौ। आ हम ओइ आग्रहकेँ नै टारि पबै छी। शुरू कऽ दइ छी अपन लिखल ई कथा- ...पारस।”

माँ मिथिलाक गोद आ कमला महरानीक कछरिमे बसल एकटा गाम दीप-गोधनपुर। जइमे छल एकटा चाहबला ओकर नाओं छल पारस पिता श्री सत्य नारायणजी। नामक अनुरूप दुनू बापूत विपरीत छल। पिता श्री सत्य नारायण जरूर मुदा, सब चीजले खगले रहै छला। एकटा प्राइवेट स्कूलमे अध्यापण कार्य करैथ आ कोनो तरहेँ बाल-बच्चाकेँ पोसैथ-पालैथ। हुनकेर बालकक नाओं पारस। नामक अनुरूप एकदम विपरीत, मझौले कदक जुआन देहो-हाथ सुखले-टटाएल कारी-झामर हाथ-पएर एकदम सूखल-साखल मुदा, पेट जरूर कदीमा सन अलगल। देहो-वगेह ओहने, हरिदम जेना मुहसँ लेर चुबिते छेलइ। फाटले-चिटले कोनो जूता-चप्पल पहिर ओही प्राइवेट स्कूलमे पढ़ै छल। मुदा अकिलक कम नहि।

सत्य नारायणजीक घर जरूर बान्हेँ कातक सए फिट्टा अर्थात् सरकारी जमीनमे छल, मुदा संस्कार कोनो सुसभ्य समाजक प्रतिक छल। सत्य नारायण बाबूकेँ हरलैन ने फुरलैन खोलबा देलखिन पारसकेँ एकटा एकचारी देल चाहक दोकान। अर्थाभावक कारणे पारस उधार-पैंच लऽ कीनि अनलक चाहक दोकानक लेल बरतन-बासन यथा केटली, ससपेन, चाहछन्नी, स्टोव, दूध राखक लेल दूटा टोकना आ दूआ माटिक मटकुरी छाल्ही राखक लेल। चाहक दोकान जे नित्य समएसँ खुलैत आ बन्न होइ छल। क्रमश: महींसक अगब दूधक चाह, एक्को ठोप पानिक छुति नहि, बरतन-बासन खूब पवित्र आ संस्कारी हेबाक कारणे ग्राहककेँ सेहो उचित सम्मान भेटैन। चाहक दोकान खूब चलैन। क्रमश: पाँच सेर दूधक बदला आध-आध मन दूध खपत होमए लगल। आमदनी नीक होमए लगलै।

किछु पुंजी जमा केलाक बाद ओ एकचारी छोड़ि लऽ लेलक पक्काबला एकटा घर दोकान खोलए लेल। बना लेलक एकटा काउन्टर

आ बढ़ा लेलक दोकानक मेल। साझु पहरकेँ बनाबए लगल सिंहारा आ गरमा-गरम जिलेबी बात एककानसँ दूकान होइत गेलै एकर दोकानक नाओं भऽ गेलै दोकान खूब चलए लगल।

समए पाबि 26 जनवरी आ 15 अगस्तमे प्रसादक लेल विशेष आदर पाबि बनाबए लगल मनक मन बुनियाँ आ भुजिया। अगल-बगलमे प्राइवेट कोचिंग चलौनिहार संचालक आ निदेशक महोदयक योगदान ऐ दोकनकेँ चलाबएमे अहम भूमिका रखलक। दिन दुना आ राति चौगुना उन्नति होमए लगलै। मनक-मन दूध खपत हेबाक कारणे घी सेहो बनबाए आ नीक दाममे बेचाए। देखैत-देखैत चाहक दोकानक आमदनीसँ कीनि लेलक ओ तीन बीघा जमीन। मुदा एकर उपरान्तो ओ चाहो बेचाए आ पढ़बो करए। समए पाबि प्राइवेट स्कूलसँ सातमा पास कऽ ओ एकटा संस्कृत विद्यालयमे नाओं लिखा लेलक, आ मध्यमाक फारम भरि फस्ट डिविजनसँ पास केलक। आब तँ ओ किछु बेसीए खुश रहै छल। मध्यमा पास केलाक बाद ओ अपन नाओं जनता कौलेजमे झंझारपुरमे लिखा लेलक। तखनो ओ वेचारा चाहो बेचए आ पढ़बो करए। आइ.ए. पास केलाक बादो ओकरामे कोनो परिवर्तन नहि। कौलेजसँ एला पछाइत चाहक दोकानपर ओ जमि जाए। यद्यपि चाह बेचब एकटा केहन काज मानल जएतैक ई विवादक विषए अछि। ओकरा एक्को पाइ लाज-संकोच नहि। किएक तँ कर्म कोनो खराप नै होइत छइ। कमा कऽ खाइ ऐमे कोन लाज। कोनो कि ककरोसँ भीख मंगबै जे लाज होएत। तँए चाह बेचब अधला काज नै से मानि ओ खूब जतनसँ अपन कर्तव्यक निर्वहन करए।

बुझिनिहार मैथिलमे एकर चर्च होमए लगल, जे देखू पारस चाहो बेचैए आ पढ़बो करैए। देखते-देखैत ओ मैथिली औनर्ससँ बी.ए. पास केलक। परोपट्टामे नाओं भऽ गेलै जे एकटा चाहबला चाह बेचैत बी.ए. पास केलकहें। तखनो ओ चाह बेचब नै छोड़लक। बात पसरैत गेल।

एकबेर एकटा कथा गोष्ठीक मादे सुपौल जेबाक छल। चारि गोट मात्र कथाकार बिदा भेलैथ दिन अछैते मुदा, कोशी महरानीक अभिशापे नावसँ यात्रा करए पड़ल आ घन्टा भरिक बाट मात्र चारि घन्टामे तय भेल। सुपौलसँ पहिने झल अन्हार भऽ जरा सेहो गेल रही। तँए चारू कथाकार चाह पिबाक लाथे बैसलौं एकटा चाहक दोकानपर। दोकानदारसँ-

"हौ, चारि कप चाह दिहह।"

ओ बाजल-

"जी, श्रीमान् दइ छी।"

कहैत ओ चाहक जोगार लगबए लगल।

तात् ओतए गप कियो तेसरे आदमी चलौलैन। जे गोधनपुर गाममे एकटा चाहबला अछि पारस बी.ए. पास। बी.ए. पास केलाक बादो ओ चाह बेचब अधला नै बुझैत अछि। चाहो तेतबेक सुन्दर आ बेवहारो ओकर तेतबेक सुन्दर छइ।

वाह। हर्ष भेल जे समाजकेँ ऐ बातक नजैर जरूर छैन जे एकटा पढ़ल-लिखल लोक चाह बेचैत अछि। ओकर नजैरमे कोनो काज करबामे हर्ज नहि।

एमहर देखू जे वर्तमान सरकारमे नगर-पंचायत, जिला परिषद, टेन पलस टू विद्यालयमे नियोजनक भेकेन्सी भेल। तात पारस मैथिलीसँ एम.ए. सेहो कऽ लेलक।

भैकेन्सीक अनुसार विभिन्न जिलामे आवेदन केलक। समए तँ जरूर लगल। मधुबनी जिलाक मेघा सुचीक प्रकाशित भेल ऊपरेमे ओकर नाओं छेलइ। नियोजनक निमित्त सभ आवश्यक कागजात, मूल प्रमाण पत्र एवं शपथ पत्र देला पछाइत ओकर चयन इच्छानुकूल परियोजना विद्यालय मनसापुरमे मैथिली लेल भेल।

समाजक सभ वर्गकेँ ऐ बातसँ हर्ष भेल जे सत्य नारायणजीक बालक पारस आइ टेन पलस टू विद्यालयमे मैथिली पद्पर नियोजित भेला। साझखन सभ ओही चाहक दोकानपर उपस्थित भऽ पारस आ हुनक पिता सत्य नारायणजीकेँ सभ शुभकामना आ बधाइ दैत कहलकैन-

"सत्य नारायण आब ओना काज नै चतल, आब भोज-भातक आयोजन कएल जाउ। भोज लागत।"

सत्य नारायण आरो अह्लादित होइत बजला-

"सभ ऐ समाजक असीरवाद छी। अहीं सबहक असीरवाद छी जे आइ पारस चाह बेचैत-बेचैत एकटा टेन-पलस टू विद्यालयक शिक्षक भेल। हम ऐ समाजक ऋणी छी। आइ जे समाज नै तँ हमर कोनो अस्तित्व नहि। आइ हमहूँ गौरवान्वित भऽ रहल छी जे हमर बेटा हमरे बेटा नै ऐ समाजोक बेटा। जे ऐ समाजमे सिर उठा कऽ जीवैक, एकटा अलग स्वाभिमान देलक। एकटा आदर्श देलक। तँए हम भोज देबेटा करब। भोज जरूर करब।"

समए सुअवसर पाबि सत्य नारायण बाबू केलैन बड़का भोजक आयोजन। लगुआ-भगुआ हित अपेक्षित मित्र-बन्धु आदि ऐ भोजमे नै छुटैथ आ हुनकर उचित सम्मान हुअए ऐ बातक हरिदम खियाल रखलैन।

दुनू तरहक आयोजन छल, शाकाहारी आ मांसाहारी। निमंत्रित बेकती सभ समएसँ उपस्थित भऽ आ स्वरूचि भोजन केलैन। शाकाहारीक लेल आयोजन छल। पुरान तीन-सलिया बासमती चाउरक भात, राहरीक दालि आमिल देल, पालक पूड़ी, पालक पनीर, आमक चटनी, सलाद, तरल मिरचाइ, मटर-अल्लु-परोर देल डलना, बड़ी अदौड़ी, सकरौड़ी तैपर डब्बूक डब्बूक घी। महींसिक अगब दूधक तौलाक-तौला दही, तरहत्थी सन मोट छाल्ही बुझू तँ खेनिहार तर आ भोजेतक बेवस्था ऊपर। दहीक तँ कथा नै पुछू खेनिहार कम आ तौले बेसी। सभ कियो गद्-गद् भऽ गेला।

एमहर मांसाहरी लोकैनकेँ लेल अरबा चाउरक भात आ आध-आध मनक जुआएल खस्सीक लद-बद करैत मासु। किसिम-किसिमक मश्साला देल गम-गम करैत एकहक टा पीस बुझू जे सए-डेढ़ सए ग्रामक। एह अजोध खस्सी, मासु। बनलौ तेतबेक सनगर। सभ भरि मन खएला। आ ऊपरसँ सेरक सेर दही फी आदमीपर। तर-बत्तर छला, भोज तँ जस-जस भऽ भेल।

सभ कियो भोजनो करैथ आ पारसक चर्चो करैथ। जे पारस तँ पारसे अछि। वस्तुत: पारस आब ओ पारस नै रहल जे चाह मात्र बेचै छल। चाहे बेचेत ओ पारस तँ आब समाजक लेल ओ पारस भऽ गेल। जेकर गुणसँ केतेको नेना-भूटका आब चाहेटा नै बेच समाजक बीच शिक्षाक ज्योति जगाओता। जइसँ अपना समाजमे पारस, पारस मणि गुणसँ प्रभावित होएत आ पारसक गुणसँ अपना समाजक केतेको बच्चा पारस बनता।

अन्तत: बाउ लोकैन अहीं सभ कहू जे अहाँ सभ घर अँगनाक काज करैत पढ़ि लिखि की बनए चाहै छी?”

एक स्वरमे उत्तर भेटैत अछि मास्सैव हमहूँ पारस बनबै पारस। कहैत सभ बच्चियाक संग राखी, गीतांजली, खुशबू, बबीता, रिंकू, पिकूक नोरसँ भरल आँखिमे एकटा विशेष आत्म विश्वास हमरा बुझना जाइत अछि। जेना ओ प्रखर ज्योति बहराएल हुअए अनमोल मोती पारससँ।



शब्द संख्या : 1657

बकलेल

गर्मीक समए, जेठक दुपहरिया, प्रचण्ड रौद, बिजली लापत्ता। एहेन बुझना जाइ छल, जेना दाता-दीनानाथ आइ मनुखक परीक्षा लेमए चाहैत छैथ। केतौसँ वसातक कोनो आश नहि। नेना-भुटका सभ एमहर भैंए तँ ओमहर भैंह, एमहर कैं तँ ओमहर कैं करै छल। बुझना जाइ छल जेना मखना तेलीक पहरा होअए। माल-जाल गर्मी सँ परेशान भऽ एकहक हाथ जीभ बबैत छल। लेड़ू आ परड़ुक तँ तेरहो करम भऽ गेल छल। कोनो तरहें चंडलबा रौद आ दुपहरिया झूकल, मन कनेक थिर भेल मुदा राति खन उएह हाल, जतवे गर्मीसँ परेशानी तेतबेक मच्छड़ आ उड़ीसक उपद्रब। ओकरा सभमे एकता तेतेक जँ हाँ-हाँ नै करियोक तँ सोझे उठालेत आ नेने-नेने सकरी चीनी मील लग रखि आओत। केतौ चैन नै...।

भोजनोपरान्त देह-हाथ सोझ करबाक लेल विछाउनपर गेलौं, मुदा चैन नहि। कछमछ-कछमछ कऽ रहल छलौं। कती राति गुजारला पछाइत कनी जा कि आँखि लगल, आकि ध्यान किछु आर-आर विषय दिस चल गेल। आँखि यधपि बन्न मुदा चेतनामे अनेकानेक तरहक बात धुमए लगैत अछि। पड़ल छी विछौनपर मुदा मन जीनगीक चौबट्टीपर ठढ़ वर्तमानक अधरपर भूतसँ भविष्यक, भविष्यकें विषयमे सोचए लगैत अछि।

सरकारी सेवामे रहबाक करणें कमे काल गाम जेबाक मौका लगैत अछि। पावैनियोँ तिहार जतै छी ततै करए पड़ैत अछि। तखनो अस्सी बर्खक बुड़ही माए आ करीब सए बर्खक बुढ़ बाबूजीकेँ देखए लेल गाम जरुरे चल जाइ छी। टोला-पड़ोसाक सभकेँ भेँट कऽ सबहक कुशल-छेम जानि अपना कऽ धन्य बुझै छी।

ऐ प्रकारे विभिन्न प्रकारक लोकक चारित्रिक विश्लेषण करबाक सेहो मौका लागि जाइत अछि। सम्भवतः एहने स्थितिमे मन पड़ैत छैथ एकटा सज्जन सरोज बाबू। ओ एहेन बेकती जे कोनो सुरतमे अपने कऽ किनकोसँ कम मानक लेल तैयार नै होइ छैथ। माए-बापक एक मात्र वेटा नान्हियेटा सँ पढ़ै-लिखैमे तेजगर मुदा तेतबेक थेथरलोजीमे सेहो निपुण। विषय कोनो किएक नै हो मुदा एक चोखैर थेथरलोजी जरुर करता। जेना की ओ सर्वज्ञ होथि। तँए हुनकर किछु संगी-साथी हुनका “मिस्टर नो ऑल” सेहो कहै छेलैन। लोक सभ बकलेल सेहो कहथिन।

परुकेँ साल अगहन मासमे हुनकर बिआह झंझारपुरक बगले महरैल गाममे सम्पनन भेल। बिआहक मादे एकोटा सर-कुटुम नै छुटैथ अइले ओ एकटा बही अलगसँ बना आ क्रमबद्ध सभकेँ नत-लिऔन आ हकार पठाएब नै बिसरला। बिआहोत्सवमे सभ उपस्थित भऽ बराती गेला। जइसँ एक बात स्पष्ट भऽ गेल जे लड़का कोनो नीके समाजसँ जुड़ल छैथ। गौंआँ-घरुआ आति प्रसन्न भऽ बढ़ि-चढ़ि कऽ बारातीक सुआगत-बात केलैन। ममिऔत-पिसिऔत सभ ऐसँ प्रसन्न जे बर-आ कनियाँ दुनूक जोड़ी सीता-रामक जोड़ी लगैत अछि। भगवानक असीम कृपासँ अनुगृहित भऽ नीके कथा सम्पन्न भेल। असली कथा आब ऐठामसँ शुरु होइत अछि। बिआहोपरान्त कनियाँ विदागरी भऽ सासुर एली। दाइ-माइ लोकैन अरैछ-परैछ कनियाँ घर केलैन। आ अइहब-सुहब होथू असीरवाद दैत अपन-अपन घर चल गेली। कनियाँ तँ कनीयेँ दिनमे अपन सासु-ननैदक दिल जीत लेलैन। बर-कनियाँ समर्थ रहबाक कारणें विदागरी चौठारी दिन नै भऽ सौन-भादोमे भेल। पहिल सौन-भादो

नवकी कनियाँ नैहरमे मनबैत छैथ, ऐ तरहक मिथिलाक आ मैथिलक एकटा मान्यता छइ। नीक दिन तका कनियाँ विदागरी भऽ सासुरसँ नैहर चल गेली। आब तँ भेल पहपैट। सरोज बाबू जे एते दिन सदिखन घरेमे धुसल रहैथ आ सदिखन कनियेकेँ निंधारैत आ गबैत छला ई गीत-

> "मन होइए अहाँ केँ हम देखते रही, किछु बाजी अहाँ हम सुनिते रही, मन होइए अहाँकेँ...।

आठ मास कोना वितल से नै बुझि सकला आ कनियाँ आठे मासक फला-फलक रूपमे नौ मासक सनेश लऽ नैहर चल गेली। से तँ, एको दिन, एको पहर बितब सरोज बाबूक लेल पहाड़ सन बुझना जाइ छेलैन। कोनो बातक सुधए-बुधिए नै रहैन। सदिखन एकदम बकलेल जकाँ करैथ। एहेन सन बुझना जाइ छेलैन जे शरीर गाममे होइन आ आत्मा सासुरमे। भोजनक प्रति अरुची जागए लगलैन। समएसँ स्नान-भोजन करब सेहो सुधि-बुधि नहि। लोक सभ अपनेमे बाजैथ जे सरोज बाबू एना किएक करैत छैथ- एकदम बकलेले जकाँ जहिना अपना गाम बेरमामे सरोज बाबू तहिना अपना नैहर महरैलमे सरोजनी दुनू बेकती एक दोसराक विरहाग्निमे जरैत। दिनो-दिन मुरझाएल जाइ छला। सोभाविके अछि। किएक तँ बड़-कनियाँ समर्थ रहबाक कारण जीवनक अपूर्व आनन्द जे उठौने रहैथ। एकटा पूर्ण पति-पत्नीक रूपमे। एक-एक दिन पहाड़ भेल चल जाइ छेलैन। नै तँ एम्हरे आँखिमे निन्न आ ने ओम्हरे एको मिन्टक चैन। माए-बापक डरे नै तँ कनियाँ करैन आ ने बाबूजीक डरे सरोज सासुर जेबाक साहस कऽ पबैथ। किएक तँ अखनो केतौ- केतौ एहेन प्रथा छे जे बिना दिन-दूरागमनक बर-सासूर नै जाइ छैथ। तँए सरोज बाबूक डेग सासुर जइले नै उठैन। समए बितैत देरी नै लगैत छै देखैत-देखैत चौठ-चन्द्र पावैन आएल... चल गेल। जितिया बितल आबि गेल आसीन मास... सगरो दुर्गापूजाक तैयारी शुरु भऽ गेल। ओमहर सरोजनीक नैहरमे जोड़ा करिआ छागर बलि-प्रदानक लेल राखल छल। जेकरा ओ लोकैन खूब जतनसँ दाना-पानि खुआबैथ-पिआबैथ। देखते-

देखते दुनू छागर, सबैयासँ डोढ़ा भऽ गेल। जँ जँ दुर्गापूजा लग आएल जाइत, सरोज बाबू आ सरोजनीक हृदैक धड़कन हृदयागंम हेबाक लेल मचलए लागलि। देखते-देखते कलश स्थापन भेल। पहिल पूजा बितल दोसर बितल आबि गेल पंचमी। मुदा अखन धरि सासुरसँ सरोज बाबूक लेल कोनो खोज-खबैर नै कएल गेल! एक दिन माए पुछलखिन-

"बौआ, कनियाँक खोज खबैर नै केलहक? कोनो फोनो-तौनो नै अबै छह?"

बेचारे की बजता अपन हारल आ बहुक मारल कियो की बजै छै? हारि-थाकि पंचमी राति फोन लगौलैन। घण्टी भेल, फोन उठौलखिन हुनकर शारि- कमलनी, ओमहरसँ अवाज अबैत अछि-

"हेलो... हम महरैलसँ बजै छी?"

"हम छी सरोज बेरमासँ। कनी... दीदी... कैं फोन...।"

कमलनी माँ दिस तकैत बाजि उठैत अछि-

"माए गे माए जीजाजी कैं फौन छिए।"

एमहरसँ हेलौ-हेलौ होइत रहैत अछि। कमलनी फोन लऽ कऽ दैत छै अपन दीदी सरोजनीकैं। सरोजनी फोन लइत-

"परनाम करै छी। अहाँ नीके छी की नै? माँ बाबूजी कोना छैथ? अपना शरीरपर धियान दइ छी की नै? मन लगैए की ने? मेला देखऽ कहिआ एबइ? कमलनी आ अजय, विजय अहाँक विषयमे पुछैत रहैए। दीदी गइ दीदी, जीजाजी कहिया ऐतौ?"

सरोज बाबूक जवाब छल एको-रत्ती मन नै लगैत अछि। सम्भवतः दुर्गापूजामे नै आबि सकब। धिया-पुताकैं मेला देखक लेल दस-दसटा टाका दऽ देबइ। तामसे टीक ठाढ़ केने फोन काटि दैत छैथ।

सरोज बाबूक लेल असमंजसक स्थिति रहैन, जे जेकरा घरमे जोड़ा छागर बलि प्रदान हेतै, से अखन धरि एको बेर एबाक लेल नै कहलैन। एहेन कोन सासुर, कोन सासु आ ससुर, केहेन सारि आ शरहोजि। तामसे मन अधोड़ आ टीक ठाढ़। की करी आ की नै करी? ई द्वन्द्वात्मक स्थिति बनल रहैन। किछु नै फुरैन। मुदा अष्टमी अबैत-अबैत-

ये दिल है कि मानता नहीं
ये वेकरारी क्यों हो रही है,
ये जानता नहीं...।

अपना कऽ नै रोकि सकला। आ चलि गेला अपन सासुर महरैल। भगवती दर्शन कऽ जहाँ की पानक दोकानपर जाए छैथ, पान खेबाक लेल, आकि मेला देखक लेल आएल सारि-शरहोजिक नजैर हुनकापर पड़ैत अछि आ ओ सभ पकैड़ लैत अछि हिनकर गट्टा। जीजाजी, जीजाजी अहाँकेँ गामपर चलए पड़त। दीदीओ कहने छलि, सप्पत दऽ कऽ। मुदा सासु ससुरक आग्रह नै तँए अखनो धरि हिनक टीक ठाढ़े।

अन्ततः थाकि-हारि एक किलो मधुर लऽ सारि-शरहोजिक संग चलला सरोज बाबू सासुर। पहिल-पहिल बेर सासुर गेल छला तँए सुआगत-बातमे कोनो कमी नै रहल। चाह-पान बढ़ियाँसँ भेल। मुदा खेबा काल ओ पसारलैन बड़का नाटक, जे हम नै खाएब। हम खाऽ आएल छी, भुख नै अछि। सासु आग्रह केलखिन कोनो असर नहि, ससुर हाथ पकड़लखिन, कोनो फरक नहि, बड़का सार सेहो खुशामद् केलखिन मुदा कोनो असर नहि। एके ठाम जे हम खा कऽ आएल छी, भूख नै अछि। आ ओ भोजन नहियेँ केलैन।

ओमहर दुनू छागर जे बनल ओकर सुगन्धसँ टोला-पड़ोसा गम-गम करैत। टोलाक निमंत्रित सज्जन सभ आबि मासु-भात अर्थात छागर रुपी प्रसाद पाबैथ आ ओकर स्वादक सविस्तार चर्चा करैथ। एह छागर जे जुआएल छल, चर्वी केहेन तरहथ्थी सन छेलै आ प्रसाद बनल केतेक सुन्दर अछि! वाह मन तँ भीतरसँ प्रसन्न भऽ गेल, चर्चा करैत बाँसक

सीक्कीसँ खैरका करैत कुरूर कऽ पान खा ओ लोकैन तृप्तिक ढेकार लैत चल जाइ गेला।

एमहर सरोज बाबूक पेटमे बिलाड़ि कुदऽ लगल। ओत भुखे लहालोट। राति खसल जाए, बहरबैआक बाद घरबैओ सभ खा कऽ सुतए गेला। मुदा किछु लिऔनवाली सभ अखनो जगले, ओ लोकैन पाछाँ काल कऽ भोजन करैथ, फैलसँ पलथा मारि मासु आ भात, खाथि आ ओइ छागरक मासुक चर्चा करैथ। आग्रह अलग जे दीदी कलेजी दू पीस लिअ। हे यै फल्लाँ गामवाली हे ई चुस्ता लिअ। हे यै दाय, हे, ई हड्डी बला दूटा पीस लिअ। आग्रहपर आग्रह। आ ओ लोकैन बड़ी काल धरि गप-सप्प करैत, भोजन करए गेली।

एमहर सरोज बाबू जठराग्नि आरो तेज भेल चल जा रहल छल। आब होइ छेलैन जे कियो आबि आग्रह करितैथ तँ भरि पेट मासु-भात खइतौं। मुदा से तँ आब सभ कियो सुतए चल गेल छल। धियो-पुता मासु-भात खा फोफ कटैत छल। आब तँ हिनका किदुन- जे अपने करनी गइ मुसहरनीक परि भऽ गेल छल। थाकि हारि किछु काल पछाइत हरलैन ने फूरलैन सरोज विदा भेला भनसा घर दिस। आ अपने सँ मासु-भात भरि थारी निकालि आ चुपे-चाप भोकसए लगला। किनको ऐ बातक पत्तो नहि। जागल जे सभ रहैथ से सभ हिनका खोजए लगल जे पाहुन केतए, पाहुन केतए। आ पाहुन तँ भनसा घरकैं केबाड़ तर नुका कऽ गुप-गुप मासु-भात दऽ रहल छथिन। तात गणेशजीक वाहन ऐ कोठीसँ ओइ कोठी जा कि छरपल आकि कोठीपर राखल खापड़ि पाहुनक कपारपर खसल। अवाज सुनिते लोक सभ ओइ घर दिस दौगल। देखलक जे पाहुन तँ केबाड़क दोगमे नुका कऽ मासु-भात भोकैस रहल छैथ। परल बड़का पिहकारी, शारि-शरहोजि मारलक ताली खूब जोरसँ शोर-गुल सुनि सुतलहो लोक सभ जागि गेल। ताली आ पिहकारी पड़ि रहल अछि। पाहुन तँ लाजे कठौत भऽ गेला।

रति जखन सुतए घर गेला तँ कनियाँक कटू व्यंग वाणक बर्खा होमए लगल। पाहुनक तँ मने शान्त। किछु नै फुरैन। सोचला जे अन्हरोखे गाम चल जाएब। बिदाओ भेला, मुदा अन्हार बेसी रहबाक कारणे कुकुर सभ झाँउ-झाँउ करए लगल। लोक सभ जागि गेल देखलक जे आगू-आगू पाहुन आ पाछू-पाछू कुकुर हिनका खिहारने जाइत अछि। लोक सभ दौड़ल महरैलक हाटपर आबि हिनका पकड़लक। घुमि जेबाक आग्रह केलक। मुदा हिनकर मन तँ तामसे अधोर छल। किनको बातक मोजर नहि, हाक दैत दैत धोती पकड़लक से हुनकर ढेका खुजि गेल, धड़फड़ा खसला, मुदा ओ तैयो नै रूकि लटपटाइत धोती खोलि फेकैत गारि दैत परात होइत-होइत अपन घर पहुँचला।

कहू तँ एतेक पढ़ल-लिखल लोकक ई काज कोनो बकलेल जकाँ काज केलैन। सरिपौं जँ अधला नै लागए तँ हुनका बकलेले न कहबैन।



शब्द संख्या : 1606

किसनामुट्ठी

मरनी भिनसुरके पहर बेलाराही चौरीसँ एक गैलन काकोड़ बीछि अनने रहए। मेला-ठेलाक समए रहै तैं, कोठीसँ दू मुजेला काटू निकालि अँगनामे सुखैले देलकै। ओकर बाद नहा-सोनाह आ खाए कऽ सुतैले खेन्हरा लऽ डेढ़ियापर चल गेल। पुरबा हलफी दैत छेलै, निन्न टुटलै। आँखि मिड़ते उठल आ हाँइ-हाँइ कऽ काँटू डेंगाबए लगल। डेंगा-ठठा लेलाक बाद सुपसँ फटैक माएक तहवनमे बान्हि माएसँ नुका कऽ धऽ आएल कोठिक दोगमे। झल अन्हार भेलै तँ भगबत्ता दोकानसँ बेच अनलक। तीन सेर भेलइ। आठ अने दरसँ डेढ़ गो टाका भेलइ। ओ भगवतेसँ कहि सुनि कऽ चारि गो चौबन्नी आ दू गो अठन्नी भजोखा लऽ चुपे-चाप आँगन चल गेली।

विहान भेने मेला छेलै 'किसना मुट्ठी'। मरनी तरे-तर हिसाब लगोने जे चारि-चारि आना पाइ दुनू छोटकी बहिन अभेलिया आ सुगियाकेँ देबइ। चारि आनामे बौआले एकटा कठपुतरी किन लेब आ एकटा फूका। चारि आनाक कचौरी आ चप कीनि लेब। ओकर तँ मने छेलै चप-चप।

आठ आनामे एकटा अलता आ फीता लऽ लेब। घुरती काल आठ आनाक जिलेबी कीनि लेब।

भोरे विहान फेर ओ अपन गैलेन लऽ चलि गेल चौर आ बीछि लेलक एक गैलेन काँकोड़। आँगन आबि बकरी घरमे गैलेन राखि ओ नहाइ-सोनाइले चलि गेल आ नाहा-सोना, खा-पी कऽ सुति रहल।

एमहर नहेबा काल ओकरा माएकेँ तहबन नै भेटलै तँ औना कऽ एमहर-ओमहर तकलक तँ देखलक, ओ तँ कोठी दोगमे फेकल अछि- आ मरूआक किछु दाना लगल छेलइ। कोठीक मुन्ना फूटल। से देख ओकरा आगि लेस देलकै। ओकरा हरलै ने फुरलै सुतलैमे मरनीकेँ गट्टा पकैड़ लात्ते-मुक्के धुनि देलकै। गाड़ि पढ़ि-पढ़ि पुछए लगलै-

"बाज सौतीन बाज की केलही पाइ मरूआ बेच कऽ?"

अबोध बच्चा कनैत बाजल-

"माए गइ माए मेला देखैले जेबै बलबा परतीपर मेला।"

माए तामसे अघोड़ रहबे करै फेर बाजलि-

"बाज सौतीन बाज कथीक मेला।"

माए, गइ माए, मेला देखैले जेबइ मेला 'किसना मुट्ठीक मेला।'



शब्द संख्या : 289

बुढ़िया फुसि

किछु कहैत संकोच नहि, लाजो नै होइत अछि जेना निर्लज्ज भऽ गेल छी। आँखिक पानि जेना सुखि पड़ल हो। एहेन बुझना जाइत अछि जेना द्वापरेसँ अर्थात 63 जनम पहिने सँ फुसिक खेती करैत आबि रहल छी, निश्तुकी बाप-पुरखा सेहो एहेने सिद्धस्त खेतिहर हेता। मुदा उपजा तइ समैमे कम होइ छल, आ आइ बुझू जे बोड़े कट्ठा फुसि सभठाम उपजि रहल अछि। आ सभ दिन सभठाम फुसिए फुसि बाजि रहल हो। यर्थातोमे 26 जनवरी हो या 15 अगस्त, एहनो राष्ट्रीय पावैनक सुअवसरोपर फुसि बाजब हमरा लोकैन अपन जनम-सिद्ध अधिकार बुझै छी। सरकारी वा कोनो गैर सरकारी कार्यालय किएक ने हो, राष्ट्रक सम्मानक अढ़मे अपमान करब हमरा लोकैन नै बिसैर पबै छी। सिया लइ छी बेस नमहर-चारि मीटर खादीक एकटा डलगर कुर्त्ता, एक गोट पैजामा आ एकटा गाँधी टोपी। आध सेर सुतरी दू जिस्ता सभ रंगक कागत आ कागतेक बनल प्लेट। उज्जर आ ईंटा रंगक बुकनी, पुरने झंडाकेँ साफ-सुथरा कऽ किछु फूल लऽ सए-पचास झूठाक समक्ष झंडोत्वलन पछाइत छोड़ए लगै छी, फुसिक गपौड़ी। अनेरे बेर्थ- किएक तँ आत्मासँ एहेन कोनो गप नै जे स्वीकार करैत हो, मुदा अनेरे ठोर पटपटा-पटपटा अपनाकेँ सूच्चा देश भक्त, कर्मठ, सुयोग्य, इमानदार पदाधिकारी वा कर्मचारी सावित करए लगै छी- फुसिक बखारी खोलि दइ छी। एकसँ

बढ़ि कऽ एक फुसि बजै छी झुट्ठा सभ थोपड़ी बजबैत अछि। ऊहो थपड़ी पाड़ए लगैत अछि।

फुसिए चन्द्रशेखर आजाद, गाँधी, नेहरू, भगत सिंह, उधम सिंह, सुभाष आदिक नाओं लऽ बच्चा सभकेँ फूसलाबए चाहै छी। फुसिए राष्ट्रक विकासक लेल छिट्टाक-छिट्टा सप्पत किरिया खाइ छी। किरिया खाइत-खाइत ने तँ पेट भरैत अछि आ ने मुँह दुखाइत अछि। एकरो एकटा कारण अछि जे हमरा लोकैन पुश्तैनी झुट्ठा छी। सालमे तीन-चारिटा एहेन पावैन तँ जरूर अबैत अछि जे भरि मन फुसि बजै छी से कोनो की चोरा कऽ नै यौ चिकैर-चिकैर फुसि बजै छी। आ फुसियाही सभ सुनैत रहैत अछि।

मुदा जखन सेबै-बुनियाँ रूपी प्रसादक तलक लगैत अछि तखने फुसिक सप्पत खा विराम लैत अछि। तत्पश्चात बुनियाँ-भुजिया खा तृप्तिक ढेकार लऽ उगरलाहा बुनियाँ-भुजिया रूमालमे बान्हि अपन-अपन जनम स्थानपर अबै छी।

कहूँ जे एहेन तरहक जे बेर्थ बातक सम्भाषण करब कहाँ तक उचित? राष्ट्रकेँ ठकब कि अपने ठकाएब नै छी। कि फुसि बाजि अपने आपकेँ नै परताइर रहल छी? राष्ट्र ध्वजक समक्ष लेल यएह सभटा सप्पत साँच अछि आकि बुढ़िया फुसि? सत्ते- ई छी बुढ़िया फुसि।

◌

शब्द संख्या : 373

डाक्टर कर्मवीर

मन पड़ैत अछि 6 जून 2003। जहि दिन तय ई छल जे भारतक प्रधानमंत्री मिथिलांचलक घरती निरमली (जे सभ तरहें, सभ दृष्टिकोणसँ सभ मामलामे किछु बेसीए पिछड़ल अछि) औता। आ कोशीमे बनऽ बला रेल पुलक शिलान्यास करता।

जेठक दुपहरिया, सभठाम लोक सभ गर्मी-गुमाड़सँ अफसियात, सबहक देह धामे-पसीने तर-बतर मुदा सभ कियो मंत्रीजीकेँ देखबाक लेल ओतबे हरो-हरान, ओतबे फिरिशान। एहेन बुझना जाइ छल जे खेत-पथाड़, बाध-बोनसँ आग उठि रहल अछि, सड़कपर धुरा-विड़ोक रूप लैत, सन-सन सन-सन हवा आ लू चलैत। तखनो ओइ दिन परोपट्टाक लोक सबहक उजाहि उठल, सगर बाजार, बाजारक चारूकातक, जे पूर्णरुपेण अतिक्रमित छल, प्रशासनक चुस्ती-दुरुस्तीसँ एकदम साफ-सुथड़ा। एना, जेना ऐना झक-झक करैत।

खूब प्रचार-प्रसार भेल, जगह-जगह पर्चा-पोस्टर साटल गेल, उदेस अधिकसँ अधिक लोक आबि मंत्रीजीक भाषणसँ लाभ उठाबैथ। ओइ दिनक रौदो एहेन बुझना जाइ छल जेना छाहैरो रौद आ गर्मीसँ फिरिशान भऽ केतौ छाहैर ताकि रहल अछि।

किछुए काल पछाइत एहेन बुझना गेल जे चारूकातक वाट कौलेजेक फिल्ड दिस मुड़ि गेल हो जैठाम मंत्रीजीक प्रोग्राम तय छल।

जेम्हरे ताकू मुड़ीए-मुड़ी, कपारे-कपार, लोकहिपर लोक, लोकक मुड़ी छोड़ि आर किछु नहि। सभ एक दोसराकेँ धकियबैत, आगू बढ़बाक अथक प्रयास करैत, किछु सफलो भेला, आ असफल बेसी। साँझ पड़ैत-पड़ैत लोकक लेल गदमिशान उठऽ लगल। जे जेतै रहैथ से ओतै रहि गेला। एको मिशिया-आगू या पाछु हेबाक साहस नै कऽ सकला। एतबेमे सबहक आँखि अकाशमे हहाइत किदुनपर पड़लै। किदुन तँ बढ़-बढ़िया नाओं छै ओकर। किदुन तँ कहै छै हँ-हँ मन पड़ल हेली-कोप्टर। सभसँ पहिने उतरला सेनाक जवान पछाइत ओकर प्रधान मंत्रीजी, जोर-जोरसँ हल्ला होमय लगल-

"इन्कलाव जिन्दावाद!"

"जिन्दावाद-जिन्दावाद।"

"आज का नेता कैसा हो?"

... जैसा हो।"

तत्पश्चात शुरु भेल भाषण-भूषणक कार्यक्रम सभ कियो कान पोति सुनऽ लगला- बीच-बीचमे फेरि वएह नारावाजी। इन्कलाव-जिन्दावाद। जिन्दावाद-जिन्दावाद।। ऐ तरहेँ ऐ सबहक मध्य भाषणक कर्यक्रम समाप्त भेल। सभ अपन-अपन घरक बाट धेलैन। हुनके सबहक संग हमहूँ अपन वासापर एलौं। हाथ-पैर धोइत जाकि खुरसीपर बैसलौं देखै छी एकटा बेकती हमर अता-पता पुछैत अबैत छैथ आ अपन परिचए ऐ तरहेँ दैत छैथ- श्रीमान् सम्भवतः अपने हमरा नै चिन्ह सकलौं! हम कनी अकचकाइत पुछलयैन, से की? अपने पहिने बैसल तँ जाउ, सामने राखल ब्रेन्चपर बैसते ओ बजला-

"हम छी कर्मवीर।"

एतबे सुनिते करेज सूप-सन चाकर भऽ गेल। हृदए आनन्दातिरेकसँ झुमि उठल। नै जानि किएक आँखिसँ दू ठोप नोर खसि पड़ल। ओ बजला-

"श्रीमान् अपने कनैत किएक छी?

हम कहलयैन-

"तो नै बुझबहक। तोरा देखते हम अपने आपकेँ नै रोकि सकलौं, आ ई नोर तँ खुशीक अछि। आई एहेन सौभाग्य जे पाहुन बनि ऐठाम एलह, अहो भाग्य हमर। ओ तँ अबाक। किछु नै बजला, बजला किछु कालक पश्चात जे-

"श्रीमान् हमरा चरिबजिया गाड़ी छुटि गेल। हम आइ अपने ऐठाम रहब आ भोजनो करब। सुनिते हर्ष भेल जे कर्मवीर कमे उमेर मे एतेक स्पष्टवादी, सभ किछु खोंइलचा छोड़ा कऽ बजनिहार, जे चाहे अहाँकेँ कष्ट हुअए वा खुशी।

कनेक काल पछाइत हमरा लोकैन चाह-पान करऽ लेल चौक दिस बिदा भेलौं। गामक चौक। बड़कीटा पाखरीक गाछ चारूकात चबुतरासँ घेरल। गामक अधिकांश लोक चाह-पान पीबाक लेल साँझ-परात ओते आबैथ। बगलमे छल फुसियाही दूसाधक धान-गहुम पीसऽ बला मीशील, आ घोघना मियांक कोटाक दोकान। सटले छल मुनेसराक कनीयेँटा नोन-तेलक दोकान। आ बगलेमे छल रामा मुखियाक मुरही, कचड़ी, मटर, घुघनी आ इचना माछक चखना बला एकचारी देल दोकान। दसे डेग हटि कऽ छल अगहनियाँ पसीनीयाँक ताड़ीक दोकान, जैठाम दर्जनो घैल ताड़ीसँ भरल, पूब मुहेँ राखल आ घैलसँ बहरा रहल छल जे बुलबुला, बुलबुला-बुलबुलाकेँ ससैर घैलक पेन तरमे राखल बीरबापर खसैत छल। किछु पीयाकक आगूमे राखल छेलै दू बेचाही ताड़ी, मुरही, कचड़ी आ इचना माछक चखना। लोक सभ ताड़ी पीब झुमय, मने मस्त छेलै सबहक आ समवेग स्वरमे गबैत छल ई गीत-

"ताड़ीवाली ताड़ी पी आ दऽ... ताड़ बला ताड़ी दऽ खजूर बला कम... ताड़ीवाली ताड़ी पिआ दऽ। दृश्ये छल लाजवाब!

सभ किछु देखैत हमरा लोकैन पहुँचलौं ठको कक्काक चाहक दोकानपर। एकेटा चाहक दोकान आ ढ़ेर रास लोक चाह पीबिनिहार।

पाखरीक गाछक चबुतरापर बैसेत हम हाक देल- –

"ठको काका दू कप चाह हमरो सभकेँ दिहह.. करीब दस मिनटक बाद ठको काका डंटी विहीन कप, जे कोरोपर कनी फुटले छेलै नेने आएल चाह। एह चाह तँ चाह छल! महींसक दूधक अगब चाह, एको ठोप पानिक छुति नहि, मीठगरो तेतबे, ठोरमे ठोर सटऽ बला चाह। अर्थात् चाहक चाह।

चाह पीब कैंचा दऽ हमरा लोकैन बढ़लौं बौआ कक्काक पान दोकान दिस। लग पहुँचैत कहलयैन-

"गोड़ लगै छी काका कनी दू सीक्की पान देब"।

कठघारामे बैसल बौआ काका पुछलैन-

"हौउ नीके छह किने? बहुत दिनक बाद देखलियह, कहह कोना की हालचाल छह अरविन्दक आ घौलुक?"

पुछैत पान लगबए लगला।

"हँ काका सभ अहाँ सबहक असीरवाद छी। सभ कियो नीके - सुखे छी।"

बौआ काका पान लगा आगा बढ़ौलैन। हमरा लोकैन पानक आनन्द लेबए लगलौं। पानो तेतबे सुअदगर। किएक तँ शुद्ध देशी पान छल। तहूमे बेरमा बरैबक। एक तँ मिथिला दोसर मैथिल ऊपरसँ बेरमा बरैबक पान, बौआ कक्काक लगौल। अपूर्व!

गप-सप्पक क्रमे लोक सभसँ भेँट भेल, कुशल- छेम सभ एक-दोसराक हाल चाल पुछैत सभसँ कर्मवीरक परिचए करौलयैन। नै जानि जे हिनकामे कोन एहेन गुण छेलै जे जिनकेसँ परिचए करबयैन सभ हुनकासँ प्रभावित भऽ जाइथ। अकाइन नै सकलौं जे कर्मवीरक मनमे कोन कल्पना जन्म लऽ रहल छेलइ। ओ तँ जेकरा हम कल्पना मात्र बुझै छेलौं से तँ साकार करक प्रवल सम्भावना लैत राति खेबाक काल बजला...।

दुनू गोटाक आगूमे दूटा थारी राखल छल, जइमे कनीयेँटा कटोरी, आ कटोरीमे घीड़ाक तीमन खेड़हीक दालि देल, दू फॉक पियाजु आ नान्हियेटा टुकड़ी छल अचाड़क, आर छल काँच मेरचाई एक-एक प्रति, प्रति थाड़ीमे। लोटा आ गिलास जलसँ भरल छल, आ दुनू गोरे बैसल रही खेबाक लेल, तेतबेमे अरविन्द आ घोलू दुनू बौआ टीशन पढ़ि कऽ आएल। कर्मवीरजीकेँ गोड़ लागि असीरवाद लऽ अपन-अपन छिपलीमे रोटी लऽ खैए लगला।

भोजनक क्रमे किछु काल धरि गुम्म-सुम्म रहला पछाइत कर्मवीरजी बजला-

> "श्रीमान् मन होइत अछि जे जँ अपने आदेश दी तँ हमहूँ एकटा क्लीनिक खोलि प्रैक्टिस करितौं। सुनि मन हर्ष भेल जे हिनकामे किछु करबाक उत्साह छैन। आ गामक प्रति एतेक सिनेह जे केतौ आन ठाम नै जा कए गाममे सेवा करता। नै तँ प्रायः परदेश खटऽ बलाक तँ उजाहि उठल छइ। एहेन सन बुझना जाइत जे सभ सुख परदेशेमे छै! मुदा ई तँ हमरा लोकैनक धोखा छी धोखा! हम कहए चाहै छी जे जँ देहमे खुन अछि तँ गामोमे कियो भुखे नै रहता। एक तँ साधारणो मजुरी 80 टाकासँ 150 टाका धरि अछि, तहूपर जन-मजदूरक अभावे। दस दिन खुशामद करियौ तखन एक दिन आबि काज कए देत। ओतबे नै माए-बाप, भाय-भौजाइ, पर-परिवार बाल-बच्चाक संग रहबाक

> सुख केतए पएब गामेमे ने? आकि परदेशमे? उत्तर एकेटा भेटत- गामेमे, तखन अहीं सभ कहूँ जे परदेश खटबै कथी लेल? की ऐ लेल जे अबै काल सनेशमे एड्स लेने आएब।

हम तँ सप्पत दऽ कहह चाहै छी, जे गामक माटि-पानि आ थाल-कादोमे सभ सुख अछि। कोनो गामसँ चिक्कन अप्पन गाम, आ कोनो धामसँ चिक्कन मिथिलाधाम। अहूँ सभ अप्पन-अप्पन करेजपर हाथ राखि कहू जे हम फुसि कहै छी? आब प्रश्न ई उठैत अछि जे जखन सभ कियो परदेशे खटबै तखन गामक विकाश हेते कोना? मुदा कर्मवीरजीमे हमरा भेटल जे ओ गामेमे रहि गामक आ समाजक विकाश करबाक भावना हुनका हृदैमे हिलकोर मारि रहल छल। मन गद-गद भऽ उठल। आर किछु काल गप-सप्प करैत हमरा लोकैन सुति रहलौ। प्रातः किछु गोटा (मेडिकल लाईनसँ जुड़ल) सँ भेँट करौलयैन, तत्पश्चात एकटा नीक दिन तका हिनक क्लिनिकक उद्घाटन सम्पन भेल।

जीवनक दोसर रूप संधर्ष होयत छइ। मुदा तइसँ कर्मवीरजी धबरेला नै बल्कि जीवनक लेल संधर्ष करए लगला। से तइ तरहें जे काल्हुक कारी झामड़ सूखल-साखल देह, पिचकल-पुचकल गाल, धसल-धसल आँखि पेट पाँजरमे सटल खपटासन, कोनो पहिरलहे पेन्ट आ बुशर्ट पहिर पुराने-धुराने जूता आ चप्पलसँ समए खैपऽ बला, जीवनकेँ एतेक लगसँ देखऽ बला कर्मवीर, हमरा आइओ हुनक ई बात मन पड़ैत अछि जे ओ पुछने रहैथ-

“श्रीमान् की अपने कहियो राति भरि भुखले सूतल छी? माथमे नै घुसल ई बात जे हुनक प्रश्नक भाव की छैन? मुदा सत बात तँ ई छल जे ओ काल्हुक राति उपासे रहला, भुखले सुति रहला। भरि राति धरि निन्न नै भेलैन, कोनो तरहे कछमछा कें राति बितौलैन। प्रातः भेँट भेलापर हुनक धसल आँखि आ भुखल पेट हमरा किछु पुछि रहल छल। मुदा हम छेलौं निःशब्द।

काल क्रमे समैक संग मेहनत रंग देखौलक। रोगी सभ आबए लगलैन, भगवती जस लगबैत गेलखिन। गुजर-बसर करए लगला तँ पत्नियोकेँ लए अनलैन आ आनन्दसँ रहए लगला। भोला बाबाक कृपासँ दिन दूना आ राति चौगुना आमदनी होमय लगलैन। आइ ओ दस धूर जमीन लए घर बना बाल-बच्चाक संग हँसी-खुशीसँ छैथ। एकटा सफल बेकतीक रूपमे आ सफल डाक्टरक रूपमे। डाक्टर कर्मवीर।

कहियो कताल हमरो हुनका घरपर जेबाक मौका लगैत अछि। एक डिब्बा बटर-बेक बिस्कुटक संग। डाक्टर साहैबक दुनू बच्चा निछोह दौड़ल अबैत अछि ऐ अवाजक संग मम्मी-मम्मी अंकलजी आए-अंकलजी आए। तात घरसँ बहार होइ छैथ डाक्टर साहैबक पत्नी-पुनम, जेहने नाओं-तेहने पुनमक चाँन सन मुँह। आँखि चोन्हिआ जाइत अछि। बेस पाँच हाथ ऊँच! देहो दशा खूब भरल-पूरल। कनेक श्याम रंग, कलकत्तिया आमक फारा सन-सन आँखि, बादामी नाक, औंठिया केश कारी भौर, दुनू कात जुट्टी गुहल आ तइ जुट्टीकेँ धुमा कऽ खोपा बन्हने, कसल-कसल वाँहि, आ पाकल तिलकोरक फड़ सन दुनू ठोर। जतवे देखऽ मे सुन्दर, तेतबे मीठ-मीठ बोल। नमहर-नमहर हाथ आ दुनू हाथमे रहैन भरि-भरि हाथ चुड़ी। हाथक आँगुरमे बेस कीमती पाथड़क औंठी। सुगा पंखी रंगक ब्लाउज आ साड़ी पहिरने, माथपर साड़ी लैत, आँचर सम्हारि दुनू हाथ जोड़ि, पएर छुबि गोड़ लगैत छैथ। सौभाग्यवती भवः असीरवाद दैत आँखि नोड़ा जाइत अछि। मन पड़ैत छैथ डाक्टर कर्मवीर छह फीट छह इन्ची ऊँच, भरल-पूरल देह, मोती जकाँ झलकैत दाँत, क्लीन सेभ, कनेक बहराएल पेट आ हँसैत ई अभिवादन-

"प्रणाम श्रीमान् कुशल छी किने? अन्तर स्पष्ट भए जाइत अछि कौल्हुका कर्मवीर- आजुक डाक्टर कर्मवीर।



शब्द संख्या : 1534

जेहने करनी तेहने भरनी

लक्ष्मीपुरमे एकटा ब्रह्मचारी बाबा रहै छला। बड़-बढ़ियाँ स्थान छेलइ। साँझ-भिनसर कीर्तन-भजन होइते रहै छेलइ। नाओं छेलैन बाबा लक्ष्मी दास। शास्त्रक संग अध्यात्म सेहो बढ़ियाँ ज्ञानी छला। शास्त्रसँ जुड़ल रहने साँझ-भोर योग-धियानमे मगन भऽ परमपिता परमात्मा सेहो गीता सारक मोताबिक मनमना भव: आ मध्याजी भव: केर मंत्रक सफल प्रयोगसँ अति इन्द्रिय सुखक भेट जेबाक कारणे लौकिक सुख काग विष्ठाक समान बुझना जाइ छेलैन। तँए ओ पूर्ण नष्टोमुहाँ भऽ गेल रहैथ। स्थानपर अपने आ एकटा चेला- मुरती दासकेँ रखने छला। दिन भरि सर-सेवकानसँ जे किछु अन्न-पानि अबै छेलैन तइसँ परमात्मा लेल पूर्ण पवित्रताक संग भोग बना, लगा पछाइत बाबा आ चेला पबै छेलैथ। एक दिनक कथा छी बाबा आ चेला दुनू चलला सेवकान दिस। जेठ मास रहने रौद लगि गेलैन तँए एकटा नमहर पाखरी गाछ तर बैस दुनू गोरे सुसतए लगला। कनीए कालक पछाइत बाबाकेँ मैदान दिस जाइक शंका बुझेलैन। बाबा चेलाकेँ कहलखिन-

> “रे चेला, देख तँ बगलमे नदी बहि रहल अछि से तूँ कनी जा एक कमण्डल जल ला से कनी हम दिसा जाएब।”

चेला मुरती दास कमण्डल उठा जल भरैले नदी दिस बिदा भेल। नदी कातमे गेबे तँ कएल आकि देखलक जे एकटा मुर्दा नदीमे भाँसि

रहल छइ। जेकर आँखि निकलि कखनो अकास दिस चलि जाइ छै आ फेर आबि कऽ लगि जाइ छइ। कखनो हाथ छुटि अकास दिस चलि जाइ छै आ फेर आबि जुटि जाइ छइ। कखनो एकटा टाँग अकास दिस चल जाइ छै आ पुन: आबि सेट भऽ जाइ छइ। आब तँ मुरती दासकेँ किछु फुरबे ने करै, ओ जल की भरत कपार..!

डरे कमण्डल लऽ पड़ाएल बाबा लग। जा कऽ बाबाकेँ सभ खेरहा सुनौलक-

> "बाबा, आखिर ई की बात छिऐ से पहिने कहह तखन तँ तूँ हमर बाबा आ हम तोहर चेला। नै तँ तहूँ घर हमहूँ घर।"

बाबा ने तँ कहैले तैयार आ ने चेला मानैले तैयार। अन्तमे बाबाकेँ सभटा खेरहा कहए पड़लैन-

"सुन रे चेला मुरती, जँ नै मानमेँ तँ सुन कहै छियौ। तूँ जे आइ नदीमे देखलीही ओ मुर्दा पूर्व जनममे एकटा बड़ पैघ महात्मा छल। मुदा एक दिनक कथा छिऐ, जे ओ एकटा सेवकान ऐठाम गेल। बड़-बढ़ियाँ सेवक जे जुड़लै से आदर-भाव, सुआगत-बात केलक। भोरका पहर भोरे-भोरे महींस चरबैले बाध चलि गेल। सोचलक जे जाबे प्रात हेतै आ बाबा जगता ताबत हम महींस चरा चलि आएब। से रौ चेला, ओ सेवक महींस चरबैले चलि गेलै मुदा ओइ सेवकक एकटा जुआन बेटी छेलै, देखै-सुनैमे इन्द्रक परी। भोरुका समए। लड़की निकास-बातक लेल निकलल। आकि बाबाक नजैर ओकरा पड़लै। सोचलक जे सेवक तँ घरपर अछि नहि, बच्चिया असगरे छइ। बाबा अपन कामदेव महराज बनि सोलहो कलाक संग रावणक रूप लऽ लेलक। बाबा तँ कामसँ आन्हर भऽ गेल। पछाइत ओइ बच्चियाक संग बाबा अपन मुँह कारी केलक। मुदा ई बात कियो नै बुझए तइ खातिर बाबा ओतएसँ अन्हरगरे बिदा भऽ गेल। रस्तामे सेवक महींस चरा अबैत रहइ। बाबाकेँ देखलक देखते सोचलक जे ई तँ अनर्थ भऽ गेल, बाबा तँ तामसे भागल जा रहल छैथ। से कहीं

सरापि ने दथि। सेवक धड़फड़ा कऽ बाबाक पएरपर खसि पड़ल। आ माफीपर माफी मांगए लगल। बाबा माफ करि देल जाउ गलती भऽ गेल आब एहेन गलती हमरासँ ऐ जनममे नै भऽ सकैए। मुदा बाबा अपनाकेँ बँचबैत बाजल-

‘तूँ जे गलती केलँह से केलँह मुदा तोहर जे बच्चिया छौ से हमरा संग अभद्र बेवहार केलकौ तँए हम आब घुमि कऽ तोरा घर जा नै सकै छियौ। शर्त एकटा छौ जँ तूँ काठक सन्दूक बना जीवितेमे ओइ बच्चियाकेँ ओइमे रखि धारमे भँसिया देबही तँ हम घुमि कऽ तोरा घर जा सकै छियौ। सेवक तँ लाजे माटिमे गड़ि गेल जे हमर बेटी केहेन कुलकलंकनी अछि। ओ शर्त गछि लेलक। बाबा संग घुमि कऽ घर आएल। घरपर आबि कमराकेँ बजा सन्दूक बना ओइमे अपन बेटीकेँ बन्न कऽ धारमे भँसिया देलक। आब तँ बाबाक मनक मुराद पूरा भऽ गेल। सोचलक, से नै तँ ई सन्दूक भँसियाइत अपना स्थान दिस जेबे करत तँए जल्दीसँ जल्दी एतएसँ चली।

औगताइत सेवककेँ कहलक जे से नै तँ आब जे किछु खुएबह से खुआबए हम चलबह। धड़फड़ेमे असिद्ध भोजन, दही-चूड़ा-चीनीक इंजाम भेल। बाबा भरि पोख खा अपना कुटी दिस लफरल बिदा भेल। स्थानपर आबि चेला सभकेँ कहलक जे धारमे एकटा सन्दूक भँसियाइत अबै छौ ओइमे भगवती छथिन से जा कऽ नेने आबह, रातिमे हमरा वरदान देथिन। चेला सभ सन्दूकक भाँज लगबए लगल। ओमहर ओ सन्दूक जे भँसल अबै छल तैपर एकटा राजाक बेटाक नजैर पड़लै जे जंगलसँ शिकार कऽ एकटा बाघकेँ जालमे बझा नेने अबै छल। ओ अपना सैनाकेँ आदेश देलक जे ओइ सन्दूककेँ ऊप्प करू। सन्दूक ऊपर कएल गेल। खोललापर देखलक जे ऐमे तँ इन्द्रक परी सन एकटा लड़की अछि। ओकरा सन्दूकसँ निकालि अपना संग केलक। आ बाघकेँ ओइ सन्दूकमे बन्न कऽ जालकेँ काटि धारमे भँसा देलक। एमहर नदीमे

भँसियाएल सन्दूकेँ अबैत बाबा संग चेला सभ खुश। लगमे एलापर सभ कियो मिलि सन्दूककेँ ऊपर केलक। आ लऽ कऽ कुटीमे रखि आएल।

बाबाक मन सन्दूक देख चपचप आ लपलप करनि। खने कुटीसँ बाहर अबैथ आ खने भीतर। चेला सभकेँ कहलखिन, तों सभ एकटा बात धियानसँ सुनह जे भगवती आइ रातिमे वरदान देथिन। से अधोरात्रीमे। तखन हम जे कोनो तरहक अवाज निकाली, कानी-खीजी आकि हल्ला करी तँ से तूँ सभ नै अबिहह नै तँ हमर जीवन भरिक तपस्या निसफल भऽ जाएत।

...सबेरे सकाल भनडाराक आयोजन भेल। बाबाक संग सभ चेला पौलक। आ अपन-अपनपर विश्राम करए गेल। बाबा तँ इमहर ताकेमे रहैथ। निशोडण्ड राति बाबा कुटीमे प्रवेश केलैन। केबाड़-खिड़कीमे बिलैया भरि जा कि सन्दूक खोललैन आकि बघबा तँ...। एक तँ भरि दिनक भूखल रहबे करए, बाबापर झपटल। बाबाकेँ पकैड़ गरदैन मचोरि, सीना फाड़ि अँतरी-भोंतरी निकालि भरि मन खून पीब, भरि इच्छा मासु खा पड़ाएल जंगल दिस।

...परात भेलापर चेला सभ देखलक, जे बाबा तँ भगवतीक वरदान भरि इच्छा पौलैन। बाबाक अधखरू लहास उठा ओही नदीमे फेक देलक। से रइ चेला मुरती, तूँ जे देखलेँ ओइ नदीमे भँसैत लहासकेँ से चेला ओही बाबाक किरदानीक उदाहरण छिऐ। से बुझलीही। चेला मुरती बाजल, बाबा हौ बाबा! तोरा मानि लेलियऽ हौ जे तूँ सुच्चा बाबा छहक आ हम तोहर चेला। बाबा लक्ष्मी दास कहलखिन, चेला! आबो चल, कहबी छै जेहने करनी तेहने भरनी।”



शब्द संख्या : 982

सभ किछ निअमसँ करू

भखरौली गाममे दू भाँइ जेकर नाओं सुरैत आ मुरैत। दुनू भाँइ भक्ति-भाव, सेवा-वन्दीमे नीक जकाँति लगल रहै छल। जखने कोनो गुरु-गोसाँइ अबैथ तँ दुनू भाँइ खूब मनसँ सेवा भाव करए। सेवामे केतौ केनो कमी नै रहि जाइ, एकर खियाल हरिदम रखै छल। दुनू भाँइमे मेलो-मिलान खूब रहै छल। मुदा एकटा गप एकदम भिन्न छेलै जे दुनू भाँइक गुरु-गोसाँइ माने सरकार अलग-अलग रहथिन। एक दिनक गप छी जेठ महिना छल, कराचूर गरमी, असमानसँ बुझू आगि बरिस रहल छल। जेठका भाय सुरैतक सरकार एलखिन। बाले-बच्चे मिलि सरकारक वन्दगी-भावमे लगि गेल। मुदा सरकार देखलैन जे मुरैत सेहो सेवा-भावमे लगल अछि। जखन कि ओकर सरकार अलग छइ। मुरैत तँ ओइ सरकारक सेवकान नहि। तँए सरकार बिगड़ैत कहलखिन-

> "सुरैत! सुनू! एना धड़फड़-धड़फड़ जुनि करू। अरे जे किछु करबाक हुअए से निअमसँ करू। सभसँ पहिने असलानी चौकी लाउ।"

सुरैत झट दऽ असलानी चौकी अनलक। तब फेर सरकार बजला-

> "दोकानसँ एकटा लबका साबुन लाउ।"

सुरैत लपैक कऽ दोकानसँ एकटा साबुन अनलक। पछाइत सरकार बजला-

"पहिने दस बाल्टीन जल इनारपर भरू।"

जल भरल गेल। सरकार दसो बाल्टीन पानिसँ भरि मन स्नान केलैन। पछाइत गम्छासँ रगैड़-रगैड़ देह-हाथ पोछि आसन जमौलैन। पछाइत चरण खटियौल गेल। धूप-आरती भेल। सरकार बजला-

"से नै तँ आब दू लोटा शर्बत झब दऽ बनाउ। किएक तँ सभ काज निअमसँ करू।"

बनौल गेल। सरकार आ अगुआ साहैब दुनू गोरे गटाक-गटाक भरि पोख शर्बत पीलैन।

एमहर मुरैत अपना आँगनमे बैस एकटा काँपीपर ई सभटा निअम लिखि रहल अछि जे कोनो काज करी तँ निअमसँ करी। तेकर बाद दू घन्टा भजन-भाव भेल। पछाइत पंगहैतक आग्रह भेल। पंगहैतमे प्रयाप्त दही, चूड़ा, चिन्नी आ केराक बेवस्था मुरैत केने छल। बेस नीके नहाँति सभ किछु पौलैन।

पछाइत सरकार आराममे गेला। परात भने डोलडालसँ एला पछाइत दू घन्टा धरि भजन चलल। फेर आरो-आरो संत-महात्मा रूपी बाबा सभ भनडारा पौलैन।

आ करीब चारि बजे उचित बर-विदाइ दऽ सुरैत सरकारकेँ बिदा कऽ अपन गामक सिमान टपा बेरमा दिस दऽ आपस भेला। किछुए दिनक बाद माघ मासक जड़कला समैमे मुरैतक सरकार एलखिन। सौंझका पहर। माघ मास। जाड़े सबहक हाड़ कपैत। सरकारकेँ वस्त्रोक अभावे। जाड़े थर-थर कँपैत रहैन। अबिते सरकार आदेश फेकलखिन-

"मुरैत, तहन सभसँ पहिने धुनी रमौल जाए।"

मुरैत बाजल-

"हँ हँ सरकार। तखन जे किछ सेवा करब। से निअमसँ करब। निअम नै तोड़ल जाए।"

मुरैत अपना बचबा भगैतकेँ हाक दैत कहलक-

"सभसँ पहिने असलानी चौकी लाबह।"

चौकी आनि इनारपर राखल गेल आ दस बाल्टीन जल सेहो भरल गेल। दोकानसँ मुरैत अपने लबका साबुन लबलक। लाबि कऽ सरकारकेँ कहलक-

"तखन सरकार चलू असलान कऽ लेल जाउ। किएक तँ सभ किछु निअमसँ हेबक चाही।"

एमहर सरकार कहथिन-

"हौ मुरैत, जाड़ होइए हौ। आगिक बेवस्था करह। धुनी रमौल जाए।"

मुरैत बाजए-

"नै सरकार, सेवा एना नै होइ छइ। सेवा हमरा निअमसँ करऽ दिअ।"

एहमर सरकार जाड़े थरथराइ। देह कँपकँपाइत। ओहमर मुरैत ऊपरसँ बाल्टीनक बाल्टीन जल सरकारक देहपर ढारि रहल अछि। सरकार कहथिन-

"हौ मुरैत, हौ भेलै हौ। छोड़ह ई सभ। हौ भाभट समटऽ।"

मुरैत बाजए-

"नै सरकार, हमरा सेवा निअमसँ करऽ दिअ। सेवा आ वन्दगी-भाव निअमसँ हेबक चाही।"

सरकार जाड़े थरथरा रहल छैथ। चिचिआ-चिचिआ कहि रहल छैथ। मुदा मुरैत रगैड़-रगैड़ सरकारक मोलि छोड़बैत बाल्टीनक-बाल्टीन पानि ढारि असलान करा रहल अछि।

सरकार बाजैथ-

"हौ मुरैत, हौ भेलै हौ आबो छोड़ह।"

मुदा मुरैत सरकारक सेवा वन्दगी-भाव निअमसँ कऽ रहल अछि। पछाइत सरकारकेँ आसनीपर आनि भगैतकेँ झब दऽ दू लोटा शर्बत अनलक। सरकारकेँ नै नै करितो लाचारीमे दुनू लोटा शर्बत पीबए पड़लैन। सरकारक तँ जान बुझू अवगरहमे। तूरत पंगहैतक इंजान कएल गेल। एक तँ माघ मास तैपर सँ दही-चूड़ा चिन्नीक इन्तजाम। सरकार पंगहैतक लेल बजौल गेला। आसन लगा मुरैत सरकारकेँ मुट्ठी एक चूड़ा आ छाँछियो भरि दही चूड़ापर उझैल आसेर चिन्नी खसौलक। सरकार जे दहीपर हाथ फेरलैन तँ जाड़े छिहुल उठला। एक तँ माघ मास, दसो बाल्टीन पानिसँ असलान तैपर सँ दू लोटा शर्बत आ तैपर सँ चही-चूड़ा-चिन्नीक पंगहैत। आह! सरकारक तँ हालते खराप। सरकारकेँ जैयो ने खा होनि तैयो आग्रह करि करि भोजन करबैन।

अन्ततः खाइते-खाइते सरकार ओतै टगि गेला। सभ उठा-पुठा सरकारकेँ आसनीपर आनलक। मुदा सरकार तँ ताबे प्रकृतिक निअमानुसार संसार छोड़ि चूकल छला। एमहर मुरैत सेहो निअम तोड़ैले तैयार नै किएक तँ ओकरा माथामे एक्केटा बात घुमै छेलै जे वन्दगी-भाव जे किछु करू से सभ किछु निअमसँ करू। कहू तँ केतेक उचित?

◌

शब्द संख्या : 695

छुतहर

सिमराक शिवनन्दन बाबूक दोसर बालक राजाबाबू, नाओंक अनुरूप राजकुमारे सन लगै छल। बेस पाँच हाथ नमहर, गोर-नार, भरल-पूरल देह, पहिरन-ओढ़न सेहो राजकुमारे सन। विधाताक कृपासँ हुनक पत्नी देखए-सुनएमे सुन्दरि। मध्यम वर्गीए परिवारमे जनम। नैहर सेहो भरल- पूरल। राजाबाबूक बिआह नीक घरमे भेल। कोनो तरहक कमी नहि। जेते जे बरियाती गेल रहैथ, सभ कियो खान-पानसँ प्रसन्न रहैथ। बड़-बढ़ियाँ घर-परिवार छल।

राजाबाबू बिआहक पछाइतो अध्ययन जारीए रखलैन। नीक-नहाँति पढ़ैले पटनामे नाओं लिखा डेरा रखलैन। छुट्टी भेलापर गामो चलि अबै छला। गाड़ी-सवारी भेने गाम आबए-जाएब कठीन नै छल। अहीक्रममे राजाबाबूकेँ पहिल सन्तानक रूपमे एकटा बालक- अनील आ एकटा कन्या सुधाक जनम भेल। माए-बापक अनुरूप दुनू बच्चो तेतबए सुन्दर छल। क्रमश: दुनू बच्चाक टेल्हुक भेलापर ज्ञानोदय झंझारपुरमे नाओं लिखा देलखिन। बच्चा सभ ओतै रहि पढ़ए-लिखए लगल।

एमहर पटनामे रहैत राजाबाबूक संगैत खराप हुअ लगलैन। जइसँ ओ दोस्ती-यारीमे पीबए लगला। एक दिनक गप छी, गाम एलाक बाद अधरतियामे जोरसँ हल्ला भेल जे राजाबाबू पेटक दर्दे चिचिया रहल छैथ। रातिक मौसम देख गामक डाक्टर बजौल गेला। सुइया-दवाइ दऽ आगू बढ़ैक सलाह देलखिन। बिमारी उपकले रहैन। पत्नी विशेष जतनसँ

पथ-परहेजसँ राखि दुइए मासमे दुखकेँ कन्ट्रोल कऽ लेलैन। एमहर राजाबाबूक मन ठीक होइते फेर जिद्द कऽ पटना चलि गेला। परिकल जीह! केतौ मानल जाए, पुन: वएह रामा-कठोला। गाम आबैथ आ भैया जे पाइ दैन आकि नै दैन तँ पत्नीए-क गहना-जेबर बन्हकी लगा-लगा पीबए लगला। कहबियो छै चालि-प्रकृत-बेमए ई तीनू संगे जाए।

छओ मास ने तँ बितलै आकि वएह पुरने दुख राजाबाबूकेँ उखड़लैन। मुदा ऐबेरक दर्द बड़ तीव्र छल। सुतली रातिमे राजाबाबू अपना बिछौनपर छटपटए लगला। पेट पकड़ने जोड़-जोड़सँ चिचियए लगला। निसिभाग राति रहने हो-हल्ला सुनि लोक सभ जागल। लोकक लेल अँगनामे करमान लगि गेल। दर्दक मारे राजाबाबू पलंगपर छटपटा रहल छला। एकबेर बड़ी जोड़सँ दर्दक बेग एलै आ राजाबाबू खूनक उन्टी करैत सदा-सदाक लेल शान्त भऽ गेला।

अँगनामे कन्ना-रोहट उठि गेल। टोल भरिक लोक सभ जागि गेल। मुदा राजाबाबू तँ सभसँ रिस्ता–नाता तोड़ि परमधाम चलि गेल छला। परात भेने बिना बजौने सभ आदमी मिलि बाँस काटि, तौला-कराही, सरर-धूमन आ गोइठापर आगि दऽ राजाबाबूक पहिल सन्तान अनील हाथमे दऽ अपने आमक गाछीमे राजाबाबूकेँ डाहि-जारि सभ कियो घर घुमला।

कौल्हुका राजाबाबू आइ अपन महलकेँ सुन्न कऽ पत्नीकेँ कोइली जकाँ कुहकैले छोड़ि चलि गेला।

पत्नीक वएस मात्र पचीसेक आस-पास, सन्तानो तँ मात्र दुइयेटा। मुदा अपन कर्मक अनुसार आइ कोइली बनि कुहैक रहल छैथ। काल्हि तक जे सोल्हो सिंगार आ बत्तीसो आवरण केने साक्षात् राधाक प्रतिमूर्ति मेनका आ उर्वशी सुन्नैर छेली ओ आइ उज्जर दप-दप साड़ी पहिर कुहैक रहल छलि। केतए गेलैन भरि हाथ चुड़ी, केतए गेलैन भरि माङ सेनुर...।

सभटा धूआ-पोछा गेल। केकरो साहसे ने होइ जे सामने जा बोल-भरोस हुनका दैत। समुच्चा टोल सुनसान-डेरौन लगैत। तही बीच छह मास धरि ओकर कुहकब केकरा हृदैकेँ ने बेधि दैत। केना ने बेधि दैत!

आखिर वेचारीक वएसे की भेलइ। मुदा छओ मास तँ भेले ने रहै आकि ओ घरसँ बाहर, आँगनसँ डेढ़िया आ डेढ़ियासँ टोला-पड़ोसामे डेग बढ़बए लगली। जे कहियो हुनक पएरो ने देखने रहैन ओ आब मुहोँ देख रहल अछि। हुनक हेल-मेल सभसँ पढ़ल जा रहल छैन। आब तँ ओ अपना घरमे कम आनका आँगनमे बेसी समए बितबए लगली। सासु-दियादिनीक गपकेँ छोड़ि अनकर गपपर बेसी धियान दिअ लगली। नीक आ अधला तँ सभ समाजमे ने लोक रहै छइ। से आब किछु लोक हुनका गुरु मन्तर दिअ लगलखिन। आ ओहो नीक जकाँ धियान-बात दिअ लगली। जहिना कहबी छै जे खेत बिगैड़ गेल खढ़ बथुआसँ तिरिया बिगड़ए जँ जाइ हाट-बजार...। जे काल्हि तक ओकर उकासीओ ने कियो सुनने छल से आइ तँ ओ उड़ाँत भऽ गेलि। बिना कोनो धड़ी-धोखाक गामक मुखिया-सरपंचक संग हँसि-हँसि बजै-भुकए लगली। गामक राजनीतिमे हाथ बँटबए लगल। गामक उचक्का छौड़ा सभ संगे हाट-बजार करए लगल।

एतबे नहि, ओ अपन जीवन-यापनक बहाना बना ब्यूटीपार्लर सेहो जाए लगली। सत्संगे गुणा दोषा रंगीन दुनियाँ आ वातावरणक प्रभाव ओकरापर पड़ल लगल। ओकर अपन वैधव्य जिनगी पहाड़ सन लागए लगलै। आब ओ चाहए जे ई उजरा धूआ-साड़ीकेँ फेकि रंगीन दुनियाँमे चलि आबी। ओ रसे रसे-रसे उजड़ा साड़ी छोड़ि हल्का छिटबला साड़ी पहिरए लगल। मन जे एते एकरंगाह रहै से आब सभरंगाह हुअ लगलै। रूप-गुण लछन-करम सभ बुझू जे बदलए लगल। आब ओकर मौलाएल गाछक फूल खिलए लगल। एक दिन मुखियाकेँ कहि-सुनि इन्दिरा अवास स्वीकृति करौलक आ बिच्चे आँगनमे घर बना लेलक। आब जे कियो छौड़ा-माड़रि भेँट-घाँट करए आबए तँ ओ ओही घरमे बैसा चाह-पान

करए लगल। चाहो-पान होइ आ हँसी चौल सेहो। एते दिन जेकरा भाफो नै निकलै तेकर आब हँसीक ठहाका दरबज्जोपर लोक सुनए लगल। गामक आ टोलक बिस्कुटी लोकक चक्कर-चालिमे पड़ि ओ भैंसुरसँ अराइर कऽ अपन हक-हिस्सा लेल लड़ए लगली। लड़ि-झगैड़ सर-समाजकेँ बैसा पर-पंचायत कऽ ओ बाध-बोनसँ लऽ चर-चाँचर, वाड़ी-झारी एतबे नै डीह तक बाँटबा लेलक। आब तँ कहबी परि भऽ गेल जे अपने मनक मौजी आ बहुकेँ कहलक भौजी। जखन जे मन फुरै तखन सएह करए। कियो हाँट-दबार करैबला नहि। कारणो छेलै, जँ कियो किछु कहैक साहसो करए तँ अपन इज्जत अपने गमा बैसए। आब तँ ओ चर्चेआम भऽ गेलि। अही बीच ओ एकटा छौड़ाक संग बम्बै पड़ा गेल। आहि रे बा! परात होइते घोल-फच्चका शुरू भेल 'कनियाँ केतए गेली केतए गेली' आकि दू दिनक बाद मोबाइल आएल जे ओ तँ बम्बैमे अछि फलल्मा छौड़ाक संग। ओना गामोसँ मोबाइल कएल गेल जे कनियाँ गाम घुमि आबैथ। मुदा ओ तँ अपने सखमे आन्हर।

किछु दिनक बाद जेना-तेना पकैड़-धकैड़ ओइ छौड़ाक संग गाम आनल गेल। मुदा ओ तखनो सबहक आँखिमे गर्दा झोंकि कोट मैरेज कऽ लेलक तेकर बादे गाम आएल। एतेक भेला बादो गामक समाज बजौल गेला। सभ तरहेँ सभ कियो समझबैक परियास केलैन। मनबोध बाबा जे गामक मुँहपुरुख छैथ ओ ओकरा बुझबैत कहलखिन-

> "सुनू कनियाँ, अखनो किछु ने बिगड़लै हेन, आबो ओइ छौड़ाक संग-साथ छोड़ि गंगा असलान कऽ समाजक पएर पकैड़ लिऔ। जे भेलै से भेलइ। सभ अहाँकेँ जातिमे मिला लेत। जाति नाम गंगा होइ छइ।"

मुदा मनबोध बाबाक बातक कोनो असैर ओकरापर नै पड़लै। ओइ छौड़ाक संग-साथ छौड़ैले तैयार नै भेल। अन्तमे गौंआँ-घरूआक संग मनबोध बाबा ओकरा जातिसँ बाड़ि अँगनासँ ई कहैत-

"एकरा आँगनमे राखब उचित नै ई कनियाँ कनियाँ नै छुतहर छी छुतहर... ।"

हम ओत्तै ठाढ़ भेल किछु ने बाजि सकलौं, किछु ने कऽ सकलौं। की नीक की अधला से तखन नै बुझि पेलौं जे आइ बुझि रहल छी अखनो समाजकेँ समाढ़ गहिआ कऽ पकड़ने अछि।

◌

शब्द संख्या : 997

मोहन बाबू

मानपुरक प्रतिष्ठित जमीनदार कन्टीर मड़ड़। जिनका मात्र दू गोट सुपुत्र पहिल राम विलास बाबू आ दोसर श्याम विलास बाबू। राम विलास बाबूक पाँच गोट पुत्रकरण। आ श्याम विलास बाबूकेँ दूटा कनटिरबी आ दू गोट पुत्र। परिवार नमहर भेने एक आँगनमे अँटाबेश नै हेबाक कारणे आँगन जरूर दू भऽ गेल मुदा भावना सबहक एक्के छल। राम विलास बाबूक पाँचो पुत्र सभ तरहेँ सम्पन्न। सभ अपन-अपन दुख-धन्धामे लागल। एमहर श्याम विलास बाबूक जेठ पुत्र राम बाबू नामक सार्थकताक अनुरूप कमाइ-खाइबला रहैथ। एकोटा रूपैआ जेतबए मेहनतसँ कमाइ छला तेतबे रखि-जोगा कऽ खर्च करै छला। दुनू भैयारीक परिवार सभ तरहेँ भरल-पुड़ल कथुक कमी नहि। सर-कुटुम सेहो भरले-पुड़ले। राम बाबूक सासुर श्यामपुरक मुखियाजीक परिवार। मुखिया भेने हुनकर बेटी सेहो नीके लिखल-पढ़ल आ तेतबए देखए-सुनएमे सेहो सुन्नैर। बड़-बढ़ियाँ परिवारक भरन-पोषन चलैत रहए।

श्याम बाबूक छोट पूत्र मोहन बाबू। बेस छह फिट दू इन्ची लम्बा। तहिना शरीरो लालबून। पढ़ै-लिखैमे सेहो तेतबे तेजगर। मुदा हाथक बड़ खुजल। भैयासँ पाइ लऽ लऽ संगी सबहक संग चाह-पानमे खूब उड़बैथ। दोस-महीमक कोनो कमी नहि। देखते-देखते मोहन बाबू बी.ए पास केलैन। शादी-बिआहक गप-सप्प चलए लगल। एकठाम दूठाम देखैत कथा केतौ पसिने ने पड़ै छेलैन। अन्तमे बड़ बढ़ियाँ अपने गताति

सरायगढ़मे एकटा कन्याँ देख सम्पन्न भेल। पत्नी देखै-सुनैमे जहिना सुन्नैर तहिना पढ़बो-लिखबोमे। मैट्रिक केला पछाइत कौलेजमे नाओं लिखौने छलि। एमहर लालो बाबू पढ़ैथ आ ओमहर पत्नी सेहो। मौका-कुमौका देख जेठ भायसँ नजैर बँचा मोहन बाबू सासुरो चलि जाइथ। जाइत-अबैत पत्नी जखन एक जानसँ दू जान भेली तँ घरवारी काहा पठा दुरागमन करा सासुर बसए लगली। लक्ष्मी पात्र कनियाँ आ स्वामीक रूप मोहन बाबू । दुनूक जोड़ा बड़ सनगर। समए बितैत गेल। मोहन बाबू बी.ए. करि शिक्षक प्रशिक्षण लेल दरभंगा गेला। ओतए मास-मास भरि रहैथ। कहियो कताल गाम आबैथ। लोक सभ बुझैत जे बड़ पढ़ुआ छै तँए मन लगा पढ़ैत रहै छइ। पढ़ै-लिखैसँ पलखैत नै हेबाक कारणे गाम-घर कमे काल अबैए।

एमहर मोहन बाबूक मासिक खर्च बढ़ल जा रहल अछि। पढ़ाइक नाओंपर समए-कुसमए भैयासँ पाइ ऐठैमे नै चुकै छल। समपन्न रहबाक कारणे राम बाबू कथुक कमी नै रखैथ। जमीन-जत्था बेच-बेच पढ़ाइक खर्च देबए लगलखिन। दिनसँ मास बितल माससँ साल। मुदा मोहन बाबूक पढ़ाइक अन्ते नहि। ओ जेतेक पढ़ै छला तइसँ बेसी किछु दिनसँ गढ़ौ लगला। जइसँ खर्च बहुत बढ़ि गेलैन। दोगा-दोगी व्यस्क सिनेमा देखैक आदति सेहो लगि गेलैन। बेर-कुबेर साँझमे पाटीक नाओंपर शराबक आयोजन सेहो होमए लगल। खर्च मोहन बाबूक आ मौज-मस्ती सभ उड़बए। किछुए दिनक पछाइत दोस-महीमक गलत संगतमे पड़ि मोहन बाबू कटकी बजार सेहो जाए लगला। तेकर बाद तँ कोनो एहेन दिने ने होइ जइ दिन ई एको साँझ बिना पीने रहैथ आ एक्को राति बिना कटकी बजार गेने बितबैथ।

आब तँ बुझू पानि नाक धरि पहुँच गेल। रसे-रसे एकर भनक राम बाबूकेँ सेहो लगलैन। समझेला-बुझेलाक बादो जखन मोहन बाबू नै मानलैन तँ राम बाबू अपन परिवार लऽ भीन भऽ गेला। आब तँ मोहन बाबू आरो छुट्टा खजाना भऽ गेला। एक दिनक गप छी। मोहन बाबू गाम

आएले रहैथ। सुतली रातिमे टोल दलमलित भऽ गेल जे मोहन बाबूकेँ कीदैन भऽ गेल। अड़ोसिया-पड़ोसिया सभ थाहाथही आँगनमे जमा भऽ गेल। मोहन बाबूकेँ घरसँ बाहर आनल गेल। एकटा हाथ छातीपर रखने दर्दसँ छड़पटा रहल छैथ। तत्खनात् ग्रामीण डाक्टर बजौल गेला। चेक-चाक कऽ दूटा सुइया लगा कहलखिन-

"हमरा हिनका हाडपर शंखा होइए तँए आगू लऽ जैअनु।"

परात भेने राम बाबूक परिवार आ मोहन बाबू रिक्शासँ आ राम बाबू पाछाँ-पाछाँ बिदा भेला। झंझारपुर जा महासेठसँ देखौलैन। डाक्टर महासेठ सभ तरहक जाँचोपरान्त दवाइक संग परहेज बतबैत कहलखिन-

> "हिनका हर्टक बिमारी छैन। ताड़ी-दारू पीबाक कारणे फेफड़ा सेहो खत्मे बुझू। ई कोनो भिरहगर काज नै करैथ आ ने एको बून दारू पीबैथ।"

गाम आबि सबहक बात मानि मोहन बाबू दारू पीनाइ छोड़ि देलैन आ दवाइक संग पथ्य भेने चेहरा फेर लालबुन भऽ गेल। निकेना भेला पछाइत मोहन बाबू पढ़ाइक बहन्ने फेर दरभंगा जाए चाहलैन। कनियाँ केतेको सप्पत-किरिया खुआ अन्तमे बालो-बच्चाक सप्पत दऽ हुनका दरभंगा जाए देलखिन।

दरभंगा एला पछाइत मोहन बाबूक वएह किरदानी। मासो ने लगलैन आकि घुमि घर एला। फेर सभ कियो विचारि महासेठ लग गेला। देख-सुनि आगू पढ़ैक सलाह देलखिन। तत्खनात् टोल भरिमे जिनका लग जे औसलिया-कौसलिया छल ओ सभटा उघार-पैंच कऽ राम बाबू पत्नीक संग मोहन बाबूकेँ दरभंगा लऽ जाइक विचार केलैन। टोल भरिक लोक कानि-खिज रहल छल। अश्रुपुरित आँखिए सभ कियो दरभंगाक गाड़ीमे एकटा सीट छेक भोरुके गाड़ीसँ बिदा भेला। मोहन बाबू बेहोश रहैथ। ओना कखनो-कखनो कुहैर जरूर उठैथ।

श्यामपुरवाली कनियाँ बिअनि हौंकि रहल छेली। मुदा दैवक लिला एहेन जे सकरीए जाइत-जाइत मोहन बाबूकेँ एकटा नमहर हिच्की भेलैन आ वएह भेल जेकर डर सभकेँ छल।

श्यामपुरवाली कनियाँ सभ किछु अकाइन ओतैसँ आपस घुमैक सलाह देलखिन। सभ कियो बिनु कन्नारोहटक आपस आबि घर अबै गेला। घर पहुँचते कन्नारोहट शुरू भेल। गौंआँ-घरूआ टोला-पड़ोसाक लोक सभ जमा हुअ लगल। बिच आँगनमे मोहन बाबूक लहाश राखल गेल।

सबहक टिप्पणी सभ तरहक छेलैन। मुदा मोहन बाबूक पत्नीक पछाइर मारि-मारि कानब लोककेँ बेबरदास भऽ गेलइ।

सबहक विचार भेल जे लहाशकेँ रातාराती जरा देल जाए। जुआनी मौगैत ठीक नै होइ छइ। से विचारि समाजक सभ कियो कुरहैर, टेंगारी, जोरी, कोदारि, कोहा, कौड़ी, धूमन, घी, आगि इत्यादि लऽ बुढ़िया गाछी गेल। आ राता-राती लहाशकेँ डाहि-जारि खतम कऽ कोदारि-टेंगारीक बेंट उनटा पचकठिया दैत सभ अपन-अपन घर पोखैर होइत आएल। लोह-पाथर आ आगि छुबि-छुबि सभ एकहक मुट्ठी भूजल चाउर, नीमक पात आ मिरचय मुँहमे लऽ चिबौलक।

सभ कियो शोकाकुल छल। मुदा मोहन बाबूक पत्नीक आँगनसँ पछार मारि-मारि कानब-

> "राजा हौ राजा, हमरा छोड़ि केतए गेलह औ राजा। बाबू हौ बाबू हमरा छोड़ि केतए गेलह हौ बाबू।"

सबहक अश्रुपुरित आँखिमे नाचि रहल छल। मोहन बाबू।



शब्द संख्या : 889

सवक

शिबू धरमपुर गामक वासी। मध्यम वर्गीए परिवार। एक्केटा बेटा किशुन आ पुतोहु चमेली छल। शिबू सभ दिनसँ बिमार रहै छल। टीबी सन उगहा रोग ओकर भऽ गेल छल। परिणाम सदिखन खौं-खौं करैत रहै छल। दवाइ-विर्ड़ो तँ कनीमनी होइते रहै छेलै मुदा पथ्य-परहेज समए-समैपर नै भेलाक कारणे निरोग नै भऽ सकल। पथ्य-परहेजक इंजामो के करितै, किएक तँ पत्नीक असमए मुइने वेचारेकेँ सभ कथुक दुख-तकलिफ होइते रहै तँए ओ ओरो दुखताह होइत गेल। मन सतत् खिन्ने रहै छेलइ। तैपर पुतोहु दुआरा कुभेला भेलासँ ओ ठीक की हएत जे आरो लचारे आ बेमारे होइत गेल।

एक दिनक गप छी। जेठ मासक समए। कराचुर गरमी, रौद तेहने करगर। दिनक एक बजैत। भूखल-पिआसल शिबुक हालति खराप भऽ गेलइ। कएक बेर पुतोहुकेँ हाक दैत शिबु कहलक-

> "हे कनियाँ, बड़ जोर भूख लगल अछि। पिआससँ कण्ठ सुखैए। कनी खाइले किछु आ पीबैले पानि दएह। नै तँ हम भूखे-पिआसे मरि जाएब।"

मुदा कनियाँ लेल धनिसन। ओकरा तँ कोनो परबाहे नहि। एमहर शिबु चिचिआ रहल अछि। ओमहर कनियाँ पुतोहु जे गामक सी-नम्बरक

बिस्कुट्टी, लोकक घरकेँ बिगाड़निहारि, लोकक घरमे झगरा लगौनिहारि बनो मौसी लग बैस गप छकैड़ रहल अछि। बनो मौसी जेकर एतबे किरदानी जे अनकर बेटी-पुतोहुक निन्दा-खिस्सा कऽ ओकरा घरकेँ नरक बना देब। कोन छौड़ी-मौगी आ छौड़ा-मुनसा केतए के की कऽ रहल अछि ई समाचार तँ बीबीसी जकाँ बनो मौसी लग तुरत पहुँच जाइन। जेकरा ओ नून-मरीच लगा आरो बढ़ा-चढ़ा कऽ गामक बेटी-पुतोहु लग सुना-बझा कऽ ओकरा बिगाड़ि देब ओकर काज। गामक बेटी-पुतोहुकेँ ई चहटगर गप-सप्प नीक लगैत। चमेली सेहो तहीमे सँ छल। ओइ दिन किशुन अपन जमीनक मालगुजारीबला रसीद कटबैले दरभंगा गेल छल। ओना ओ खेती-पथारी साढ़े बाइसे करै छल आ एक नम्बरक आलसी अछि। मुदा घरवाली नमहर आशिक। घरवाली बिना ओकर जीवन कोनो जीवने नहि। जेना साफ निरस बुझाइ छेलइ। एमहर चमेलीक गदराएल जुआनी, बिआह चारि साल पहिने भेल। मुदा एकोटा बाल-बच्चा नै भेल जइसँ ओ आरो खिलल बुझाइत। देहो-दशा बेस चुहचुहीपूर्ण। खेने-पीने बेस मस्त-मौला। बाल ने बच्चा दुनू परानीकेँ जे जखन मन फुरै से तखन करए लगए। बेर-बेर शिबुकेँ मना केला बादो किशुन जमीन बेच-बेच खूब मौज-मस्ती करए। घरवाली जे जे फुरबै किशुन ओकरा से से पुड़बै। आ दुनू परानी सदिखन जुआनीक निशाँमे मतल रहै छल। किशुनकेँ कहबी परि भऽ गेल छेलइ। कहबियो छै धैन छी अहाँ की धैन छी हम आ चलै छी अहाँ तँ निग्हारै छी हम। अपने मनक मौजी आ बहुकेँ कहलौं भौजी। यहए दुनू परानीक किशुनक संसार छल। बुढ़ बापकेँ के देखत। आब की श्रवण कुमारबला जमाना छै जे माए-बापकेँ कान्हपर लाधि चारूधाम करौत।

एमहर पत्नीकेँ मुइने, टीबी बेमारी भेने, उचित इलाज नै भेने आ बेटा-पुतोहु दुआरा कुभेला भेलासँ शिबुक स्थिति आरो खरापे भेल जाइ छल। ओकर ब्लडपेसर बहुत अधिक भेने लकबा सेहो मारि देलकै। जइसँ ओकर एककातक अंग काज करब कम कऽ देलकै। आब शिबुक

दुनियाँ दिन भरि एकटा खटियापर सूतल काहि काटब भऽ गेलइ। वेचारा कोनो काजक लेल दोसरेपर आश्रित भऽ गेल छल। ओइ दिन शिबु बड़ी काल धरि गिरगिराइत रहल मुदा कियो ओकरा नै सुनलक। सुनबो के करतै पुतोहु तँ बनो मौसी लग बैस गप पसारने आधुनिक महाभारतक कथा सुनि रहल छल। शिबुक बेर-बेर अवाज देब, कानब, कुहरब सुनि बनो मौसी चमेलीकेँ कहलक-

> "धुर कनियाँ, केहेन तोहर ससुर छह जे कनियोँ काल धरि लोक लग उठए बैसए नै दइ छह। ई बुढ़बा तँ ढौंग केने अछि। झुट्टे कुहैर रहल अछि। धुर हम जाइ छिअ एतएसँ।"

कहैत मौसी ओइठामसँ ससैर गेली। पछाइत चमेली घर आबि पएर पटकैत एक लोटा पानि भरि बुढ़बाकेँ सरापैत भरलो लोटा पानि खाटक निच्चाँ राखि अपने रूमेमे जा पलंग तोड़ए लगल।

शिबुकेँ पानि देखते जानमे जान एलइ। ओ हाथ बढ़ा पानि पीबए चाहलक। मुदा तागैत नै भेटने पानि हरा गेलइ। शिबु अपना भाग-तकदीरकेँ कोसए लगल। एमहर पानि जे हरा गेल रहै से देख कनियाँ शिबुकेँ गारि-बात दैत आसमान कपारपर उठा लेलक। जइसँ टोल-पड़ोसक लोक जुटि गेल। बात की छिऐ से केकरो बुझैमे देरी नै लगलै। ओही भीड़मे सँ लक्ष्मीपुरवाली कनियाँ शान्ति जे विधवा भऽ गेल छैथ, कलपर जा एक लोटा पानि भरि शिबुकेँ पीऔलैन। पानि पीला पछाइत शिबुकेँ होश भेल। ई काज चमेलीकेँ जेना नै नीक लगलै। बरदास नै भेलइ। ओ शान्तिकेँ बुढ़बा लगा-लगा एक हजार गारि पढ़लक। शान्ति वेचारी चुपचाप अपना आँगन चलि गेली।

परात-भने टोला-पड़ोसाक लोक सभ किशुन आ चमेली दुनू परानीकेँ धुर छी-धुर छी करैत कहै गेल-

> "तूँ सभ बुढ़बाकेँ खाइले नै दइ छहक। ओकर सेवा-सुश्रुषा नै करै छहक। एहेन जुलुम तूँ सभ किए करै छहक। तोरा सभकेँ

नीक नै हेतह।"

ई बात सुनैत चमेली कनैत-खिजैत भागि कऽ अपना नैहर चलि गेल। किशुनक कमजोरी तँ ओकर कनियाँ छेलइ। ओकरा तँ बहु बिना किछु नीके ने लगै छेलइ। साँझ धरि ऊहो सासुर चलि गेल। ओकरा धुर छी धुर छी करैत ओकर सासु कहलक-

> "एकटा गप कान खोलि सुनि लथु पाहुन, जाबे तक ओ बुड़हा ओइ घरमे जिन्दा रहत ताबे तक हमर बेटी कोनो हालतमे ओइ घर पएर नै देत।"

आब तँ किशुनकेँ किछु फुरबे ने करै। लाख मनौला बादो चमेलीकेँ घुरि घर नै एलापर किशुनो सासुरेमे रहए लगल।

एमहर शिबुकेँ दिन तँ कहुना बितल मुदा राति बितबे ने करए। ओकरा होइ जे आब हमर दिन कुदिन आ भाग अभाग भऽ गेल। कोनो रस्ता नै देख ओकरा आत्महत्या करबाक विचार मनमे उपकलै। विचार उपैकते मन अघोड़ भऽ गेलइ। कोनो बाटे ने सुझहै। करत तँ करत की वेचारा। होश सम्हारि कहुना कऽ लड़खराइत उठि अपना रूमक बिजलीक नंगा तार जँए की पकड़लक आकि बड़ी जोरसँ झटका लगलै। लगिते हृदए बिदारक चीख निकललै आ शिबु एकटा देबालसँ टकड़ा कऽ बेहोश भऽ गेल। चीख सुनि शान्ति दौड़ल एली। देखली जे शिबु तँ बेहोश भऽ गेल। जनु मरि ने गेलइ। छातीपर हाथ देलखिन। बुझेलैन साँस चलै छैन। तुरन्ते दौगल जा पड़ोसक डाक्टरकेँ बजा अनलक। सुइया-दवाइ पड़िते शिबुकेँ कनी होश एलइ। होश अबिते उठैक कोशिश केलक। उठि कऽ लड़खराइत ठाढ़ भेल। मनमे खुशी भेलै जे हम तँ आब ठीक भऽ गेलौं। बेजान हाथ-पएरमे जान चलि आएल। डाक्टर साहैब चेक कऽ बतौलखिन जे बिजली करेन्ट लगलासँ हिनक सुन्न अंगमे जान चलि एलैन। जदी ठीकसँ हिनक इलाज-बात कएल जाए आ पथ-परहेज होनि तँ आब ई सोल्हन्नी ठीक भऽ सकै छैथ। शिबुकेँ ई बात सुनिते आ अपन

देहक दशाक अनुभव करिते बदलल बदलल बुझा पड़लै। खुशी भऽ एक नजैर शान्तिपर उठा याचनापूर्ण भावे देखए लागल। जेना ओ आँखिएसँ किछु कहै रहल छइ। बात अकानैत शान्ति बजली-

> "ठीक छै डाक्टर साहैब, अहाँ दवाइ दियौ। हिनकर बेटा-पुतोहु तँ एतए नै छैन मुदा इंसानियतक नाते हम हिनकर देख-भाल करबैन।"

डाक्टर साहैब दवाइ दऽ चलि गेला। हप्ता-दस दिन गुजैर गेल। शान्तिक सेवा-सुसुर्षासँ शिबु नीक हुअ लागल। मने-मन शान्तिक एहसानमन्द भऽ गेल। शान्तिक प्रति भरि-भरि दिन सोचए लगल। मनमे प्रेम उपैक गेलइ। रहि-रहि कऽ शान्ति शिबुक मनमे जगह ओहन छेक लेलक जे आर किछु रहिए ने गेलइ। सोचए लगल की शान्तिकेँ अप्पन बुझिऐ, आकि ऐ बीरान बेटा-पुतोहुकेँ, आकि ऐ समाजकेँ, जे शान्तिक ओहेन दशापर आइ धरि किछु नै सोचि सकल। शिबु किछु विशेष निर्णए लेलक। मुदा मनमे ठहकलै जे शान्ति तँ विजातीय विधवा अछि।

एमहर गौंआँ-घरूआ सभ शान्तिक बेवहार देख जे शिबु ऐठाम किए जाइ-अबैए, सँ नाराज भऽ ओकरा जाति-बेरादरीसँ बारि गामसँ निकलि जेबाक बात सेहो कहि देलकै।

ई खबैर सुनि शिबु शान्तिकेँ बजा सभ खिस्सा सुनि अपन कएल ठोस निर्णएपर आरूढ भऽ शान्तिकेँ कहलक-

> "शान्ति, अहाँ हमरा नवका जीवन देलौं। हमर बेटा-पुतोहु हमरा मरैले छोड़ि गेल। हम असगरे काहि काटि-काटि मरै छेलौं तखन ई समाज हमर कियो नै आ हम समाजक कियो नहि। की असतूत छै ऐ समाजक? अहाँकेँ गामसँ निकालत? एना किन्नहु नै हएत। अहाँ निराश नै होउ ऐ समाज आ दुनियाँकेँ जवाब दइले हमरा लग उपए अछि। हम जवाब देबइ। औरतक कोनो जाति नै होइ छइ। हम अहाँसँ बिआह कऽ लेब, अहाँ हमर पत्नी भऽ

> जाएब। फेर देखै छी जे ई समाज अहाँक की बिगाड़ैए कियो जे आँगूर उठौत तँ आँगूर काटि लेबै, आँखि देखौत तँ आँखि निकालि लेबइ। ऐ लेल हमरा अपन बेटो आ पुतोहुओक चिन्ता नै अछि।"

मने-मन शिबु एकटा ठोस निर्णए लऽ कोट मैरिज कऽ ओकीलसँ मिलि एकटा वसियत बना अपन सभ सम्पैत शान्तिक नाओंसँ कऽ देलक।

ई खबैर जखन किशुन आ चमेलीकेँ भेटलै जे सभटा धन-सम्पैत पिता एना-एना कऽ केलैन। तँ दुनू परानी कपार पीटब शुरू केरैत अर्र-दर्र बाजए लगल-

> "हमर बाप हमरा भिखाड़ी बना देलक। हम भीखमंगा भऽ गेलौं।"

मुदा समए तँ सभ किछु कराइए लइए। समए अपन निर्णए लऽ काज कऽ चुकल छल। शिबु सेहो समए सापेक्ष्य निर्णए लेबए लेल तैयार छल मुदा समाज दुनू परानीकेँ अलग-थलग करैमे मजा लैत रहल।



शब्द संख्या : 1359

टुटैसँ बँचि गेल

बाबा राम मनोहर दास नीक संत प्रवृतिक बेकती। समाजमे नीक प्रतिष्ठा। राम मन्दिरक पुजारी भेने आरो यश-मान आ नाम। सभ दिन सबहक हितेक काजमे लागल रहला। सभ हुनकर हिते मुद्दे कियो ने। यद्यपि हुनका दूटा पत्नी मुदा सौतिनक सम्बन्ध कहियो देखैमे नै आएल। अपितु दू बहिनक रूपमे सभ दिन। बाबाकेँ जत्था–पात सेहो नीक्के, कहियो कथुक दुख-तकलीफ नहि।

बाबाक दुनू पत्नीसँ एकटा पुत्री आ दूटा पुत्र सन्तानक रूपमे छल। पुत्रीकेँ समए-साल पाबि नीक कुल-खनदानमे बिआह-दान कऽ बाबा निचेन छला। बड़का बेटाक बिआह सेहो मध्यम परिवारमे कऽ बाबाक जीवन सुखमय छल। घर-आँगन नाति-नातिन, बेटा-पुतोहु आ पोता-पोतीसँ सदिखन भरल रहैत छल। सजना बाबाक छोटका बेटा जखन बिआह करै जोग भेल तँ कथा-बर्ताक चर्च चलए लगल। सजना देखै-सुनैमे बड़ सुन्नर आ पढ़ै-लिखैमे सेहो बड़ तेजगर छल। मैट्रिक केला बाद आइ.एस-सी.मे मधुबनीमे नाओं लिखा देल गेल जेतए ओ मन लगा कऽ पढ़ए लगल। ओकरे कथाक प्रति कएक ठाम लड़की देखल गेल मुदा बाबाकेँ पसिने ने होइ छेलैन। केतेको दिन बाद घुमैत-फिड़ैत शहर तँ नै मुदा शहरी वातावरणमे पलल-बढ़ल बेस गोरि-नारि नमहर-छड़गर कर्चीए सन पातर एकटा लड़की देखल गेल। नाक-नक्शा सेहो बड़ सनगर।

लड़की देखए-सुनएमे बड़ पवित्र। एकदम कारी-भौर केश, बेस डाँर लगतक नमहर जुट्टी एना लटकल जेना गहुमन साँप। चालि ठुमकी, आँखि आमक फारा सन-सन नमहर, हाथ-पएर एकदम सोंटल-साँटल कुल मिला लड़की बाबाकेँ पसिन भऽ गेल। दुनू पक्षसँ बर-कन्याँ देखल गेल आ एकटा शुभ मुहुर्तमे कथा सम्पन्न भेल।

समए गुदस होइत गेलइ। बाबाक छोटका बेटा सजनाकेँ ओइ कनियाँसँ एकटा पुत्र आ दूटा पुत्रीक जनम भेल। बड़ हर्षक विषय रहल। समए बदलैत गेलइ। सजनाकेँ पढ़ाइपर सँ धियान हटि रंगीन दुनियाँमे दिल लागए लगलै जइसँ ओ ने तँ मन लगा पढ़ए-लिखए आ ने कमाइ-खटाइ। एक तँ बेरोजगार तैपर सँ खर्च बेसी। तेतबए नै ओ अपन एहेन सुन्नर कनियाँकेँ छोड़ि आन-आन लग सेहो जाए-आबए लगलै। कनियाँकेँ ई बात पसिने ने होइ। पसिनो केना हेतै आखिर औरत-तँ-औरत छी ने। कियो केना बरदास करत जे ओकर स्वामी ओकरा छोड़ि आन छोड़ी-मौगी लग जाए। कनियाँकेँ बेर-बेर मना केला बादो जखन सजनाक छुतहरबला चालि नै सुधरलै तँ कनियाँ कहलखिन-

> "जो रे मरदाबा, जहिना तों अखन हमरा तरसबै छेँ तहिना समए एलापर हम तोरा तरसेबौ। हम तोरा बबाजी बना कऽ रखबौ। अगर नै रखलिऔ तँ हम एकबापक बेटी नहि।"

ऐ तरहेँ दुनूक जिनगीमे जहर घोरा गेल। ऐ तरहेँ सजना कनी दिनक बाद दिल्ली-पंजाब गेल मुदा केतौ पाच नै लगलै। घुमि घर आएल। मुदा घरो अशान्त। पहिने जइ छौड़ी-मौगीकेँ धेने छल से केते दिन? बड़ बढ़ियाँ कबीर साहैब कहने छथिन-

> "सभ दिन होत ने एक समाना... संतो होत ने एक समाना...।"

आब तँ बाजी कनियाँ हाथ आएल। ओकर घरबला घुमि-फिर कऽ घर अबै मुदा कनियाँ गछबे ने करै। ओ कहै-

> "तोरा हम रखबौ जरूर मुदा बबाजी बना कऽ।"

आब तँ कोनो उपाइए ने रहि गेल। आब ओ करत तँ की करत। खर्चा-पानि जे घटै सेहो ओकर कनियाँ दइले तैयारे ने होइत। समए पाबि धियो-पुतोकेँ जुआन भेने बेटा घरक गारजन भऽ गेल। आ ओहो गारजन विहीन भेने जे मनमे अबै सएह करए। बाबाक अरजलहा जमीन बेच-बेच अपन खर्च पुड़बए लगल। बापक अछैते जइ जमीनक दाम पचास हजार रूपैए कट्ठा हेतै तेकरा पचीसे हजार रूपैए बेच उड़बए-पुड़बए लगल। सत-संगैत ओकरो खराप भऽ गेलइ। आब तँ सजनाकेँ कहबी परि भऽ गेलै, अपने करनी गइ मुसहरनी...। ओ करत तँ की करत। किछु फुरबे ने करै, आ ने परिवारेमे कियो गुदानै। आब तँ खर्चो-पानिक अभाव हुअ लगलै। जीवन तँ कुकुर सन भऽ गेलै, जे एक कौर खा केतौ पड़ि रहए। आखिर से केते दिन?

जुति-भाँज लगा ओ जमीनक किछु कागत लऽ झंझारपुर आबि एकटा नीक ओकीलसँ सलाह लेलक। सलाह लऽ घरपर कानूनी नोटिश पठबौलक। जइमे ऐ बातक जिकिर छेलै जे ओकर नाओंक जमीनकेँ कियो बेच नै सकैए, परिवारमे कियो ओकरा मारि-पीट नै सकैए, अन्यथा ओकर जिम्मेबार ओकर पत्नी आ बेटा हेतै जे ओकरा जीवन भरि जहल काटए पड़तै। आब तँ भेल पहपैट। कनियाँकेँ तँ हाथो महक गेल आ लातो तरक गेल। आब तँ दुनू मायपुत कानूनन लचार भऽ गेल। कानूनमे बन्हा गेल।

एमहर सजना अपना नामक एककित्ता दसकठबा जमीन एकटा हरिजनक नामे पाँच लाखमे बेच चारि लाख रूपैआ बैंकमे रखलक आ एक लाख पूजी लगा एकटा जेनरल स्टोर झंझारपुरमे खोलि लेलक। आ जखन दोकान नीक-नहाँति चलए लगल। आब तँ सजनाक दिने बदैल गेल। समए ओकरा नीक-नहाँति सवक दऽ देलकै। समैकेँ परेखि ओ ओकर मुल्य जानि अपना बुधिए काज करए लगल। आब सजनाकेँ ने तँ पत्नीक मदैतक खगता रहलै आ ने बेटाक। बेटा जे कुकुरचालि पकैड़ नेने छेलै से आब ओकरा चाउर-चिक्कसक भाव बुझबामे आबि गेलै आब तँ

सभ तरहेँ लचरि गेल। किछु फुरबै ने करै, करत-तँ-करत की? कानूनक डर सेहो होइ। एमर खर्चा-पानिक दिक्कत भेलासँ कनियाँकेँ सेहो अकास-पताल सुझए लगलैन। ऊहो अपना करनीपर पचतए लगली। कोनो उपए नै देख हारि-थाकि कऽ दुनू मायपुत झंझारपुर आबि स्वामीक पएरपर खसैत अपन गलतीकेँ स्वीकार केलक। ऐ तरहेँ एकटा टुटैत परिवार टुटएसँ बँचि एक भऽ गेल।

◌

शब्द संख्या : 780

ई की?

अपना ऐठाम प्राय: सभ दिन कोनो ने कोनो पावैन-तिहार लधले रहैए। आइ भरदुतिया तँ काल्हि छठि। लगले दिवाली तँ पीठेपर कालीपुजा। केतौ चैती नवरात्रा तँ केतौ शितलापुजा। केतौ इन्द्रपुजा तँ गणेशपुजा। मुदा एकटा बात सभठाम एकदम समान देखैमे अबैए जे एहेन पूजाक आवसरपर पूजा स्थलक संग खुलल मैदानमे सोर-सराबा आ धूम-धड़काक माहौल चौबीसो घन्टा बनले रहैए। पैछला केतेको बर्खसँ पुजनोपरान्त झाकी निकालब एकटा प्रतियोगिता सन भऽ गेल अछि। सजाबट आ झाकी एकसँ एक बढ़ि-चढ़ि कऽ हुअए ऐ लेल अधिकसँ अधिक टाका खर्च करबामे कियो केकरोसँ पाछू नै रहए चाहैए। प्राय: अहुमे एकटा प्रतियोगिते देखबामे अबैए। जइमे किशोरक तँ हाले ने पुछू। जेना पूजाक ठिकेदारी ओही उमेरबला कें भेटल होइ। प्रोग्रामक नाओंपर फुहर्ता एहेन जे देखनिहारोकें लाज नै होइ छैन। जेना कि आँखिमे लाजक पानिए सुखि गेल हुअए। एतबे नहि, लाजक जगहपर गौरव महसूस होइत हो।

ऑरकेस्ट्राक नाओंपर छौड़ी सबहक ठुमकी लगा अपनेमे मारि-पीट करब आम भऽ गेल अछि। सभसँ बेसी मजा तँ ई जे पूजाक ठिकेदार सभ धर्मक आड़िमे जबरदस्ती चन्दा असुलि कऽ समुच्चा स्टेजकें लाल-पीअर बत्तीसँ जगमगबैत रहैए। ऐ तरहक कार्यक्रममे मारि-

पीट, झगड़ा-झाटी, गारि-गलौज इत्यादि आम बात भऽ गेल अछि। मुदा तखनो कियो बुझैले तैयार नहि। खास कऽ दुर्गापूजा, कालीपूजा आदिमे बायजीक नाच भरि-भरि राति चलैत रहैए। लॉडस्पीकर तेतबे कम जोरसँ बाजत जे काने ने देल जाएत। भरि-भरि राति अनघौल होइत रहत जइसँ सूतब मोसकिल। रस्ता-पेरामे चलब मोसकिल भऽ जाएत जे एक-दू दिन नै अपितु तीन-चारि दिनसँ लऽ कऽ दसो दिन धरि व्याप्त रहैए।

यद्यपि देश धर्म प्रधान अछि। जइमे खास कऽ मिथिलांचल तँ पूजा-पाठक जननीए बुझू। मुदा प्रश्न तँ ई उठैए जे हमरा लोकैनकेँ धर्म आदिक नाओंपर करक की चाही आ हम सभ कऽ की रहल छी?

ऐ तरहक काज करब केते उचित आकि अनुचित। ई हमरो लोकैन लेल आजुक विचारणीय विन्दु अछि। ऐ सभ विन्दुपर रामनरेशकेँ बैसल दलानपर माथमे बिनबिन्नी जकाँ उठल छेलैन। तखने पत्नी चाह नेने आबि हाथमे देलकैन। चारि घोंट चाह पीब पत्नीकेँ कहलखिन-

"आँइ यै रामपुरवाली, ई सभ की भऽ रहलैए?"

रामपुरवाली अकचकाइत पुछलखिन-

"कथी की भऽ रहल छै जे एना बताह जकाँ बजै छी?"

रामनरेशकेँ अपना गलतीपर भान भेलइ। जवाबमे समुद्र उपछबसँ नीक अपनाकेँ असथिरे करब बुझैलैन बजला-

"जेकरा जइ मन फुरै छै से से करैए। अच्छा जाउ भानस-भात करू गऽ"

ई गप सुनि रामपुरवालीकेँ आरो ओझरी लगि गेलैन। बजली तँ किछु ने मुदा मनमे उठि गेलैन- ई की भऽ गेलैन हिनका। रामनरेशक आत्मा अघोर-अघोर भऽ गेल ओ विचारक धारामे बहए लगल। बहैत-बहैत पुन: ओकरा मन पड़लै अपन पत्नी रामपुरवाली। रामनरेश बाजल-

"रामपुरवाली, से नै तँ अहीं कहू जे ऐ तरहक पूजा-पाठ करब केतेक उचित भेल वा अनुचित?"

रामपुरवाली बिना कोनो भूमिकाक बजली-

"जइ पूजासँ एतेक प्रदूषण बढ़ए, समाजक अमन-चैन छीना जाए, आपसेमे समाज कटि-मरि जाए, दंगा-फसादसँ लऽ कऽ मोकदमा धरि भऽ जाए तेतबे नै जे रोग शहरसँ लऽ कऽ गामो-घरमे पसरल जा रहल छै, ई तँ सरासर अनुचित भेल। मुदा विचारणीय प्रश्न ई उठैए जे समाज आखिर ई कोन बाट पकैड़ लेलक अछि। हम सभ कोन मकड़जालमे ओझरा गेल छी। आखिर ई के सोचत हम जे कऽ रहल छी से आखिर ई की कऽ रहल छी।"

कपक शेष चाह सेहो सेरा गेल छल। उठि हाथ-मुँह धोइले रामनरेश कलपर चलि गेल।



शब्द संख्या : 513

खाधुर

केते दिनक बाद ऐबर तिलासंक्रातिक अवसैरपर गाम जेबाक मौका भेटल। सोभाविको अछि। रहू केतौ मुदा अपन सांस्कृतिक मान-मर्यादाक रक्षा हेतु पावैन-तिहार करब हम सभ ने बिसरै छी आ ने बिसरक चाही। अपितु पावैन-तिहार तँ आरो हर्ष आ उल्लासक संग मनेबाक चाही। जनम-जनमान्तरसँ माए-बाप, दादा-दादी, दीदी-पीसा, काका-काकीक हाथक फुलौल तिल-चाउर जइमे पर्याप्त गुड़ देल बेस झोरगर खूब मजा लऽ लऽ खाइ छी।

माघक जाड़ मासमे छोट-छोट नैनाक संग पजरल घूर तपैत बैसल छेलौं तखने बौआ काका पोखैर-झाँखैर दिससँ लग्ही-नदी कऽ आबि बैसला। हाथक सेरही टिन्हा लोटाकेँ घूरक दहिना कातमे रखि खोरनीसँ आगि खोरि तापए लगला। पछाइत बाँसक उबहीबला दतमैन जे रामपुरी चक्कुसँ छीलि-मोथि अपन अण्डाकार मुँहमे दैत थू-थू करैत बजला-

> “मास्टर हौ, केते दिनक छुट्टी लऽ कऽ गाम एहल। अहोभाग हमर जे आइ तोरासँ भेँट भेलह। तों सभ तँ आब परदेशी भेलहक किने।”

हम कहलयैन-

"नै बौआ काका, से बात नै छइ। हम तँ अहींसँ भेँट करैले औना रहल छेलौं। कनी बेर-बिहान होइते तँ अहाँसँ भेँट करितौं। अहाँ पहिने हाथ-मुँह धोइ लिअ तखन भरि पोख गप करब।"

बौआ काका बजला-

"हँ हँ दुइये तीन घुस्सा देबाक अछि दाँत की मासज, हँ बरू जिबिया करब तँ सोभाविके अछि।"

बौआ काका चारि-बेर ओइ दतमैनकेँ एमहर-सँ-ओहमर ठोकरा जकाँ लाड़ि-चाड़ि दू फाँक चीरि जेना चास केलापर चौकी देल जाइ छै तहिना जिबियासँ जीकेँ चौकिया लेलैन। पछाइत कलपर जा हाथ-मुँह धोइ कुकुर-आचमैन कऽ थरथराइत घूर लग आबि पुन: बैस जाइ छैथ।

घूर लग बैसते ओ पुछलैन-

"मास्टर, असगरे एलौं आकि कनियोँ?"

हम कहलयैन-

"हँ काका, ओहो एली हेन।"

बौआ काका लगले बाजि कहलैन-

"तखन कनियाँकेँ कहुन गऽ महींसक अगब दूधमे गुड़बला चाह तेजपात दऽ बनबैले।"

कहलयैन-

"हँ काका, निश्तुकी हेतइ।"

बौआ काका पुछै छैथ-

"मास्टर, और हाल-चाल सुनाबह। केना कि हाल-चाल छै देश-कोश आ अर-इलाकाकेँ। केतए केना कि भऽ रहल छै?"

हुनका बातक हस्तक्षेप करैत हम पुछलयैन-

"बौआ काका, एकटा बात कहू जे रातिखन अहाँकेँ भोजमे नै देखलौं। अहाँ तँ बुच्ची बाबक लंगोटिया संगी रहिऐन। मुदा हुनकर श्राधमे अहाँक अनुपस्थिति? ई तँ चर्चाक विषय बनल छल। लोक सभ बजै छला जे जैबारक भोज, तहूमे बुच्ची बाबूक श्राधक आ तइमे बौआ कक्काक अनुपस्थिति, ई तँ बड़ आश्चर्य।"

बौआ काका बातकेँ कटैत बजला-

"हौ मास्टर, आब तँ भोज-भात खेबाक इच्छे ने रहैए। तहूमे एक तँ अन्हरिया राति, दोसर जाड़ मास, तेसर महार टोलपर एते दूर जाएब। ऐ अवस्थामे हमरा लऽ सम्भव नै अछि।"

हम कहलयैन-

"बौआ काका, मुदा सौंसे गाम तँ दोसरे उड़ेबा उड़ल अछि।"

"से की हौ?"

बौआ काका अकचकाइत पुन: बजला-

"कनी फरिछा कऽ कहए ने?"

कहलयैन-

"लोक सभ बजै छला जे बुच्ची बाबूक श्राधमे जखन कोनो बातक कनी नै तखन बौआ काका आखिर किए ने एला।"

बजला-

"ओह, आब छोड़ह ने ओ गप-सप्प।"

कहलयैन-

"छोड़ू किए? आब एकटा बात अहाँ बताउ जे लोक सभ आहाँकेँ खाधूर किए कहैए?"

ई गप सुनिते बौआ कक्काक ब्लडपेसर जेना बढ़ि गेलैन। जोशमे आबैत बजला-

> “हौ मास्टर, ऐ संसारमे दू तरहक लोक अछि। एकटा जे जीबैले खाइए आ दोसर जे खाइले जीबैए। हमरा हिसाबसँ जे जीबैले खाइ छैथ हुनका तँ जीबाक कोनो अधिकारे ने छैन। ऐ दुनियाँमे एक-सँ-एक पैघ लोक सभ छैथ। जे भगवानक बनौल दिव्य पदार्थ जँ ओ पेबे ने करता तँ ऐ तरहेँ जीअबसँ मरबे नीक। हम जे चारि कर भोजन करै छी तँ लोक हमरा खाधूर करैए।”

बातकेँ आगू बढ़बैत काका पुन: बजला-

“हमरा हिसाबसँ ने तँ आब ओ देवी रहली आ ने कराह। नै मानबह तँ सुनह। हमर एकटा अपेछित छैथ धनीबाबू बेस पाँच हाथ नमगर। मुदा पेटक नापक मोताबिक हाथ-पएर झुझुआन भऽ जाइ छैन। इलाकामे जे केतौ भोज-भातक ओयोजन होइए तँ हुनका नौत अबस्से भेटै छैन। संजोगसँ हुनका एकबेर गामेक विद्यालयक मास्टर साहैबक बच्चियाक बिआहमे नौत पड़लैन। तीन-बजिये गाड़ीसँ ओ दीप पहुँचला। हाथ-पएर धोइते सभसँ पहिने एगारह गिलास शर्बत चढ़ौलैन। जलखैक पैकेट अबिते लगातार पाँचटा शेष केला पछाइत अल्प विराम देलखिन। भोजनक समैमे करीब पाँच दर्जन पुरी जेकरा कचौरी कहै छहक से आ संगमे एक पसेरीक लगभग तरकारी चढ़ेलखिन। तैपर सँ कनी जल पीब मधूरक दौड़मे एला। एक चंगेरा लड्डूकेँ तह लगा करीब डेढ़ सए छेनापर कौमा लगेलैन। गोर पचासे लालमोहन देलापर दहीक जखन बेर भेलै तँ गमछा जाँघसँ लऽ कऽ कण्ठ धरि पसारि दू कसतारा दही निछोह घिचला बाद पाहि लगबैत मास्टर साहैबकेँ हाक देलखिन, की यौ मास्टर साहैब ऐ छुरछुरहा पानिबला देहीसँ की हेतइ। कनी अपनेसँ डेबि ढंगगर दही उठाउ ने। लाजे मास्टर साहैब करता की। आँगन जा डाल परहक दहीबला तौला उठा धनीबाबूक पातपर रसे-रसे उझलए लगला। जाधैर

तौल भरि दही खतम नै भऽ गेल ताधैर अपन थुथुन ऊपर नै केलैन। दही खतम होइते ओ एकटा नमहर साँस लेलैन।"

हम कहलयैन-

"काका, यौ धनीबाबू तँ बेजोर लोक छैथ?"

बौआ काका बजला-

"से की कहै छहक मास्टर। अपने लकसेनाबला पाहुन प्रोफेसर साहैब ओ जखन अपन सारक बिआहमे सेरसोपाही बरियाती गेल छला, संजोगसँ आल्लू-परोड़क तरकारी हुनका रूचिपर चढ़ि गेलैन। से जलखै करै काल चूड़ा-दहीक संग तरकारीपर कनी भड़ दऽ देलखिन से ओ तखने पूर्ण बिराम लगेलखिन जखन घरवारी कलजोड़ि आगूमे ठाढ़ भेलैन। पुरैनक पातक दहिना कात अल्लूक खोंइचाक ढेरी बुझू जे पुआरक टाल जकाँ भऽ गेल रहइ। एतबे नहि, भखरौलीए-क गप लएह भखरौलीमे एकटा गुंजन महतो अछि, एतेक कलेबर जे हुनका किरपासँ कोनो भोजमे कोनो वस्तुक भण्डार कखन सठि जाएत से कहब मोसकिल। एकबेर रामदेव बाबूक बेटाक बिआहमे ओ बरूआरा बरियाती गेल छला, मरजादी होइ छै ने, तहीबेर मे ओकर धियान बरी-झोरीपर चलि गेलै से ताधैर ओ बरी-झोरी सुरकैत रहल जाधैर दसो बाल्टीन ओरा नै गेलै आ अन्तमे बेटीबला आबि कऽ माफी नै मंगलकै।"

हम कहलयैन-

"धैन छी बौआ काका अहाँ आ अहाँक संगी सभ।"

बौआ काका चाह पीब पनबटीसँ तीनटा पान निकालि मुँहमे लैत गलियबैत बजला-

"हौ मास्टर, लोक तँ एकपर एक छै ऐ दुनियाँमे। मुदा नामी चोर बहदुरबा। बगलमे लक्ष्मी भाइक गप लैह ने ओ जखन भोज-भातमे बैसता तँ धूर भरिमे पात बिछबै छैथ चूड़ा जलसँ भिजाएब तँ एकदम

निसिद बुझै छैथ जौं कोनो भोज-भातमे कोहा भरि दहीसँ कम भेलैन तँ वारीककेँ तँ मौगैत बुझह। स्पष्ट कहि दइ छथिन जे जँ उपए नै छह तँ नत किए देलह। बगलेमे हरिभंगेक गप लैह, अपने मनेजर साहैबक जे कनियाँ छथिन। हुनका तँ थारी-बाटीमे पेटे ने भरै छैन। जँ खाए लगती तँ गोर दसे मक्केक रोटी देख लइ छथिन। केरा तँ आरो हुनका चसगर छैन। ओहोमे झुरकुटिया नै बाघनर चारि घौरसँ ऊपर चाही। तरकारीए तँ लोहियो भरि। पाइने जँ पीती तँ डोल भरि। जँ चाहै पीती तँ कपमे नै इसटिलिया नमहरका गिलासमे। हौ मास्टर आब केते कहबह। हमरे एकटा महापात्र संगी छैथ देबही टोलमे। दू पसेरी धानक चूड़ा चारि तौला दहीक संग दू सेर चीन्नी आसेर अचार आ पाभरि मिरचाय ई तँ एकदम सहज। ऊपरसँ कमसँ कम दू मेलक तरकारी एते तँ बुझहक आवश्यक छैन। घरोमे लोक हुनका 'बीस रोटिये' भैया कहै छैन। सरो कुटुमैतीमे ओ खाधूरे नाओंसँ जानल जाइ छैथ। हमर कोन कथा एकसँ एक लोक छैथ खाधूर।"

तात् घूरोक ताव कम भऽ गेल। उठि दुनू गोरे विदा भेलौं।



शब्द संख्या : 1115

कर्मक भोग

कोनारिमे एकटा पहुँचल महात्मा रहै छला। तेलियामसान सधने छला। तँए भूत-वर्तमान आ भविसक नीक ज्ञाता। महात्मा भेने चेला-चाटी सेहो नीके मुड़ने छला। समए पाबि चेला-चाटीसँ सेवा-सत्कार करा अपनाकेँ धन्य बुझै छला।

एक दिनक बात छी। सौंसे देहमे भष्म रमौने, दाढ़ी बढ़ौने, नमहर-नमहर जटा लटकौने, एक हाथमे त्रिशूल आ दोसर हाथमे कमण्डल-झोरा-चिमटा आदि लऽ विदा भेला। थोड़ेक दूर निकलला पछाइत महात्माजीकेँ चीलम पीबैक इच्छा भेलैन। एकटा पाखड़ी गाछतर छाहैरमे आसन जमा चेलाकेँ कहलखिन- “रे चेला रमादास, हमरा चीलम पीबैक तीव्र इच्छा भऽ गेलौं तँए केतौसँ आगि ला?”

महात्माजीक आदेश पाबि रामदास आगि लाबए, बगलेक टोलपर गेल। एकटा आँगन जा देखलक जे एकटा कनियाँ भानस कऽ रहल अछि। ओकरा बगलेमे एकटा खस्सी बान्हल छइ। कनियाँ जे कोनो काजै घर जाए लगए तँ एक ऐंड़ ओइ खस्सी लगा दइ तैपर खस्सी भेमिअए उठै। रामदास एकबेर देखलक दोसरबेर देखलक, ओकरा किछु फुरबे ने करै। आगि की मांगत। सोझहे आपस भऽ महात्माजी लग पहुँचल। आ सभटा खेरहा सुनबैत कहलक-

"सुनि लैह बाबा, तों हमरा सभटा कारण खोलि कऽ पहिने कहि दैह जे ओ कनियाँ किए एना करै छै तब तूँ हमरा बाबा आ हम तोहर चेला नै तँ आइसँ तहूँ घर आ हमहूँ घर।"

बाबा कहलखिन- "रे चेला, पहिने आगि तँ ला। चीलम पीब बुझा देबौ।"

मुदा चेला एक्केरट पकड़ने। से नै तँ तूँ हमरा पहिने सभ खेरहा कहह।

रामदासक बहुत जिद्द केलापर मजबूर भऽ बाबाकेँ सभटा कहए पड़लैन-

"सुन रे चेला, एकटा राजाक बेटाकेँ एकटा लौआबासँ दोस्ती छल। एक दिन ओकरा मन भेलै जे बहुत दिन भऽ गेल सासुर गेना। से नै तँ सासुरसँ भऽ आबी। राजाक बेटा माएकेँ अपन बात कहलक। माए सभ कथुक बेवस्था कऽ देलकै। ओ सासुर विदा भऽ गेल। बाटेमे ओ लौआबासँ भेँट भऽ गेल। ओ पुछलकै- केतए जा रहल छी दोस? ई कहलकै- हम तँ सासुर जा रहल छी। ओ कहलकै- हमहूँ अहाँक संग जाएब। दोस अहूँ केहेन छी ई कोन बड़का भाड़ी बात भेलै चलू संगे चलै छी। दोस, सासुर तँ हम जाएब मुदा हमर एकटा शर्त अछि, रानी लग पहिल राति हमहीं जाएब? आब तँ राजाक बेटा लचार भऽ गेल। मुदा दोस्तीबला बात, करत तँ करत की। अंतमे दुनू दोस विदा भऽ गेल। जाइत-जाइत मुनहारि साँझमे पहुँचल। महलमे खबर भेलइ। सभ नौरी आ दासी सकालेसँ सेवामे जुटि गेलइ। बड़-बढ़ियाँ आगत-सुआगत भेल मुदा सुतै काल..?

..एमहर रानी देखलक, राजा-बेटा तँ अपना संग एकटा पच्चर नेने आएल अछि। तँए एकर परीक्षा ली। रानी सोल्हो सिंगार बत्तीसो आवरण कऽ अपना महलमे जाइसँ पहिने माएकेँ कहि गेल जे दूटा पहलवान हमरा महलक गेटपर तैयार रहए, जखन जे कहबै से करत। भोजनक बादेसँ

लौआबा मोँछपर ताव दैत रहए। आब रानीक महल दिस विदा भेल। जखन ओ गेटपर पहुँचल तँ दुनू पहलमान रोकि देलकै जे के छी, कहलकै हम तँ राजाबेटा छी। आगू बढ़ि रानीक महलक दरबाजा खटखटौलक, भीतरसँ अवाज एलै, अहाँ के? कहलकै- हम राजाक बेटा। रानीकेँ शंका भेलइ। पुछलक- अच्छा कहू तँ हमर कोन छातीपर तीलक निशान अछि? बिनु सोचनै-विचारने लौआबा बाजल- दहिना छातीपर। रानी बुझि गेल जे ई लौआबा छी। रानी मोख लग ठाढ़ दुनू सिपाहीकेँ आदेश देलक, अहाँ दुनू गोरे मिलि हिनका बढ़ियाँसँ सुआगत कऽ दिअनु। रानीक आदेश पबिते दुनू पहलवान ओकरा पकैड़ थुड़ि-थाड़ि देलक। लौआबा कोनो भाँजे दलानपर आएल। मुदा ओतएसँ भागल नै दलानेपर रहल, ई सोचि जे जखने मौका लगत बदला लेब।

पछाइत सभटा हाल राजाबेटाकेँ कहलक। ओ तँ सुनिते खुशी भऽ गेल। आब स्वयं रानीक महल दिस विदा भेल। गेटपर पहुँचल। सिपाही रोकैत पुछलक उतारा दैत गेट ढकढकौलक। रानी भितरेसँ पुछलकै- अहाँ के? कहलकै- हम राजाक बेटा। फेर पुछलकै- अच्छा अहाँ ई बताउ जे हमरा कोन छातीपर तीलक निशान अछि? ओ बाजल- अहाँक बामा छातीपर। सुनि रानी खिलखिलाइत दरबाजा खोललक। आ दुनू परानी ऐश-मौज करए लगल।

...से रौ चेला, तूँ जे ओ खस्सी देखलीही से ओहए लौआबा छी। जे ऐ ताकमे अछि जे ओइ जनम तँ नै मुदा ऐ जनममे रानीसँ कोन रूपे बदला ली। आ ओ लड़की वएह रानी छी जे घर जाइत-अबैत ऐंड़ लगा दइ छइ। जे ओइ लौआबाक किरदानीपर। आ ओ भेमिअए लगैए। से रौ चेला, बुझलिही। इएह छिऐ ओकर कर्मक भोग चल आब आगू चल। आगि तँ नहियेँ लबलैं।”

चल बढ़ कहैत बाबा-चेला विदा भेल।



शब्द संख्या : 668

प्रदूषण

आजुक भैतिकवादी युगमे विभिन्न प्रकारक संसाधनादिक उपभोगसँ मानव जीवन त्रस्त अइ। केतौ मिनटो भरिक लेल चैन नहि। बढ़ैत जनसंख्या, गाड़ी-घोड़ा, रिक्शा-तांगा, जर-जनरेटरक अवाजसँ कान बहीर! शान्तिपूर्ण ढंगसँ कम मीठ अवाजमे बाजब, स्वच्छ हवा लेब कठिन! फलस्वरूप नाना प्रकारक रोग-वियाधिक साम्राज्य पसरल अछि। घरे-घर नेना-भुटका सभ कोनो-ने-कोनो प्रकारक रोग-वियाधिसँ ग्रसित अछि। तात्पर्य, सुखक लेल एतेक संसाधन होइतो कियो सुख-चैनसँ जीब नै रहल छैथ।

दोसर दिस सहोदर होइतो सहोदराक संग भैयारी नै निभा दुश्मनी राखब, प्रेमसँ नै रहि झग्गर-झाटीमे फसि जाएब। ने सुखसँ अपने रहब आ ने दोसरकेँ रहए देब।

रोगहु पुछलक मोल्हुसँ-

> "भाय, तोँ तँ पढ़ल लिखल लोक छह। एकटा बात कहह औझका मनुखमे एतेक अलगाउ किएक?"

मोल्हु बाजला-

> "से नै बुझहक, ऐ सबहक जड़ि बाहरी प्रदूषण नहि, अपितु मनुखक भितरी प्रदूषण छी।"



शब्द संख्या : 123